

विप्लव पुस्तक माला--२७

203 1

_{देव पुरस्कार प्राप्त} चित्र का शीर्षक

(छोटो और बड़ी चौदह समस्यामूलक कहानियां)

5° 5° 5° 5

421410

(चतुर्वं सरकरत्)

प्रस्ताक विष्तय कार्यातय, २९ शिवाजी मार्ग, संदानक

अगस्त १९६२

्ठोन राया

प्रकाशक — विप्लव कार्यालय ल ख न ऊ

			:::		**********	***			:::::::		
पुस्तक	के	प्रकाश	न	और	अनुवाद	के	सर्वाधिकार	लेखक	द्वारा	स्वरक्षित	हैं ।
	••••		••••	•••••				•••••		*****************	:::::

मुद्रक :--साथी प्रेस ल ख न ऊ

EOTE VARET

समर्पण

कहानी को जीवन की समस्याओं के सुलझाव का साधन बनाने वाले आदिम कलाकारों को मैं अपनी यह नयी छोटी-बड़ी तेरह कहानियां समपित करता हं।

421410

प्रसंग-क्रम

१-चित्र का शीपंक २-हाय राम !ये वच्ने !! ३--आदमी या पैसा ? ४-प्रधान मन्त्री से भेंट ५-मार का मोल ६-शहनशाह का न्याय ७-स्थायी नशा ५-एक सिगरेट ९-फुल की चोरी १०-अनुभव की पुस्तक ११--पांव तले की डाल १२-साह और चोर १३-इसी सुराज के लिये ?

भूमिका

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा द्वारा प्रकामित एक कहानी-सग्रह की भूमिका में कहानी के प्रयोजन के सम्बन्ध में विवेचना की गई है। इस प्रसंग में गुरुदेव रसीन्द्र के एक उद्धरण के आधार पर मत्तव्य प्रकट किया गया है कि कहानी का उद्देश्य केवल कहानी हैं, कहानी लेखक कहानी सिखता मा स्वान साहता है इसीचिये कहानी किया है। कहानी लियने या सुनने से या कहानी सुनने था पड़ने से जो सनीय होता है, वही कहानी का आयोपान्त उद्देश्य और संस्थ है, जन्म कहा नहीं।

बेटी की मुना कर बहु को शीख देने के हेग से कहानी के सम्बग्ध में
गुरुदेव के यह विचार निद्द्य ही द्विची शाद के उन मीसिसिंद प्रगतिवाधी
सेखकों को मुनासे गये हैं जो कहानी या साहत्य को सामाजिक उद्योगन और
समाज को खादिक, सोस्ट्र्सिक और राजनैतिक समस्याओं के हुत का सामन
समाज बो खादिक, सोस्ट्र्सिक और राजनैतिक समस्याओं के हुत का सास्य
समाज बो खादिक, सोस्ट्र्सिक और राजनैतिक समस्याओं के हुत का सास्य
समाज बो खादिक है। गुरुदेव के समाज मानवात से आसीयता स्थारित कर सर्वने
वाले कलाकार की गवाही से कहानी का प्रयोगन कहार के लिये कला पर
कहानी से रत तेना ही सता देने के पदचात, नीसिसिंद प्रगतिवादी शेषक स्वात का सायद कुछ मून्य रह ही नहीं आता परन्तु यह सात भी भूता देने
भोमा नहीं कि गुरुदेव के बचन सभी लोगों के मुंद में या कर एक सा ही अर्थ
गही रत्व सकते। उदाहरणता गीता का उपदेश देते समय कृष्ण के यह साद
'वर्ष मार्गन् परितव्यय मोनेक सण्ण घर्ज (पर्म-अप्पर्ध और कर्तव्य-अक्तांव्य की
जवात में न पढ़ कर हू बख मेरी बात मान)। सभी के मुल से न दो उत्यरी
विरक्षालोगातक हो सकती है। न प्रभाषवालो।

अपने-अपने मानसिक विकास के दोत्र और सांस्कृतिक स्वर के अनुसार स्वर्ति के स्वान्त: सुख और सतीय का रूप बदसता रहता है। एक सुसरकृत स्वर्तिक सांसतीय की भावना से ही जन-करणा के तिवे प्राप्त दे देता है और दूसरा प्रोसी के पर सेंच संगाकर संतीय पाता माहता है प्या ऐसे दोनो स्वर्तियों के आस्वरीय की भावना पर एक समान मरेसा किया जा सकता है? ऐसे ही कहानी जिसने से भी सभी सेसक एक ही प्रकार के आस्तरीय ्राहरण प्रश्निक विदेश है। जिल्ला के स्वाहरण प्रश्निक विदेश है। जिल्ला के स्वाहरण प्रश्निक के स्वाहरण प्रिक के स्वाहरण प्रश्निक के स्वाहरण प्रिक के स्वाहरण प्रिक के स्वाहरण प्रश्निक के स्वाहरण प्रश्निक के स्वाहरण प्रिक के स्वा

स्तर के प्रति के स्वर्थित की स्वर्थित करा कारणाल कर प्रति व व वस्त प्रति है। इस है जो स्वर्थित के स्वर्थित स्वर्थित करा कारणाल कर प्रति व व वस्त प्रति है। ्रात है है। जानाबी के जानाबी महानी कर महिला अन्त है । शुक्र लावड़ हैं भी है। इस है जानाबी के जानाबी के महाने कर महिला अन्त हैं । शुक्र लावड़ हैं भी ता है। अनुद्र पर पत्र विवादात्वद न स्थाद द्वाना कि जनमी से स्य े _{पुल्क क}र भड़ामा भीता या पारत दर बहानों व पाल ब लेखन और अंतरहर े थी। बोलूटन और उत्पादित सादह पर ना व सभी ने गाम के और तर्वाति में मा पान के वन्ति। को के प्रतिकाथ वन्त्रन कर करानी ह रम पाता है। पाटक के पोहतद, उपहुर्ता, मधानुभूति और विभेष का अधार कामी द्वारा करानी की समस्या के अध्योधका अनुभार काना ही है। वहानीकार की पहानी मुनाने की इस्ताह को को बाएको या थोपाओं में मामाजिक मध्यस्य के अधार पर आयस्पारवागुक्त कल्पातिक निक्षी जारा अनुभूति के और तिनारों के अध्यन-प्रदान का अध्यर पाना ही है। इस सामाजिक नियं से कथातार और श्रीता दीनों की ही अनुभूतिमध्य भारमीयना होना आवस्यक है । यदि यदानी में रन मिलने और गहानी बहने की इच्छा के सम्बन्ध में उपरोक्त गलाय को अक्षतः भी स्वीकार क्या जा गढ़ता है ती कहानी मूलतः एक सामाजिक तस्तु हो जाती है और उसे केवल व्यक्तिपत िती । का साधन कह कर छोड़ देना, कहानी के मूल सत्त से इनकार कर त्ना होगा ।

कहानी को एक सामाजिक मूत्र मान कर हम कहानी के प्रयोजन और कथाकार के सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा किस प्रकार कर सकते हैं? इस सामाजिक सूत्र का एक छोर कथाकार है, दूसरा श्रोता । इन के अस्तित्व को मुसाकर बहानी को केवल कथाहार के आरमगतोग का ही साधन की मान निया जा तकना है है हा, यदि करानी के रूप में मामाजिहर प्रथमा के विवेषन भीर चिन्ता को हम बोल के रूप में अनुभव नहीं करते तो उसे हम करानी करात की तर्यक्रमा अवस्य ममात करने हैं। कहानी को निरम्य ही अपिनक और बोमान नहीं होना चाहिये परनु कहानी का उद्देश क्या बरानी ही यता देना, कहानी को निप्तयोजन और निक्द्रिय बना देना होगा। हमें मान नेना होगा। हम बहानी के सीता या पाठक पर कोई भी प्रभाव पहने की आसा करी करते.

यदि बहुति की सफलना की कमोटी पाटक या श्रीता पर पढ़ने वाले प्रमाय को माना जाय तो बहुति में पड़ने वाले प्रभाव के प्रति सतके रहना भी सामाजिक कर्तेष्य हो जाना है। कहानी निफ्फ्त और प्रभावपूर्य कर्मा हुई है, न हो ही सकती है। कहानी में पड़ने याले प्रभाव ही उतका प्रभाजन और उद्देश हैं। हम रहा प्रभाजन या उद्देश के प्रति सचेत हो या न हो।

बहानी द्वारा पराणागत आव्यताओं के समर्थन को कना का स्थान: मुख बना देना और कना के आध्यम से नवीन विचारी का परिचय देने के प्रमान को बना ना पुराशोग बना देना, कता को एक विभीप विचार-धारा की बेरी बनाये रुपने का ही प्रमान है। बनवाद के इस गुम में कता पर युकापितार की यह अनुसि कीम महन की ना सनती है?

ज्न, १९५२

या स्वान्तः सुख की चेप्टा नहीं करते । उदाहरण के लिये गुरुदेव रवीन्द्र की किवताओं से एक पंजाबी लोकगीत 'तूम्बा वजदाई ना' की तुलना करना पर्याप्त होगा । निश्चय ही 'तूम्बा वजदाई ना' के गायक ने अपने गीत में एक स्वान्तः सुख प्राप्त किया होगा जैसे कि गुरुदेव अपनी किवताओं या गीतों में करते थे परन्तु 'तूम्बा वजदाई ना' की स्वान्तः सुख की अनुभूति समाज द्वारा स्वीकृत नैतिकता के लिये इतनी असह्य थी कि सरकारी आज्ञा से उसका सार्वजनिक रूप से गाया जाना निषिद्ध ठहराना आवश्यक समझा गया और गुरुदेव के गीत को राष्ट्रीय गीत का स्थान देने से जनता को संतोप हुआ।

महापुरुपों के वचनों के लिये प्राय: ही टीका और भाष्य की आवश्यकता होती है इसलिये गुरुदेव की वात को समझने का प्रयत्न करना घृष्टता न समझी जानी चाहिये। हमारे सामने दो मीलिक प्रश्न हैं। एक-कहानी से रस क्यों मिलता है ? दूसरा-कहानीकार को कहानी सुनाने की इच्छा ही क्यों होती है ? शायद यह उत्तर विवादास्पद न समझा जायगा कि कहानी से रस मिलने का कारण श्रोता या पाठक का कहानी के पात्र के जीवन और व्यवहार के प्रति कीतूहल और उत्सुकता है। पाठक या तो कहानी के पात्र के प्रति सहानुभूति से या पात्र के अनुचित कार्य के प्रति विरोध अनुभव कर कहानी में रस पाता है। पाठक के कौतूहल, उत्सुकता, सहानुभूति और विरोध का आधार कहानी द्वारा कहानी की समस्या से आत्मीयता अनुभव करना ही है। कहानीकार की कहानी सुनाने की इच्छा का स्रोत पाठकों या श्रोताओं से सामाजिक सम्बन्ध के आधार पर आवश्यकतानुकूल काल्पनिक चित्रों द्वारा अनुभूति के और विचारों के आदान-प्रदान का अवसर पाना ही है। इस सामाजिक चित्र से कथाकार और श्रोता दोनों की ही अनुभूतिगम्य आत्मीयता होना आवश्यक है। यदि कहानी से रस मिलने और कहानी कहने की इच्छा के सम्बन्ध में उपरोक्त मन्तव्य को अंशतः भी स्वीकार किया जा सकता है तो कहानी मूलतः एक सामाजिक वस्तु हो जाती है और उसे केवल व्यक्तिगत संतोष का साधन कह कर छोड़ देना, कहानी के मूल तत्व से इन्कार कर देना होगा।

कहानी को एक सामाजिक सूत्र मान कर हम कहानी के प्रयोजन और कथाकार के सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा किस प्रकार कर सकते हैं? इस सामाजिक सूत्र का एक छोर कथाकार है, दूसरा श्रोता। इन के अस्तित्व

वित्र का शीर्षक

अवराज जाला-माना नियंत्रार था। यह उम वर्ष अपने विषां। की प्रकृति क्षेर आंक्षन ने यमार्थ में गलीय क्या मक्ते के चित्र, अर्थीय के आरक्षम है। रार्नानेष जा बेटा था। उन पहीनों पहाड़ी में बागावरण गृव गाम जोर बाराता मीला रहना है। रार्नानेण में 'नियुन्त', 'पचनोत्ती' और 'चौतम्मा' की वरणानी चीटिया, नीच आकता के नीचे माणिया के उन्ध्रत स्तूरों जेशी जान पत्रमें है। आरात की गहरी मीलिया से बच्चना होनी कि पहारा मीला ममुद्र अरथ पड़ कर एत की नगहरी मीलिया से बच्चना होनी कि पहारा मीला ममुद्र अरथ पड़ कर एत की नगहर विषय हो पया हो और सनका चैनन केन, सहुद्र के विषय हो। अरे सामित्रों और मिलायों को ममेट कर बैट ना वेर नीचे पहाड़ों पर आ

जबराज में इन बुरगों के दुार विष बनाये परन्तु मन न भरा। मनुष्ट के मनमें में हीन यह पान बनाइन्द एने ऐमा ही अनुष्य ही रहा था जैने निमंत्र पियाबान में माने राग का बिज बना दिया है। यह विष्य जैन निमंत्र में नियाबन में नियाबन में माने राग का बिज बना दिया है। यह विषय ने मुद्द माने महत्य में पात और अनुमत्र में स्वयं में तहा हों पर पानियों की ताज़ फैने हुये में तो में समीय न हुआ। फना की राग स्वयं स्वयं है स्वयं में यह तहा हों पर पानियों की ताज़ फैने हुये में तो में समीय न हुआ। फना की राग स्वयं स्वयं तो समने हुया में एक हाथ, होय वा साथी अनुभव हो रहा था। यह अपने स्वयं और पात की मान प्रकट नहीं कर या रहा था।

नपगन अपने मन की तहन की वकट कर राजने के निये व्याकुन था। बह मुद्दी पर डोड़ी हिकाये बराप्टे में वेडा था। उसरी दृष्टि दूर-दूर तक कैसे, हरी मार्टियों पर मेंद रही थी। पारियों के उनारो-कहानों पर सुसुद्दी पूर्व सेख इसी थी। महराप्यों में चारी की देशा जैसी निर्देश दुम्हित्यां कीस पही थी। दूर के कैम जैसी चीटिया दाड़ी थी। कोई सदय न गाकर उसकी दृष्टि अस्पट



यो. आयो से बुद्धि को शयन । जनसकते यह को निर्माह गर एक और दश रिया और दिन मामने माडी के जिल्हार वर विरहेरय नवर किये गोधने समा---क्या उत्तर है ?

क्षप्रसुक्त को निक्तुराव क्षण्टि की भाड़ी के किस्तार, पर तैर रही, भी परन्तु बन्दरा में अनुभव वह रहा या कि उपने समीप ही दूसरी भाराम पूर्णी पर मीता देंदी है। बह भी दूर बाटी से बुद्द देन रही है या विसी पुस्तर के पारी या असरार में दृष्टि यहारे हैं । नवीत बैटी युवनी नारी की कमाना अपराज को इस के पेन के गमान व्येष, स्ट्रांट्स के गमान उत्प्रवर पहाड़ की बरणागी बोटी में वहीं अधिक नगरन उत्तर बाने बामी जान पढ़ी। गुनरी के नेगी बौर शरीर से बाली जनकर में। मुखन, बायु के झोरों के नाल पाटियों में आती गंगरी और निरीम के जुला की भीती गय में अधिक संशोध दे रही थी। यह अपनी बन्पना में देशने सदा-नीता उनकी सांगी के मामने घाटी की एए गराही पर वहनी बा वही है। कहें पायरों और करहों के उत्तर मीता की मुपाबी एडिया, मैन्डल से सम्प्रती हुई है । बह लड़ाई में साड़ी को हाम से गम्मान है । उस की विवस्तियां केने के भीतर के दशन के रंग की है, नवाई के थम ने बारण मीना की मांग पड़ गई है और प्रण्येक गांस के साथ उसरा सीना उठ बाने ने नारण, नमल की प्रस्तृहनोम्मूल कर्मा की तरह आने आवरण की पाइ देना चाहना है। बल्पना करने समा-वह बैजनेस के सामने सदा बित्र यना रहा है। मीता एक बमरे में निवासी है। आहर में उपने बाम में बिस्त में दालने के नियं पत्रों के अप उनके गीड़ ने होती हुई दूवरे वचरे ने बची जा रही है। मीना किमी बाम से मीक्ट को पुकार गई। है। उस आवाज से उसके हृदय का गांच गांच बण्या मूनापन गन्नीय में बग यदा है " प

वयरात्र ने संक्षिण-सा उत्तर निमा- " "भीइ-भाइ से बनने 🕏 निये

बत्य पूरा ही बंगला तिया है। बहुत सी जगह साली पड़ी है। सबलेट पा गोर्ट गवाल नहीं। पुराना नीकर पास है। बदि नीता जी उस पर देगलेग रहोंगी तो मेरा ही लाभ होगा। बब मुदिधा हो आकर उन्हें छोड़ जाओं। प्रिने के समय की स्वता देना। मोटर स्टैक्ट पर मिल जाऊंगा......

ार्ति । इस ने पोस्प तर जनार भाषा—! । नामीण को भीषा ने विते र रिस पुर पार रिधार्व से माई है । जम दिन प्राईती ई में केवी जा की की कि ज राज है । एक समें नहिंदा है जोश महाति हो प्राइती है । मैं नित्त की की जा की दिला महात्र । इस में सम नह जम दिनमें माझे में प्रमह सुर्वति । जा की दिला महात्र के एक देनमें पुर आने ने नित्र करा मन हुए जा की की दिला महादिश की दोनों । हुए सीसे

"मैं जयराज हो।"

महिला ने मुस्कराने का यत्न किया-"मैं नीता हू ।"

सहिता की बह भुकान ऐसी थी। जैसे पीड़ा की दबा कर कर्सावा पूरा किया गया हो। महिता के साधारणत डुकने हाय-गावों पर स्वनमा एक गरीर करा बोग दिर पर संघ जाने के कारण उसे मोटर से उत्तरने में भी करद हों गरी। गा। किरारे जाते अपने सारीर को सम्भातने में उसे वैमी ही बसुविधा हो रहीं थी जैसे सकर से जिल्ला के जब्द टूट जाने पर उसे सम्भातना करित्न हो जाता है। महिता सबझती हुई कुछ हो क्यम चल पायी कि जयराम ने एक डाड़ी (जोती) को पूकार जसे चार आदिस्ति के करी पर सहबा दिया। सीजम्म के गांते उसे जाड़ी के साथ चलना चाहिये या परनु उस विधिवत और विकथ साकृति के समीर एक्ट्रों से जयराज को उसकाई और म्लानि समुद्ध हो रही थी।

मीता बनले पर पहुंच कर एक अलग कमरे में पत्तर्य पर लेट गई। जयराज के कारों में उस कमरे से जिरकर 'काइ! ऊंड़!' की दमी कराहट पहुंच रही मी। उनने दोनों कानों में उंगलिया दया कर कराहट मुनने से यचना माहा पर्यकु दमें सरीर के रोम-रोम से यह कराहट मुनाई दे रही थी। यह मीता की विक्य आहरिन, रोग और ओहा से लिबिन, लयका-चपदा कर चलते सरीर को अपनी स्मृति के पट से पोछ जानना चाहता था परन्तु वह सरसस आ कर उसके सामने राजा हो जाता। जीवा जयराज को उस मदान के दूरे बातावरण में समा गई अनुमंत्र हो रही थी। जयराज का यह यह रहा था—बंगने से की

बुधरे दिन गुबह मूर्य की प्रथम किरणें मरामदे में जा रही थी। युवह की हुआ मुक्ति थी। अपराज नीता के कमरे ते दूर, बरावे में आराम- हुआ में कुछ मुक्ति थी। अपराज नीता के कमरे ते दूर, बरावे में आराम- हुआं पर वेंद्र तथा। मीता भी समातार देटने से ऊब कर कुछ मारी हुआं तर के कि के कि पारी हुआं तर की कि मारी के तिये अपने पारीर की सम्मात, रामहाती-संगहाती बंदामदे में दूरते कुर्ती तर मार्चित के कि मारी के प्रतान की नमलगर कर हाल-पाल, दूर कर कहा—"मुद्री तो सायवर समर को कहावट या नमी जबह के नारण रात नीत नहीं या कही """।"

जतान के लिये बहां बैठे रहना आसम्बद्धी गया । वह उठ छहा हुआ और कुछ देर में मीटने की बात वह बंगने से निक्क गया । परेशासी में यह हार सड़क से उस सड़क पर मीजों पूमता हम सकट से मुक्ति कर उपाय सीचता भरा । स्ट्राबरण ए है एवं । स्मान धान चैंधा ली

राज भे प्रमान्दे जिल्ला प्रदेशनी है।

में प्राच्यान प्रदेश के एक त्या गाउँ

सहस्र कि का है कि अवस्य है का यह सार्थ की मह

इमी मामप वनस्मा जाना जन्मियो है। भवर वै दिया है। भोत र पटी भेरता द हा गर्ने ही महानार दे बह ६० है पर सोशान नो

के निर्दे आहर जा रूप है। मोच का है। याद गीता को दिस्तने के जिने दे दो और

वनास्य में प्रदेश हैं भी स्थानित में Er Person pelle upe du foi en agrava. Le finde fi un

तरह का भी करह व ती 🗥

मुद्रवस के प्रावश्यक जन्ने ने एक बीकर

वित्र का गीपैकी

14

देना चाहा परन्तु मन्निष्क में भरे हुवे नारी की विरूपना के यमार्थ ने उसका पीरा न छोड़ा। वह बनारम जीट आमा और अपने उत्तर किये गर्म अत्याचार ना बदला मेने के लिये रण और कूपी सेक्ट फैनवेस के मामने जा सड़ा हुआ।

जबराज ने एक चित्र बनाया, पतंत्र पर तेटी हुई नीता का। उमका पेट फूला हुआ था, बेहरे पर रोग का पीलापन, पीडा से फैली हुई ऑग्रं,

कराहट में सुन कर मुड़े हुये होठ, हाय-याब पीडा से ऐंठे हुये।

जयराज यह चित्र पूरा कर ही वहा था कि उसे सोम का यत्र मिला। सोम ने सपने पुत्र के नामकरण की सारील बता कर बहुत ही प्रवल अनुरोध किया था कि उस अवनर पर उसे अवस्य ही हेसाहावाद आना परेगा। जयराज ने मुसलाट में पड़ को मोड़ कर केंद्र दिया, किर जीवित्य के विचार से एक पीस्टकार्ट लिल झांबा—पायवाद, पुत्र कामना और स्थाई। आता तो जकर परण इस समय स्वय भेरी लीवित्य और नहीं। विद्य को आयोवीर ।

होम और तीजा को कपने सम्मानित और कृपालु मित्र का पीस्ट काई सिनार को मिला । दिनार वे दोनों सुबह की मादी से बनारस जबराज के मदान पर जा पहुंचे । नीकर उन्हें सीपे जबराज के जिल्ल बनाने के कपरे मे ही ने गया । वह गया जित्र सबसे आये जभी जित्र बनाने की टिकटिकों पर ही ने गया । वह गया जित्र सबसे आये जभी जिल्ल बनाने की टिकटिकों पर ही पड़ा हुना हुआ था। सोम और नीजा की आर्से उस जिल पर पड़ी और वहीं जम गई।

जबराज कपराध भी लज्जा से गंद्रा जा रहा था। बहुत देर तह उसे अपने अतिथियों की और देखने का साहम ही न हुआ और जब देया तो मीता गीद में क्लिपते बच्चे को एक हाथ से कठिनता से सम्माले, दूसरे हार से साही का आबता होटो पर रखे अपनी पुरुकराहर शियाने की पेरटा कर रही थी। उस की आमें पर्व और होंगी से तारों की तरह चमक रही थी। सज्जा और पुलक की मिनाबट से उसका नेहता विहुदी ही रहा था।

जयराज के सामने राज़ी नीता, राजीनेत में जीता को देखने से यहले और उसके सम्बन्ध में बनाई करपाओं से कही अधिक मुख्द थी। जयराज के मन को एक धवका नंगा—ओह, धोसा! और उसका मन फिर धोने की स्तानि से भर गया।

जयराज ने उस चित्र को नष्ट कर देने के लिये समीप पडी छुरी हाथ में उठा ती। उसी समय नीता का पुनक भरा शब्द मुनाई दिया—"इस चित्र का शीर्षक आप क्या रखेंगे ?"

जयराज का हाथ रुक गया। वह नीता के चेहरे पर गर्व और अभिमान के भाव को देखता स्तव्ध खडा था।

कलाकार को अपने इस बहुत ही उत्कृष्ट चित्र के लिये कोई शीर्पक न खोज सकते देख नीता ने अपने वालक को अभिमान से आगे वढ़ा, मुस्कराकर

सुझाया-"इस चित्र का शीर्षक रखिये 'सुजन की पीड़ा'!"



हाय राम !****ये बन्चे !!!

जोगी साहब और भीर साहब पत्रोगों हैं। पढ़ोश दोनों के निये अच्छा हैं। दोनों बड़े आदमी हैं। यो तो बाहाणों में जीवारी और मुगनमानों में सैस्य हुन के बड़फान कोर पविचता से ही बड़े होते हैं परनु वहीन जोती साहब और बाइट मीर लाहब विच बड़फान पर निर्मर नहीं करतें। जीशी साहब और बाइट मीर लाहब निवे के सिवत भर्मन। दोनों ही जवार विचार है और मौर साहब निवे के सिवत भर्मन। दोनों ही जवार विचार है। उन की साम्ब्राधिका केवत घर के भीतर रहांदियों हो उदार विचार है। उपने की साम्ब्राधिका है। वापने बच्चों के तिया मीरा दांदियों के पिन-भ्यंगी के विद्यारों के गण्डे बच्चों की सोहबर-मयत पतरद मही करने।

नीलू और नस्यू मनवसम्ब, सहचाडी और पडीसी होने के कारण सहेलिया भी बन गई है। दोनों नहीं मेन मेनली हैं जो हिन्दुस्तान भर की इस अबु मी राइकिया मेला करती हैं; युद्धियां का बेल। दोनों ने नकड़ी के खाली बस्सी में अपनी गुडियों के कान सताये हैं। ने अपनी गुडियों, को शाहितां करते उत्ते हैं । इन कर्ष हार भागा हमार का नात्रि श्रेती हैं । क्षेत्री के कर्ष अभिन्त हैं का राज कारण वन्त हुए हैं कर्ष के पासान में इस पाल के करे के कि कुछ एक क्षेत्र के पास इमके जन्म और मीपी मात पाल है । तर कुछ पूर्व क्षेत्र का प्रवाद पाल है है है है भी मात्र भीर नीपी पात कर्म पाल क्षेत्र कर का ले के पासी हैं जान की जभी कार्र गाया नेते हुई । प्रवान के हु पात्रों मात्र मात्र मात्राक पाने क्षेत्री की नाम पानी अभी जान मात्र मात्र का प्रवास क्षेत्र मात्री करती हैं।

हानत्य भीत जोते पहर पान महा चना जोर नहमू ने मान मीतु जोर हथा मी देश है जो मनी जो जान गहर यहा लिते है। पेन्या की दो दी विस्तृह जाने हात में इन ने मुह में देशर जान जाते हैं। पेना जो एहिसी का हात-पान पूछ लेते है। महिला ने हिसे चार पर ना देने का पानक नागत पर भूग जाते है। यहाँ जहाम में हमने निर्मान मोते हैं कि दोना पर्या में मानी उपह नामरें भीर परामदों में भना-भीत हो मनते रहते है।

नस्म की अम्मीकान सीने पटण पत्ने भीच नस्म की नाम्मा की पानी है।
यो मीत् तोर क्या की मान के एक्ट की कुछ देने की मन तो जाता है परन्तु
अपनी अमेर्ड में पत्नी नीज प्रकाश के बच्चों की की हाथ दिवस जाता है।
ये अपने हाल में बनावी चीज कीड भगनान या अन्ताह की बगाई पीज, जिस
में दिन्दू-मुनवमान की एक्ट का पर्वेद नजी होता, या नीई पत्न-या या नार्माने
का बना विर्मुट-दाफी जोकी सहस्य के बच्चों की ये देनी है। ऐसी पटिनाई
जोकी मात्र के पहों नहीं होनी नवीडि प्राच्चण अपने आपकी संमार के सब
मनुष्यों ने पतित्र समजने हैं। प्राह्मण के विचार में उस के हाथ की छुई हुई
जाती है।

शिक्षक ऐसी कि जब नीनू और जपा की मम्मी या दादी अपने बच्चों को काने के निये कोई चीज कामे की कटोरी या तरतरी में देती हैं तो यही चीज बच्चे या नस्तू को कांगे की कटोरी या तरतरी मां देती हैं तो यही चीज कांच या नस्तू को कांगे की कटोरी या तरनरी सामने रहने पर भी चीनी या कांच का बरनन हूंढ कर देनी पड़ती है। उनके निज्वास में कांसे का बरतन पवित्र और चीनी या कांच का बरतन अपवित्र होता है। यों भी कहा जा सकता है कि कांगे-पीतल का बत्तन हिन्दू होता है जो दूमरों की छूत से अपवित्र हो जाता है। कांच और चीनी के बतन अपवित्र ही होते हैं। नीनू की मम्मी

और दादी स्वयं सवा कंसि-गीतल के बरतमों का ही व्यवहार करती हैं, भीनी या शोधे के बरतमों का कभी नहीं। मुसनमान चाहे फिजना हो मुनदा या यह। आदमी हीं, उसके बच्चे चाहे फिजने ही चारी वर्गे, उन्हें अपने शाने के बरननों मैं मैं सिलाखा जा मकता है? मुसनमान या अप्टून को शानु के बरनन में तिता देने तर बरतन को गुढ़ करने के सिले आप में रचना जन्दी हो जाता है। तीजू की मन्त्री और दादी स्वयं कुछ साने-पीने से पहला के सिले बहुता हती हैं। साने-पीने की चीज पर मीच जाता मा मुगनमान की द्वार पड़ जाता है। साने-पीने की चीज पर मीच जाता मा मुगनमान की हत्वे वहना देती हैं। साने-पीने की चीज पर मीच जाता मा मुगनमान की हत्वे वहना देती हैं। साने-पीने की चीज पर मीच जाता में मुगनमान की हत्वे वहना देती हैं।

मीलू और ऊपा को बाबी और मा ने कई बार समजाया है—पाणली, रसोई सेलने भी जारह नहीं । '' रसोई और पुता की कोउरी में बन्ने और नस्तू को कभी नहीं लामा । इतना भी नहीं समजती तुम कि मुगल्लों को रसोई ओर

पूजा की कोठरी में नहीं लाते ?

बच्चे काफी तेत्री है आंगते और रामाने रामते है। बाते अभी पोच हो यर्ग का है परन्तु नस्तु काँहे नशी बात देखती है तो अपनी एतक फैना कर स्पिर औपते से सोचने समती है। तीन्तु आनी पुन्थित की सारी अपने पुन्हें के कई बार कर पुन्ही थी। उस दिन वह अपनी पुन्थित की सारी अपने पुन्हें के माथ करने के लिये नस्तु को त्योत कर साथ सिवा साई थी। दीमो समिन्ने यनने वाली थी। मों तो पुडिया की सारी और दालन का प्रवन्त सरावदे से ही था परन्तु दिनी चीत्र की जरुरत पड़ जाने गर दोनों साथ-साथ दीहरी रसीई में जा एडुषी।

मीलू की भी और बादी उस समय प्राप्त की चाय जोशी साहब के नियं उनके कमरे में भेज कर स्वय कीये के मिनायों में भी रही थी। दोनी सडिक्यों की रमोर्ट में पीत आने देख उन्होंने अपनी वाय नस्तू की नजर से खिस कर बड़ों किनाई से उन्हें सरवाले घर ही रोगा। आस्तानन दे दिया कि दो मिनिट में स्वय ही मत्र कुछ बरायदे में पहुंचा देवी।

ऐगा पहले भी कई बार हो चुना या तिवन उन दिन नस्मू को मुद्ध स्रीतः गमा सा गया। वरपाये की और तिदेव द्वीते उतने नीलू के वने में बोह दान कर पूरा—"एक बान जुन, तैरी वादी और सम्मी पुने रुगोई में वहीं आने देती, मेरे सामने साती-थीनी भी नहीं। ''''' नवा बान है न

Jacob Carlotte

committee and a second

नीलू ने भवें चढ़ा कर सोचा और नस्सू की कमर में बांह डाल, उसे अपने साथ लिपटाते हुयें समझाया—"में बताऊं, तू मुसल्ली है न !"

नस्सू ने सोच कर पूछा—"अच्छा, तू मुसल्ली नहीं है ?"

"नहीं, में जोशी हूं।" नीलू ने समझाया, "तेरी अम्मीजान सलवार पहनती हैं, वह मुसल्ली हैं। मेरी अम्मी धोती पहनती हैं, वह जोशी हैं।"

"तू कहाँ धोती पहनती है ? तू फाक पहनती है । मैं भी फाक पहनती हूं ।" नस्सू ने फिर आग्रह किया ।

"मैं बताऊं नस्सू, अभी हम लोग बच्चे हैं।" नीलू सोच कर बोली, "जब हम बड़ी हो जायेंगी तो मैं मम्मी की तरह धोती पहनूंगी, मैं जोशी हो जाऊंगी। तू अम्मीजान की तरह सलवार और गरारा पहनेगी, तू मुसल्ली हो जायेगी। फिर मैं तेरे हाथ का नहीं खाऊंगी। अभी तो छोटी हूं, छोटों को समझ नहीं होती है न! बड़ी हो जाऊंगी तो तेरे हाथ का थोड़े ही खाऊंगी!"

"तू मेरे हाथ का नहीं खायेगी तो मैं भी तेरे हाथ का नहीं खाऊंगी !" नस्सू ने समर्थन किया, "जब हम बड़ी हो जायेंगी तो हिन्दू और मुसलमान हो जायेंगी। हिन्दू-मुसलमानों में खूब लड़ाई होगी। हम लोग भी खूब लड़ेंगी, है न?"

"हां, तो फिर तेरे गुड्डे और मेरी गुड़िया की शादी कैसे होगी ? हम खेलेंगी कैसे ?" नीलू ने चिन्ता से पूछा।

"शादी नहीं होगी तो आओ गुड्डे-गुड़िया की लड़ाई का खेल खेलें!" नस्सू ने सुझाया, "तू मेरे गुड्डे को छुरी मार, मैं तेरी गुड़िया को छुरी मारूंगी और फिर गुड्डे-गुड़िया के घर में आग लगा देंगे! …...है न?"

नीलू के सहमत हो जाने पर नस्सू ने सुझाया—"तो जा, तू रसोई से तरकारी काटने की छुरी ले आ। हिन्दू-मुसलमान की लड़ाई का खेल खेलें।"

नीलू ने जाकर दादी से बड़ी छुरी मांगी। उन्होंने विस्मय से पूछा—'हैं, छुरी ! छुरी का क्या करोगी ?ना, हाथ कट जायेगा!"

"नहीं नहीं ? नहीं कटेगा ! हम हिन्दू-मुसलमान की लड़ाई का खेल खेलेंगे !दो न जल्दी ! " नीलू ने मचल कर आग्रह किया।

दादी की आंखें भय और विस्मय से फैल गई। दोनों हाथों में सिर थाम उन्होंने नीलू की मां को पुकारा—"हाय राम !देख तो ! !थे वच्चे ! ! !"

आदमी या पैसा ?

कातिज से सहपाठी हम तब नीम अब बिलद चुके हैं। हम सोगों के जीवन में जब कोई सादुरच और समग्रा भी नहीं रह गयी। कभी आपम में साधारकार हो जाने पर शिष्टाचार के माते मुस्कराहट होठों पर छा जाती है। अधिकाम में हम साम अवनी-अपीर हण्यता में या कहिये निर्चाह न हो सकने सायक सामसी में सन्त्रीय और सकनता अनुभव कर लेने की आध्यारिनक प्रतिया का अध्यास करते रहते हैं।

अपने सहपाटियों में से माय: नरदेव और राम बानू की ही याव आती है। नरदेव आई॰ सी॰ एग॰ में बना गया था। बहु अब ्हमेंटेरियट में दूब ऊर्च पद पर है। जब कोई पूछ बैटता है कि हमने एम॰ ए॰ कब पास किया था तो मुह से उत्तर निकत्त जाता है—'हमने और नरदेव में प्रेजीहेन्सी कारित पर एक हाथ ही एम॰ ए॰ किया था। अर्थ जानते नहीं, वही नरदेव को स्वायक-

धासन का सेन्नेटरी है, दो हजार मासिक ले रहा है !'

इस दूष्टि से ह्यारे दूसरे साथी राम बाबू को भी खुद सफल समझा जाना चाहिये परन्तु उनके प्रति समाज में और अपने मित्रों से भी भीता आवर गड़ी जैता नरेंद्र के लिए हैं। तनसा के नाम पर राम बादू भी डेड हमार से पहें है परन्तु न उनके अनेने बेहरे पर और न समाज के हस्य पर हो उनका बैसा रोत है। हम मोग प्रायः अपने राम बाबू की चर्चा सरानुश्रति से कर संतोप पा मेते हैं कि यह भी कोई जिन्दगी हैं? "हो बरावारों ही समझिये!

कारित में राम प्रतिभाषान और वेपरवाह मी था । कालिज के बाद पत्र-कार का गया । सबरें इक्ट्ठी करने या यहते और उन्हें रंग देने की अदिसीय प्रतिमा के कारण आज पत्रकारों में उसकी तो नदी; असबता उसकी कतम की पाक है। घरीर से स्वान्नुसा, पोताक की ओर में वेपरवाह, आसी पर मोटे-मोटे शीओं का चढ़मा चढ़ाये, मैज पर बैठ कुछ घन्टे कलम विसकर वह ऐसी बात पैदा कर सकता है कि कभी-कभी सरकार भी परेशान हो जाती है और समाज के दड़े-बड़े स्वस्भ पूंजीपित भी तिलमिला उठते हैं। यह सब कर सकते पर भी राम बाबू की अबस्था दबनीय ही है।

राम बाबू एक बड़े होटल में रहते हैं। छेड़ हजार माशिक तनलाह पाते हैं पर होटल का मासिक बिल छ: महीने तक उधार चड़ा रहता है। तनलाह मिलते ही यदि उधार लेने बाले आ न पहुंचें तो तनसाह सन्ताह भर में ही समान्त हो जाती है और फिर मित्रों से दस-दस, पांच-पांच उधार मांगते फिरना! सब से बड़ा प्रलोभन तनलाह मिलते ही राम के सामने आता है, घुड़दीड़ में बाजी लगाने का।

राम यादू से अपनी अन्तरङ्गाना चली आ रही है। उसकी दयनीय दशा देख कर डेंढ़ हजार रुगये माहवार पाने वाले व्यक्ति की तुलना में, उससे लगभग एक चौथाई तनखा पाकर भी अपना जीवन सन्तुष्ट समझने का संतोप होता है और एक सफल आदमी को उपदेश दे सकने की महत्वाकांक्षा भी पूरी होती है। राम का जीवन एक खूब ऊंचे लम्बे वांस जैसा जान पड़ता है जो विना किसी सहारे के अकेला खड़ा है। हवा और आंधी में ऐसे झूलता है कि जब चाहे गिर जाये। हम लोगों के जीवन बीसियों टेकों और रिस्सियों से पृथ्वी के साथ जकड़े हुये हैं। ऊंचे न सही पर हमारे जीवन के हरदम गिर पड़ने की आशंका भी नहीं।

राम को कई बार समझाया—"यदि तुम से अपने खर्च की व्यवस्था ठीक से नहीं हो पाती तो तनखाह मिलने पर हमारे यहां अपनी भाभी के पास जमा कर दिया करों। वह बड़ी समझदार है। देख लो, चार सौ में घर चलाती है। आड़े समय के लिये कुछ बचा भी रखती है। जानते हो, वाल-बच्चे वाला घर है! ……तुम आवश्यकतानुसार रुपया ले लिया करों।"

राम वादू ने दैन्य से दांत निकाल हंसते हुये इन्कार में हाथ हिला दिया— "यह बात नहीं! आखिर करें भी तो क्या? " बस ऐसे ही चलता है। " विवशता है!"

"विवशता है ?तनखाह मिलते ही पांच सौ-हजार घुड़दौड़ में लगा देने की तुम्हें क्या विवशता है ? तुम आशा करते हो, पचास हजार मिल जायगा और जेव का पांच सौ-हजार भी खो बैठते हो। तुम्हें पचास हजार ती अस्तत ही बात है ? बचा देड़ हवार में गुजाना नहीं पन साला ? हम तीमों को देशों ! जैब का बदवा यो देवे पूर जो परेसानी होती है यह साल हो है। मान सो, पनाम हवार आ जान और वह मी-वीद पर साग दिया हो ?" तर ने साम भाइ को सामानि का यह किया।

"मवाल नुजारे का नहीं है आई, विगद तो यह है कि सूद गुजरता जा रहा हूँ !" राम ने विकासा में हाय फैला अपनी बटहुत के दिलके जैसी हमामन बड़ी दोड़ी उठा दी, "पचाम हमार की अर रह मही, दीक गहते हो। "हजार में ही बाब बन सबना है, यह भी ठीक है पर आदमी करे बया ? और करें दिन के लिये ?" कूमीं पर सम्भल कर उसने कहा, "सुनी, एक बाजी लगा देने से ऐसा मानून होता है कि कोई ऐसी बीज सामने आ गई है जिस में आदमी हुम गया हो । सब कुछ उसी के लिये है, समझे ! उसमें परे क्ष दिलाई नहीं देना । आधा और आगका की शनसनाहट अनुभव होने लगती है। बुद्ध देर के लिये जिन्दगी की गर्मी महतून होती है। एक सनसनाहट ! श्रीवन की एक क्षतकार ! एक ज़िल मालूब होती है। बादमी जिन्दगी के बोश को भूल जाना है। जिन्दगी स्वयं ही दौड़ पड़ती है, जमे डोना नहीं पड़ता। मन जमग पड़गा है कि जूड जायें ! "नहीं तो जिन्दगी में है बया ? बाजी हार गये सो बजा और जीन गये सो बया ? यरमी सो बाबी की होती है, ब्रिय मी होनी है। बह ग्रिल ही सब बुद्ध है।" राम नियिलता में बुसी पर लुढ़क गया, "और जब जिन्दगी में गरमी या बिस नहीं रहती तो फिर सुरती वा प्रिल के अभाव की अनुभव न करने के लिये, उसे हुवो देने के निये, मन मे गरमी पैदा करने के निये तनीयन होती है कि पियो ! अगर न पियो हो सोचते रही कि जिन्दगी किस लिये हैं ?" राम ने उत्तर मागने के लिये दीनता से हाय फैला दिये ।

राम उन रोज बीस रुपये उधार मांगते आया था। जानना था देता ही पढ़ेगा परन्तु रुपया उधार दे देने से पहले इनने समर्थ विषय की भलाई के विचार में यह नना देवा भी काईच समझा—"देवी, आडे समय तुम्हें दरा-धीम रुपये उधार दे सकता हूं। बताबी जीवन में नुम राफन हो या है ? राम्भीया, जिन्दामी जान-बूस कर दलवान पर दलेखी जाने में ही बया संतीय ? ... एक दिन ऐसी नमूह मुझे बातोगे कि उत्तर पहला समझ ही न रहेगा ! नहीं एक नगह पान दिवस कर किर उत्तर की और चटने की की बिसा करती था हिने ?

.....इतना घुड़दीड़ में उड़ा देना, इतना पी डालना और रहा-सहा छोकिर्यों को खिला देना; इन वातों में क्या तत्व है ?...तुम्हारे हाथ में क्या रह जाता है ? भाई, जीवन में कुछ स्थिरता तो हो !.....तुम्हारे हाथ में प्रतिभा और पैसा दोनो हैं। तुम चाहो तो क्या नहीं कर सकते ?"

"वताओं में क्या करूं ? " में क्या कर सकता हूं ?" राम ने ठोड़ी पर हाथ रख मेरे परामर्श के प्रति विवशता प्रकट की, "डेढ़ हजार रुपये से ज्यादा तनखाह की आशा मेरे लिये इस व्यवसाय में नहीं हो सकती। इसके आगे एक ही महत्वाकांक्षा हो सकती है कि मैं अपना पत्र चलाने की वात सोचूं। मैं इतना मूर्ख नहीं हूं कि साधनहीन होकर भी अपिरिमित साधन पत्र-मालिकों से होड़ करने की वात सोचूं और वह सिर-दर्दी में समेटूं किस के लिये ? " हैं हजार रुपये में अपना श्रम वेचता हूं परन्तु में अपने पूंजीपित मालिक के हाथ में एक चातुक की तरह हूं। तुम समझ लो, मेरा मालिक मुझे जनमत पैदा करने की कीमती मशीन समझता है जिसे वह अपनी सामाजिक और राजनीतिक शिंक वनाये रखने के लिये चला रहा है। इससे मशीन को क्या फायदा ? " क्या संतोष ? " मशीन का अपना क्या अस्तित्व ?

"सुनो, में इतना मूर्ख नहीं हूं कि अपने पूंजीपित मालिक की दृष्टि में उपयोगी हो सकने के कारण अपने ज्यक्तित्व को कोई खास महत्वपूर्ण चीज समझ वैठूं। मैं यह भी जानता हूं कि जो आदमी डेढ़ हजार रुपये माहवार दे सकता है, वह पैसे के लिये बातूनी कलाबाजी करने वाले मुझ जैसे बीसियों आदमी खरीद सकता है। मुझ से तेज बीसियों पड़े हैं, जिन्हें अवसर नहीं मिल रहा, वे हजार-आठ सौ लेकर वहीं कलाबाजियां कर सकते हैं जो मैं पन्द्रह सौ में करता हूं। कहो, किस बात के लिये पांच जमाने की कोशिश कहं?

"वताओ, जिन्दगी में क्या उद्देश्य बना लूं? अगर एक औरत घर में लाकर, उसे और उसके बच्चों को ही पालना शुरू कर दूं तो यही कौन बड़ा काम है!" राम ने प्रश्न में मुंह फैला अपने टूटे हुये दांत दिखा दिये, "किसी ने मुझे जरीद रखा है, किसी को मैं खरीद लाऊं? "यदि मुझे उसका स्वभाव और व्यवहार असह्य जान पड़ा तो? " भेरे जैसे दो-चार और मनुष्य पैदा हो जायंगे तो इससे समाज का क्या वन जायगा? " भेरा मालिक मेरा उपयोग करता है। मैं अपने आपको भुलाने की चेप्टा कर आत्माभिमान वचाये हूं। अच्छा, अब वीस रुपये निकालो, वहुत जरूरत है!" राम ने उठने के लिये

सैयार होकर कहा, "अर्थ, जाज झरना के यहां जाना चाहना हूं। गयीयन बंधी सुम्त है। जन्दी करो।"

"चमे जाना ।" मैंने बहा, "ऐसी जल्डी बया है ?"

"बन्दी ही है। फिर कोई दूसरा बहा जा बँडेगा सो मुक्किय होगी न !" राम उताबकी से बोला, "निकासी न रपये !"

"सरना के बहा सामिर बया मिल अवेगा ?" मैंने समझाना चाहा ।

"स्या मिल् आध्या ?" हाय हिलाते हुये राम ने उत्तर दिया, "दोनीन चर्छ अपने आपमे चित्रूगा नहों। "नित्रमता नहीं अनुभव करेगा। उसकी बागों में भूता रहेगा। रिल-बहलाव रहेगा!"

"जब पुम जानने हो।" मैंने आधह किया, "कि उसके यहाँ बीसियो आदमी आर्न-आन हैं तो जमकी बातों में बहचना घोषा नहीं। ?"

"जान कर जाना हू तो योगा नहीं है।" राथ नमझाने के निवे सिवितना सोंड मुनीं पर आने झुक गया, "मैं कोन उनका उस घर कर टेका तेने को सैपार हूं! बीन फरवे हुना, दान घर का हुक होता। तुन क्या पहते हो, कर मुनी यह नहें कि यह घेरे सिवा और किसी को जातती ही नहीं! "मैरे निवे जान वे देवी! ऐसा बहे सो सोना समझी। " उन पार्यक क्या प्रदा है? सब पूर्षों तो बह नियानने फीनदी परिवालों ने ज्यार मैंगनदार है।"

राम की बान का विरोध किया—"वह ईवानदार है रिजनके साथ ईवानदारी का सथान ही क्या ?"

"है में नहीं ? पहनी इंबानदारी तो उनकी यही है कि वह मानदारी मा सम नहीं मरती। वह ऐसी जवह बैटी है जहां बार खाय है कि सम्बन्ध मा वित्रना पैनों की है। अबर किसी का मन पोसे के बिना न मानता हो तो समने अधिक को बाह समझ है !"

"जब जानने हो कि कुछ धण्टों के रिझाव का किरामा दे रहे हो तो उसे भैस और मित्रना समझ सकते हो ?" मैंने तर्क किया ।

'प्रेम और मित्रता क्या है? कुछ घण्टे अपने मन की शिज्ञता मुलाने का मोन है मेंगा! जैसी बान में बाहता हूँ, जैसी ही वह करती है। बस इसी सान का दास है और फिर प्रेम होता क्या है? किसी ने मंत्री स्पाप पाने से ही नो प्रेम होना है! जिल्ली भर का प्रेम मेरी स्वाम में नहीं आता! दिसा में मन करने पंधे जम में प्रेम कैना? जिला प्रेम अनुसाव किसे प्रेम के अभाव की तुलना कैसे की जाये ? यदि मैं उसे छल करने के लिये विवश न करूं तो वह छल नहीं करती ।"

"छल नहीं करती?" मैंने राम को कोंचने के लिये विस्मय प्रकट किया।
"हां, छल नहीं करती है! पिछले दफे जब मैं उस के यहां गया तो यों ही
थकावट सी अनुभव कर मैंने कहा—झरना मेरे शरीर पर पाउंडर लगा कर
मालिश कर दो। वह मालिश कर रही थी। मुझे अच्छा लग रहा था। उस
से कुछ बात करने के लिये पूछ बैठा—मुझे तो मालिश करवाने से अच्छा लग
रहा है परन्तु तुम्हें इससे क्या संतोप मिलता है?"

"मेरी जांघ पर बहुत सा पाउडर डाल, उसे हाथों से सूतते हुये उसने

उत्तर दिया—"संतोष क्यों नहीं बाबू ? टका मिलता है।"

"मैंने बात बढ़ाई-"टका ही मिलता है न ! "संतोष तो नहीं मिलता ?"

"टके से ही संतोष होता है बावू !" उसने उत्तर दिया, "पेट भरना है तो टका चाहिये। टके के लिये करती हूं, नहीं तो तुम टका क्यों दो ?"

"टके के लिये करती हो ?" मैंने फिर पूछा, "अगर तेरे पास काफी रुपया होता तो क्या करती ?"

"करती क्या वावू ? करती यह कि मजे से लेट जाती और किसी को वीस रुपये देकर कहती कि रात भर मेरे शरीर की मालिश करों!"

राम ने कुर्सी पर सम्भलते हुये प्रश्न किया—"वोलो, है ईमानदार कि नहीं?" फिर ताव में आकर वोला, "मैंने झरना से पूछा, यह काम क्या तुम्हें अच्छा लगता है? "तुम सन्तुष्ट हो?"

"उसने उत्तर दिया—"बाबू, क्या सब लोग संतुष्ट ही हैं ? मनचाहा ही काम करते हैं ? पेट बहुत कुछ कराता है बाबू, जैसे और सौ काम यह भी एक काम है । पालने वाला कोई एक न हुआ, दस-बीस के ही सहारे जिन्दगी काट रही हूं । दस बुरा कहते हैं तो दस को अच्छी लगती हूं । चर्चरबाजार करने वाले को सब गाली देते हैं तो क्या कोई अपना धन्धा छोड़ देता है ? मैं कौन के बी वात करती हूं बाबू ! अच्छा बाबू, अपने-अपने घरों में दूसरी सब औरतें वा करती है ?"

"मैंने समझाया—"झरना, कैसे-कैसे आदमी तेरे यहां आते हैं! उसे गुलजारासिंह की याद दिलाई। गुलजारासिंह ड्राइनर है। तारकील के पीपे की तरह काला, मोटा और चिपचिपा; तिस पर सूखी झाड़ी सी दाढ़ी, दुर्गन्ध भरी पगड़ी। उसे झरना के यहां आते देश मुझे पूणा होनी है। उस की बाद दिला कर मैंने कहा—"कंसे-केंसे भूतों के साथ सी जाती है तू! """ "बुरा मही समत ?"

"वया कुरा सपता है बाजू ? बाजू यहां बात तूम मुलनार्शांतह की बहू से पूरों ... उस की बहूं 'न' कर सकती है ? बहु उसे रोटी देता है । कुमें भी कभी-कभी देता है । बहु कभी-कभी आता है । की हरकार करें ? '' सक्खा बाजू तुम जिस मालिक की नौकरी करते हो, जुर्दे क्या बहुत प्यारा स्नाता है ? बाजू जो अब्य देता है, अपना काम सेता है । कुमें नाहों देसा, की लेकें मुसद के दिर्पणों को सिच है है ! कोई अरोधानत परी हम पर एतराज करती है ? ''' उनहें के का बाग प्यारा संपना है ? पीचा ही तो ! ''याजू पुम धीन देते हो, तुम्हारी बात हमरी है, युराना साथ है । मुरानार्शांतह आता है, पच्चीमतीन दे जाता है । बोवत बाय साता है । कभी खाडी, कभी कपड़ा असम में दे जाता है । बोवत बाय साता है । कभी खाडी, कभी कपड़ा असम में दे जाता है । बाजू, आदमी साथ नहीं सोता उसका पीसा साम सीता है ! ''

राम उच्छू हुनता पर उतर आया था। मैं चौंका, रसोई ने बैठी बच्चो की मां इस की बात सुन न रही हो।

"बस ! यस !" हाथ के सकेत से उसे चुप करा रूपने रोने भीतर के कमरे में धरा गया।

प्रधान मंत्री से भेंट

रामराज्य, स्वराज्य या गणराज्य की स्थापना के बाद से भारतीय प्रजा या नागरिकों ने अधिकारों का आदवासन पा लिया है। इन अधिकारों में से एक बड़ा अधिकार है अपनी व्यक्तिगत या मामूली से मामूली शिकायतों के लिये मिन्त्रयों और प्रधान मिन्त्रयों तक से भेंट की मांग कर सकना। इस अधिकार को व्यवहार में लाने के लिये जनता बहुत उतावली भी जान पड़ती है। भारत की प्रावेशिक राजधानियों में सूर्योदय के समय ही अनेक प्रकार की पोशाकें पहने लोग, जिनमें खह्रधारियों की संख्या अधिक रहती है, मिन्त्रयों मुख्य-मिन्त्रयों और केन्द्र में प्रधान मन्त्री के निवास-स्थान की ओर बढ़ते हुये दिखाई देते हैं। यह लोग अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की सवारियों पर सवार रहते हैं। कुछ लोग इस दावे से कि अब जनता का ही राज्य है, सवारी के लिये दाम न होने पर स्टेशन से पैदल ही मिन्त्रयों के निवास-स्थान की ओर चल देते हैं, जैसे लोग तीर्थ-स्थान की ओर पैदल जाने में लज्जा अनुभव नहीं करते।

प्रधान मन्त्री के बंगले का बरामदा भेंट करने के लिये उत्सुक अभ्यागतों या यात्रियों से भर चुका था। प्रधान मन्त्री के निजी सहायक (प्राईवेट सेकेटरी) बरामदे में प्रकट हुये। बहुत समय तक प्रधान मन्त्री के स्वभाव और व्यवहार की छाया में रहने के कारण महापुरुप का काफी प्रभाव इत र पड़ चुका है। बाहर आते समय खहर की श्वेत टोपी की नोक ठीक करने लिये उठे हुये उन के हाथ विस्मय में फैले रह गये और माथे पर त्योरियां पड़ गयीं।

"आप लोग स्थाप लोग इस तरह चले आते हैं ? … आप लोगों को इस बात का जरा ख्याल नहीं कि प्रधान मन्त्री के पास इतना समय नहीं है ! …

आप सीम नहीं जानते कि कितानी बड़ी-बडी समस्याओं का बोत उन के कभी पर है ? 'आप सोम उन्हें अपनी छोटी-छोटी बातों से परेशान करने के निसे स्ते बाते हैं। आप सोमो से ममझ का दायदा किताना संग है ! आप जानते हैं आद मंत्री तथा (कैंदिनेट) की कितानी जरूरी बैठक है और प्रमान मन्त्री बैठक में आ रहे हैं। इस समय वे आप सोमों से किसी भी हालत ने मेंट नहीं कर तारते !" प्रमान मंत्री के निजी सहायक ने अन्यामतों को समझाने की कोशिया सो, ''आप सोमों को इनाता भी ब्यवहारिक आन गही कि मेंट करने ते पर्व समय निष्कार कर तेना आवश्यह है ?"

सम्मानित पोशाक पहिने सीन अतिथि एक साथ उठ खड़े हुये और जेव अथवा बेग में कामज निकाल कर दिखाने का यत्न करते हुये उन्होंने आग्रह

विया कि वे मुताकात निश्चित हो जाने पर ही आये है।

"मुमें सिमें एक वानय कहना है।" एक और अम्यायन योले।

अनेक अभ्यामन एक साथ बील उठे-"केवल दर्शन ...!"

एक और से पुकार उडी-"हम बीग हजार व्यक्तियों की और से भेजे सपे प्रतिनिधि"

दूसरी थोर से आवाज आई-"अन्न-संकट में हजारों व्यक्ति ""

"डिप्टी कमिश्तर के अन्याय """
"गोसी कस गई। पोच आदमी """

परेशानी से प्रमान भन्नी के निजी शहायक की आले भिन्न नई और उनके हाथ आराश्य में ऐसे उठ गये जैसे कोई आदमी सधुमक्की के दल को अपने

अगर अपटते देख आत्मरका के लिये घमरा गया हो ।

"वृप रहिते आप क्षेम!' "जो लोग प्रधान मत्री के दर्शन करना चाहते हैं, वे एक लाईन में सड़क पर खड़े हो सकते हैं! प्रधान मंत्री अभी मंत्री समा (कैंक्निट) की बैठक के लिये जा रहे हैं। जो तीग उन से कुछ निवेदन करात्ते हैं, वरापने में लाइन बोध में। क्ष्या बाद रिलंब, जो जो कुछ कहाता हो, वो सब्दों में, बहुत सर्वेप से कहिते।" निवी सहायक के फिर दोनो हाम उठाकर अभ्यागतों को समझाने के लिये क्ष्मनी बाद सोइसई। ्राप में कामजी का धीटा मा कृतिया निषे महाशय 'श्र' ने दुशाय माहम विषय—''आपने मही इस समय अने के तिये निस्म है ।''

"भूष को !" किया सहायम ने छड़िस्तवा से हाम छठानक उन्हें बैठे कहें। का सकेव किया ।

"भेरा मामता बहुत दिन में प्रधान मंत्री के मामने हैं " "।" महानय ध ने फिर आग्नह किया और अपने हाथ के कामज दिसाने हुने बीते, "में यह कामज उन्हें भोप देना पाहला हूं।"

निजी महायक आयद महाशय के और उनके मामले में कुछ परिचित्त थे। बोले—"आपका मामला प्रधान मंत्री देख चुके हैं। विश्वाम रिलिये, आप का गाम हो जायेगा परन्तु इस समय आप उन्हें परेशान न की जिये। इस समय प्रधान मंत्री बहुत ही व्यस्त है।" विजी महायक ने एक द्वार फिर सभी अस्या-गतीं की और देख कर चेतावनी दी, "इस समय प्रधान मंत्री बहुत व्यस्त हैं। आप फिर किमी समय मिल गकेंगे। प्रधान मंत्री एक मिनिट में आने यति है।" निजी सहायक यह चेतावनी दें भीतर चने गये।

लगभग दो मिनिट बाद प्रधान मंत्री राहर की क्षेत असकत, सूड़ीदार पाजामा और सफेंद टोपी पहने हुये निजी तहायक के साथ बाहर निकले । उनके दायें हाथ में लिपटे हुये कुछ कागज थे । प्रीड़ायस्था प्रध्त प्रधान मंत्री यीवत की मुद्रा में चपल चरणों से नले आ रहे थे । अभ्यागतों की और देग सौजन्य की एक मुस्कान उनके चेहरे पर आ गई। कागज पकड़े दायें हाथ को बायें हाय के सहयोग से उठाकर उन्होंने अभ्यागतों को एक सार्वजनिक नमस्कार किया और द्योड़ी में खड़ी मोटर की ओर बढ़ने लगे।

अभ्यागतों के हाथ नगस्कार के लिये उठे। कुछ एक के होंठ हिले परन्तु प्रधान मंत्री के निजी सहायक की चेतावनी के कारण शब्द मुख से न निकल सके।

महाशय क्ष अपने आप को सम्भाल न सके। हाथ के कागज आगे वड़ा वोल उठे—"मैं यह काम………।"

प्रधान मंत्री उछल कर महाशय क्ष के सामने जा पहुंचे—"नुप रहो ! रहो !! यह क्या बत्तमीजी है ?" गम्भीर अपराध के लिये प्रतारणा की मुद्रा में प्रधान मंत्री ने आँखें निकाल कर फटकारा।

"मैंमें।" महाशय क्ष भय से हकला गये।

"क्या वकवास है ? में "मैं "मैं कहता हूं चु-चुप रहो । मैं "मैं कहता हूं

चूप रहो !" प्रधान मंत्री भी कोष में हकता गये, "तुम लोग नहीं समझते कि कितनी बडी-बडी समस्यायें, जितने बड़े-बड़े मसले, किननी बड़ी-बडी सार्ने मुन्क के सामने हैं। तुम लोग जरा-जरा भी बातों को लेकर वहाँ चले जाते हो।" प्रधान मंत्री ने कावते हुये होनो हायों की मुद्धियाँ वाय कर समझाया।

"जी ! " महाश्रम क्ष ने क्षमा-सी मानते हुये अपने हाय के कागज

प्रधान मन्त्री की ओर उठा कर किर साहस किया।

प्रधान मन्त्री ने अपने हाथ के कानज कर्यों पर पटक दिये और महागय था के हाथ से भी कामज होन कर करों पर पटक दिये और वांनों हाथों से महायय हा के फोरों को नृत्र शिशोट कर पमताया—"जी ! जी ! जी ! जी में कहन हू जुर रहों ! जुर रहों !! पुर रहों !! पुन सोग तनीज कब सीलों ?" महायाय क्षा एक हिषकी से स्तम्य रह गये। उन्हें पुर करा देने से सम्प्रन

सहाय झा एक हिक्का व राज्य रह यह । उन्हें पूर्व करा दन सरकर होकर प्रधान कन्नी ने अपने पीछे पसते दो अर्दितियों और निजी सहायक की सहायता की उचेशा घर फर्जे एर पटके हुये सावज उठा निये और झानी उत्तिज्ञा को यहां में करने के लिये बांगे हाप से अवकान का बटन पेंटने हुये, तैज कदमों से इसोडी में सड़ी मोटर की और चन दिये।

मोटर के इसोडी से बाहर निकनते ही पीखे यह गर्व प्रधान संभी के निजी सहावक को में अर्थि साता किये महातम श के सामने पहुँचे। बांत पीन कर कोभ से के स्वर में डर्लन श के फटकारा-"विनचे बत्तमीज हैं आप! " आप की निजना सम्बाग्य वा लेकिन आप!" "

आर्थ का किनना समझामा या साकन आयुग्ग '।''
'जी '}'' अहाद्यम का ने फर्क से उठाये कामज दिलाकर द्यामा सी
मार्गनी काडी ।

ंकिर बही बात जी ! जी ! जी ! " मिनी सहायक का त्रीय विस्कोट की सीमा पर पहुंच गया, "पुन पहो ! पुन पहो !! कितनी अच्छी तरह आप की समझा दिया था लेकिन आप बाज नहीं आये । नित्रने बदकिसना है आप ! जबना बना-चनावा सामना आपने सराब कर निया और अब भी पूर नहीं एका काहने !"

"जी मैं~····!"

"जी, जी! जी! अंद भी चुन नहीं रहना चाहने ? सने बाटचे यहां . से !" निजी सहायक ने फैली हुई बांह ने बंगले के पाटक की ओर इसाना करते हुवे पमरी थी।

"जी मैं यह कहना चाहता हूं" महाशय क्ष के उत्तेजित स्वर को यथासंभव ऊंचा करते हुये साहस किया, "िक प्रधान मन्त्री अपने कागज मुझे दे गये हैं और मेरे कागज ले गये हैं।"

"हैं ! हैं ! हैं ! गजव हो गया।" निजी सहायक घवरा गये, "दूसरी मोटर ! मोटर जल्दी लाओ !" उन्होंने पास ही खड़े अर्दली को हुनम दिया । महाशय क्ष के हाथ से कागज झपटकर निजी सहायक तुरन्त ड्योढ़ी के समीप खड़ी दूसरी मोटर में प्रधान मन्त्री का पीछा करते चले गये।

मार का मोल

जपहरणप्रसाद कलकते में व्यवसाय कर रहा था। बहुत उसने अपने दूर के दिनों मन्द्रमधे के सासे में क्रवनाय बारम्य किया था। वस उसे व्यापार के दान-पंच और पैनरें का कोई ज्ञान में था। आरम्म में बच्चों को पहुंचा पर चलना निमाया जाता है करन्तु चलना सीस जाने पर महीरे की सहायता की आद्यरकता नहीं रहती; बच्चे में ही बीड़ समान लगते हैं। वैसे ही प्रमुख्यमाय पर नार क्यान्य के खेल में कटन जमा नेने पर तेजी से स्वतन्त्र ध्यवमाय करने लगा करने से के मानने दर्जे के बादार में उनके पांत अच्छे-स्मान भर से से।

जयकुरणप्रमाद को उस के बालकत्ता वोवर्धनप्रसाद का वण मिला। योवर्धन विमी आवस्पर काम से कमकती आकर उसका अदिविध अनने वाला था ! सातमता में मिनने और कुछ समय उमके साथ निस्सकोव विमोद में काट मकर्ज की आधा में जवहण्णप्रनाद का मन पुनिकत हो उटा। उनकी प्रमादा मकर्ज की आधा में जवहण्णप्रनाद का मन पुनिकत हो उटा। उनकी प्रमादा महत्त को अधान के अवकृष्णप्रनाद क्या मन पुनिकत हो देश । दिहात में रहते वाला गोवर्धनप्रमाद उसके कलकत्त के दंग और ठाट देश अवाग रह आयेगा! ऐदर्व्य का मुन्न केन्नल भोग की तृथ्य में नही होता। ऐदर्व्य का प्रदर्भन भोग से अधिक संतेष देशा है। व्यक्टण्णप्रसाद ऐसे ही गर्व की समय अनुभव कर रहा था। गोवर्धन को अपने दंश संकित कर देने के लिये उसने गो-मी के तीन नोट बट्टों में रहा विसे थे।

गोवर्धन के गानितक विकास पर उस के नाम का नाफी जार था या दिहार के देहांत का प्रभाव का कि इननी बाबु हो चाने पर भी गोवर्धनप्रमार गोवर-धन' क्या रहा था। वह सधार को बचने करने के विकास और विचय मही ममाना था। क्वाकने की निवासना, विस्तार और कल्सानीन जनप्रवाह से वह स्तथ्य-सा रह थया। 文 3 (1) 中央 中央 (1) 公司 (2) 中央 (4) 中央 (4) 电平衡 (4) 中央 (

में हिंदर के स्वार्त के भारतीय में स्वार्ति के लिए के निर्देश के प्रति के सिंह के सिंद के

म्प्रान में प्रश्न के प्रश्न के प्रश्न में के प्रश्न के प्रिक के प्रश्न के

हवहण्णवसार गुणा साम शावधेन को छेन को छैन करते के हिंगे हैं हैं हैं से से से से साम स्वार के प्रमा साम शोरते समय देवती स्थान सादि हैं सी। दो-बार प्रदर्श स्थान हैं सी। दो-बार प्रदर्श स्थान हैं सी। दो-बार प्रदर्श प्रदर्श हैं भी से। वयहण्णवसार और मीवधेन भी मादे हो गरे। वयव ना की वर्णा स्थान मीटें भर जाने पर बार-दम बादोंग्यों के सादे पर कर कर बार के की देवी जान पर्या है मिकिन भीड़ के बारण शाया भरान्य होंगा बादमा रायमार परि होंगर पर्यों है मिकिन भीड़ के बारण शाया भरान्य होंगा बादमा रायमार परि होंगर पर्यों है। इस स्थान में निम्न बम में वयहण्णवसाद बम में साई परी समय महारा लेने के निमें यम बी हम में गरवाद चमहें के पर्दे को साम, मीने

31

में लड़ा था। गोवर्षन चनती मोटर में खड़े रहने का अभ्यास न रहने के कारण सड़दड़ा गया और मिरते समय बहारे के लिये फैना हुआ उस का हाम मभीप की सीट पर बैंटी एक बंग रमणी के कपे पर जा पढ़ा। अवसर की सात, उसे करे होने की ऐसी ही जगह मिसी थी।

इमसे पहले कि गोवर्धन समल पाये, रमणी के समीप सीट पर वैठें हुये एक बंगाली भद्र पुरुष सीना फुला कर गरज उठे-"यह क्या अभद्रना है ?

आदमी हो कि जानवर?"

मोनपंत सरूपका मया परन्तु जयहण्यप्रसाद ने बीच-व्यापन कराने से लिये गोनपंत्र की ओर से वाया में बोत कर दामा मामी कि बन्दीमताने करा ती किये रावात ही नहीं। घटना वैक्व पर किसल नामें की विवस्तान के कारण हो गयी है। इत पर भी ब्यामी अद्र युवर का त्रीय वांत होते से कुछ समय लगा।

कुछ दूर चल कर दायों और की सीटें साली हो गयी। अयहरणप्रमाद और गोरपंत को भी सैठने की जगह मिल गई। बिहार से देहान से आयं गोवधंत को विना पूंचट काड़े, सकुच और निमिट कर चनने वाली लोमालागे कलकरों की रत्नां के प्रति उसी प्रचार का क्षेत्रूल ही रहु। या जैसे तरा बहे-बहै, विकल, चूल में निषटे और शीना कुनाकर सबसे के लिये बतावले कुत्तों को देलने वाले बेंदानियों को तस्ने-सम्मे रेमामे वालों से बत्ते, गोंद में कटाये जाने नाले या कीच पर बैटाये जाने बाति विकट्ट-आहारी कुत्तों को देख कर होना है। यह बार-बार आत बचा कर उसी युच्ची की और देख रहा प्रमान मृतनी पड़ी मो। यह शोवकर कि उस राज्यों की रहा के लिये वत्ते पटकार गुननी पड़ी मो। यह शोवकर कि उस राज्यों की रहा के लिये वत्ते पटकार गुननी पड़ी मो। यह शोवकर कि उस राज्यों की स्वति क्षा रहा है, गोवधंत के मान स्वति आत के कारण आदर और अद्धा का पड़िश्तों के प्रति अति मुन्यवाल गमाता जाने के कारण आदर और अद्धा का पड़ी हो गया था। यह नामार्तक तावचा के प्रति आदर, यद्धा और कीनुहल ने आसं पुरा-पूरा कर उस की ओर देसता रहा। मन हो मन उसने समत निया—पह है वनकत्ते के बढ़े राहर की, बड़े

गोवर्धन की बीट उम रक्षणी की चीठ के बार्ट और बितकुण सामने होने के कारण कर उनकी नक्सों में ही ची। गोवर्धन नव का पुर नित्रे वेते हो आदर से रक्षणी की देग रूप वार्च में सम्बादार बानक पूत्रा के नित्रे बनी साकी की, हो है हैने में विषय सा टूट जाने की जार्याना से गृहसा हजा देसला है। उस ने निचित ने शर्नवरणमा नो, निर्देश पर शतकी धीम की सी साथिति की, साथि पर निनी विचित्र विरक्षे की, श्री पर निनी मानो, यशिनाही धामों ने कोनों में बानों पर निनी विचित्र विरक्षे की, श्री पर निनी मानों, यशिनाही धामों ने कोनों में बानों पर निनी को में की देखा था। जन में नुष्ट समय वैदे याने पर मीदिन की मुख्यों ने ज्यानी जीन में दिखाई देने नाने माल पर सुष्ट निधान में दिखाई दिने हैं है । इन निशानों के प्रति मोदिनीन ज्याना भीतुरण में प्रमान समीप नैदे मित्र की मान पर महा समीप नैदे मित्र की मान पर महा निशान की है है।

्ययमुख्य में ध्यान में देखा और दने सार में ती समदाया—"पना पागल में है और कार्ट्स निवास है ? पानी उम्मिया के आवर्ष का निवास है। साथ सो धीसना है।"

गोवर्षन के मन में महानुभूति और वरणा की उपर आई। उमें समान आया, ऐसी फोमन और मुनस्या नारी पर भी भणार पर गवात है? उमें रमणी के प्रति आदर के निवार में गोवर्षन में उम और में अंदर में अंदर है। उमें रमणी के प्रति आदर के निवार में गोवर्षन में उम और में अंदर है। उमें विद्याल देर तक बहु मन ही मन यही गोवना रहा, उम विद्याल नगर भी निवाल अद्द्यालिकाओं में ऐसी ही असमय आदरणीय कीमन रमणिया भरी होगी। इतने आदर में थणाड़ पड़ने पर ये महम कर जुन कर जाती होगी १ यहानिनों की तरह मांय-कांय कर छुपर मिर पर न उठा लेखी होगी?

चौरंगी पर आकर जयकृष्णप्रसाद के इसारे पर गोवर्धन भी वस से उत्तर गया। बड़ी-बड़ी दूकानों के सामने। संघ्या समय हो गई जकाकोष रोजनी में घूमते हुये जयकृष्ण ने प्रस्ताव किया—"जनो कुन्ते कलकते का रंग दिगायें!"

वह गोवर्धन को यांह ने थामे 'एवरग्रीन बार' में ले गया। विजली की रोशनी से जगमग लम्बे में कमरे में, जगह-जगह लोग मेंजों को घेरे हुये कुर्तियों । बैठे थे। उनमें कितनी ही रित्रयां थी जो गदों की बगल में बैठीं, कहरते । ते हुई चहल कर रही थी। गोवर्धन के लिये यह दृश्य कल्पनातीत था। लिययों को समझ नहीं पा रहा था। पहनने-ओंढ़ने, चेहरे की कोमलता . केश-विन्यास से वे सब शहर के सम्मानित बड़े लोगों की मेम साहिबा ही . । पड़ती थीं परन्तु उन का ब्यवहार था मर्दी से भी बढ़ कर निस्संकोच। जर्मन विस्मित था। कलकत्ते में यह कैसी स्त्रियां हैं जिन्हें संकोच और भय नहीं ?

मार का मोल] १७

जयक्रमध्सद ने ह्निस्कों के दो पेग संग्वाये और उसमें सोडा मिता कर एक गिलास योवर्षन की ओर बड़ा कर बोला—"बेटा, यह विलायती ताटी चर्मी!"

अपने देहान में मोक्पंत पर और विद्युवयी के यहेन्द्रुयों की नजर बचा कर कई बार साड़ी चंख चुका था दलियों मिन के साम इस अश्रीपंत जनह में सराब पी तेने में उसे कोई आपति न थी। सराब के नदी में अधिक पूर-करी उसे हो रही थी उस विश्वों को देख कर।

"यह कैसी औरतें हैं ?" गीवर्धन मित्र ने पूछे विना न रह सका ।

''देल सो, मामने ही तो हैं । ' ' ' * कैसी होती हैं औरतें रे" मुस्कराकर जयकष्णप्रसाद ने उत्तर दिया ।

कुछ देर शह अयक्ष्मप्रमाद ने गोवर्धन को कींच दिया--"ययो परान्द है कीई ?''' बात करोगे ?"

गित्र की पुरुकराहुट से गोवर्षन ने अपने मस्तिप्त पर ओर देनर समग्रा कि करावलाने में मुक्ती-टिटोनी करने वाशी औरतें कैंगी ही सकती हैं ? निम्न के शाय एक ओर बैठा हुना वह इस अद्युत् दूरण को देन रहा था। उन निस्स्रकोच पुलियों से आर्थे मिन जाने पर दमें ब्युदिया अनुसब होने लाती।

गोवर्षन अपनी बाई जोर की भेज पर दो आदिषयों के श्रीच हुनी साड़ी पहते बेंडी एक पुनती को बराबर देख रहा था। उनके अहहान में गोवर्षन का ध्यान कई बार आकर्षिण हो चुका या। किर अहहान चुन गोवर्षन का ध्यान कई बार आकर्षिण हो चुका या। किर अहहान चुन गोवर्षन की आतें उसकी और गयी। गोवर्षन ने देशा कि पुनती के दाई और बेडा क्वींक जे पाच करवे का एक नोट दिना रहा था। पुनती ने पाच रूपये में नोट के उस में अंगुत दिना दिया और दूपरे हाय से उस मर्द की नमोज की जेव से रसन्त के दो मोट सोच किये। मर्द ने अपने नोट सामिन छीन तिने के सिस हाय की प्रवास में अपने के तिये हुमरी और सुन, नोट को अपने जाउन में शोधनी हुई मुक्तरा दी।

नोट दियाने वाला व्यक्ति यह सीनाओरों सह जाने के लिये तैसार नहीं या। जनने दतरे हाथ से युवती की कलाई ओर ने अरोह दी।

मुक्ती के मुह से बोल सी निकल गई 'उड़ा' ! उसके माने पर बन पड़ गये। सहसा उम का चलड़ कलाई सरीड़ने बाने क्यांक के बूंह पर जा पड़ा। दूसरे हाम से उस ने नोटो की सर्द के बूंह पर फेंड दिया। वार का भैनेजर और दो एक बैरे 'क्या है ? क्या है ?' कहते हुये उस मेज पर आ गये। उन लोगों ने बीच-बचाव कर स्थिति शांत करने के लिये युवती को वहां से उठा दिया।

यह गुवती उठ कर दूसरी मेज पर जा बैठी और आवेश में जल्दी-जल्दी सांस लेती हुई कलाई मरोड़ने वाले व्यक्ति की ओर ऐसे घूरने लगी जैसे मार खाई बिल्ली आक्रमण करने वाले की ओर देखती है।

जयकृष्णप्रसाद ने एक ही घूंट में अपना शेष गिलास समाप्त कर गोवर्धन को भी गिलास समाप्त कर उठने का संकेत किया।

वाहर आकर जयकृष्ण अपने मित्र से वोला—"चले चलो यहां से, झगड़ा-वखेड़ा हो तो वैठने से क्या फायदा ?"

वाहर आकर भी गोवर्धन के मस्तिष्क पर उस दृश्य के आघात से छा गई मूढ़ता कम न हो पाई। उसे ऐसा जान पड़ रहा था जैसे औरत का थप्पड़ उसके ही मुंह पर पड़ा हो!

जयकृष्ण की बाँह दवा कर वह फिर पूछ बैठा—"देखो इस बदमाश औरत की हिम्मत! और एक वह थी, बेचारी भले घर की शरीफ औरत वस में।"

मित्र की मूर्खता पर उपेक्षा से हंस जयकृष्ण ने समझाया -- "इस हराम-जादी को कीन कोई उम्र भर का सहारा देने वाला है जो यह चुगके से मार खा जाय ?"

शहनशाह का न्याय

गहनजाह बहुत न्यान-त्रिय थे ।

दरवार में उन के मुनाहियों ने उन की प्रतेना की--" अहाननाह बहुस न्याप-प्रिय हैं।"

सह चात गुल कर जहांपनाह को वह मुख हुआ को अनेक साजों की लहरों पर सहती गंगीत की नाल से बैठ, बेजुब हुते जाने पर भी न ही गकता, में गृण 'मीराजी' के व्यानों से उत्तेतित हो, बेचन मुदेदण की मानतों, के गीने आगाम में पर भैना कर स्वच्छर उड़ानें भदने ते भी न हो सकता था। उनहें अदुक्त हुआ, में एक ऐंगी हत्ती हैं जैसी नोई हुमरा पत्य नहीं हो सकता। उनके हुग गुण के कारण मंसार से उन के चने जाने पर भी लोग उन्हें साद करने हुग गुण के कारण मंसार से उन के चने जाने पर भी लोग उन्हें साद करने हुग गुण के कारण मंसार से उन के चने जाने पर भी लोग उन्हें साद

शहनगाह न्याव-प्रिय तो थे ही, उन्होंने और भी अधिक ज्याचर और पूर्ण ग्याय करने का निरुष्य कर निया । निरुष्य किया कि कोई भी गरीन-पुरसा उन के न्याय में वंचित न रह सुके । उनकी प्रवा को अप मिले या न मिले, ग्याय जरूर मिने । अप देना काम मीला का, न्याय करना काम राजा का । मीला अप है या न है, राजा ज्याय करेगा ।

कारिल (न्याय-प्रिय) शहनशाह ने सोबा—मों तो इंगरफ करने के लिये उन की तरफ ते मुन्त भर मे काजी, मुल्ला और दारोगा (नोकरसाहो के क्षेत्र कर) ठैनात हैं, मगर ये काजी, मुल्ला और दारोगा भी तो आखिर इसात है। स्वार्य और पदापात उन के भी मन में वा सकता है। वे कायाय कर सकते हैं लेकिन प्रवा की त्यार गिराना पाहिये। काजी, मुल्लाओं और दारोगाओं के कावाय से प्रवा को मेनाना वादवाह सतायत का फूजे हैं।

राह्तभाह जानते वे कि उनके हुजूर में पहुँच पाना सर्वसाधारण के लिये

सहल नहीं था। राजमहल की ड्योढ़ी से लेकर उनके दरवार तक सैकड़ों सशस्त्र सिपाही पहर पर तैनात थे। सैकड़ों स्वाजासरा तलवारें खींचे उन के हरम की ड्योढ़ियों पर मुस्तैद रहते थे, इसिलये शहनशाह ने हुक्म दिया कि महल में उनकी आरामगाह की खिड़की से नीचे जमीन तक एक वड़ा घण्डा लटका दिया जाये।

शहर में वादशाह सलामत के हुक्म से डींडी पिटवा दी गई—'खलक खुदा का, मुलक बादशाह का; हर खासो-आम को इत्तला दी जाती है कि साहिवे-आलम, जहांपनाह, शहंशाहेमुअज्जम की आरामगाह की खिड़की से एक घन्टा लटका दिया गया है। जिस किसी वशर को इन्साफ तलब हो, इस घन्टे को बजा कर साहिवेआलम के हुजूर में अपनी फरियाद हाजिर कर सकता है।'

शहनशाह की नौकरशाही, काजियों, मुल्लाओं और दारोगाओं ने जहाँपनाह का यह ऐलान सुना तो वे चितित हो गये। उम्होंने प्रधान काजी के सम्मुख जाकर दुहाई दी—"अगर इंसाफ जहांपनाह खुद करेंगे तो काजी, मुल्ला और दारोगा क्या करेंगे?"

प्रधान काजी मुस्करा दिये। उन्हें अपनी मातहत नौकरशाही की बुिंदि पर तरस आया। वे बोले—"बादशाह के न्याय का घन्टा वजाने देने का मौका किस के हाथ में है?इस घन्टे की रक्षा करना किसका कर्त्तव्य है? ... बादशाह सलामत की नौकरशाही का! बादशाह सलामत देश की रक्षा करते हैं इसलिये देश के मालिक हैं। बादशाह सलामत की नौकरशाही, बादशाह सलामत की जात और उनके घन्टे की रक्षा करती है इसलिये.....समझ लो!"

शहर भर के काजियों, मुल्लाओं और दारोगाओं ने प्रधान काजी की बुद्धिमानी और नीतिज्ञता को स्वीकार करने के लिये सिर झुका कर उन्हें आदाब किया।

बादशाह सलामत के हुक्म से न्याय की पुकार के लिये लटकाये गये घन्टे की रक्षा के लिये सशस्त्र सिपाही तैनात कर दिये गये। शहनशाह आरामगाह में वेगम नूरेहरम के हाथ से वरफ में दवी 'मय अग्रंबानी' और 'मय शीराजी' विल्लीरी प्यालों में पीते हुये अपने न्याय के घन्टे की टंकोर सुनने के लिये प्रतीक्षा करते रहते। दिन वीते, हफ्ते वीते और महीने वीत गये। न्याय के घन्टे ने न्याय के लिये दुहाई न दी। वादशाह सलामत को संतोप होता गया कि उनके राज्य में अन्याय नहीं है।

एक दिन चुप्रवा धोवी संघ्या समय अपने वैन पर पाट से लाढी लेकर घर लोटा था। यकावट में पूर होने के कारण वह वैन को सूटे से बाध देने से पहने ही लाट पर वैठ गया। बैठा तो कंग जा गई। बुग्वा का वैन जक्षतर में मिती इस स्वनवता का लाम उठाने के लिये जियर गृह उठा, वल दिया। वैत यूमत-किरना एको में वा पहुँचा। मंडी में उदा पे एक कुकान के आगे परी गुड़ को मेनी पर मुह मारा। विनये ने यह जन्माय देख वैत के मानिक को गोलिय देकर दो को मानिका की गानिका देकर दो नो के मानिक

बैल कुछ दूर आगे दौड़ा । किसी रईम के अस्तवल में घोड़े के लिये रखी हरी दूद देख, बैल को जीम दूव का रस लेने के लिये मचल गई। यह देख रईस के नौकरी ने वादकों और कमीचयों से बघवा के बैल का सत्कार कर

उमे आगे रास्ता दिला दिया ।

युषवा का बैल अवसर से पाई स्वतन्त्रता का आनन्त सेता, गनियो और बाजारों की सैर फरता चना जा रहा था। जनह-यनह उनकी पीठ पर छड़िया और लाठियों बरस कर निधान जनते जा रहे थे। बैल पनता-पनता महन्द्राह के महन के नीचे जा पहुँचा। वादशाह के आरामगाह की सिक्रकी से सटकना पन्टा उसे रिलार्ट्र विचा। अपने से बक्टा बैल की गुड़ की भेसी सा जान पहा। बद्ध उस की और अबने भगा।

न्याय के घन्टे की रक्षा के लिये चैनान सगस्य सिपाही आस-मास बैठे भौषा रहे थे। वे न्याय की हुन्हाई देने वाले अनुष्यों से घन्टे की रक्षा कर रहे

में । पर्माओं से जन्हें कोई मार्थका न थी ।

बुषवा का बीत गुड़ के लोश में घन्टे की ओर लपका । उसका मूंह सागे में पन्टा बन उटा । चौकसी के लिये तैनात आँपाते हुये विपारी आपक्तित हुये परन्त हुनने में आपक्तित हुये परन्त हुनने में आपक्ताह की विवक्ती के नीचे घन्टे की टकोर जुनने के लिये तैनात चौकदार कुकार चुका चा—"कीन है ? जन्मवाह, साहिबेआलम के हुजूर में इन्माफ की फरियार करने वाला कीन है ? करियादी की हाजिर किया जाया ।" अब बीत की सदेह कर भगा देने वा सवस्दन या।

म्याय-प्रिय राह्नसाह धराव के जोग में बूपने हुंगे दूनी तत्वरता से म्याय करते के तिये उठ बैठे। उनके सामने फरियादी की बनह एक बैत पेस किया गया तो बादगाह ननामन को कुछ तान्त्रून हुआ। उन्होंने अपनी आर्से मन कर प्यान में देशा—बैन तो बैन ही मा लेकिन किर स्थान आया कि साहिने- आलम की सत्तनत के पशु भी तो उनकी प्रजा हैं और उनके साथ भी न्याय होना चाहिये।

शासनशाह ने वैल को हक्म दिया - "फरियाद करो !"

वैल को चुप देख शहनशाह के मन में विचार आया कि वैल तो वेजुवां है। वेजुवां रियाया की फरियाद समझना उनका अपना फर्ज है। उन्होंने फिर आंखें खोली और गौर से वैल की ओर देखा। वैल के शरीर पर पड़ी लाठियों के चिन्ह बादशाह सलामत को दिखाई दिये। वे वैल की न्याय के लिये दुहाई का कारण समझ गये।

वादशाह सलामत ने शहर कोतवाल (नौकरशाही) को हुक्म दिया— "बैल के मालिक की तलाश करके उसे इन्साफ के लिये माबदौलत के हुजूर में हाजिर किया जाय!"

वादशाह के फरमाबरदार शहर कोतवाल ने मुस्तैदी से वैल के मालिक बुधवा धोवी को तलाश कर बादशाह सलामत के हजूर में फौरन पेश कर दिया।

बादशाह सलामत ने अपराधी बुधवा धोबी को सम्बोधन किया—"तुम्हारे वैल ने गाबदौलत के हज़र में वेरहमी से पीटे जाने की फरियाद की है।"

फिर बादशाह सलामत ने शहर कोतवाल को सम्बोधन किया—"इस वैल की पीठ पर चोटों के जितने निशान हों, गिन कर उतने ही कोड़े वैल के मालिक बुधवा धोवी को शहर के चौक में खड़े करके लगवाये जायें।"

बुधवा घोबी सजा का यह हुक्म सुन कर कांप उठा । उसने जमीन पर सिर रख दुहाई दी—"जहांपनाह, मैं तो अपने बैल को फूलों से पोंछ कर रखता हूं। मैंने उसे नहीं मारा। कोई गवाह कह दे उस ने मुझे बैल को मारते देखा हो!"

अभियुनत को अपने इन्साफ पर एतराज करने का दुस्साहस करते देख शहनशाह को ताज्जुव हुआ लेकिन इन्साफ का खयाल कर गम खा गये और इशांद फरमाया—"ऐ नादान वशर (भोले आदमी), मावदौलत के इन्साफ पर उच्च करने की तुम्हारी जुरंत से माबदौलत को ताज्जुव है। माबदौलत के इन्साफ पर रियाया का उच्च करना ही सब से बड़ा जुमें है। जब वालिये-सल्तनत (सरकार) रियाया पर खुद इल्जाम लगाये तो गवाह और सबूत की जरूरत नहीं होती। हमारे कोतवाल ने तुम्हें गिरफ्तार किया है। माबदौलत ने तुम्हें सजा का हुक्म दिया है इसलिये तुम इन्साफ में कसूरवार हो!" राहर कोनवाल बादबाह का हुवन पूरा करने के लिये बुगवा धीवी की मुक्तें बाथ कर से गये।

जब साहिवंबालय अपनी आरामगाह पर वायस लीटे तो मेगम मूरेहरम में उन्हें न्याय को तरपता के लिये वयाई थे। बादपाह वेगम में हाथ से तराव मा तया जाम स्पीपार करते हुने सतीय से बोले—'वेगम, आज दुनिया ने देख निवा कि माबदीलत की अदल में देखान तो चया, जानवर के साथ भी रुगाफ किया जाना है।'' और शाहमधाह ने न्याय स्पापना से परिश्वम की पत्राम कार्य संस्था करते ही सप्तन्ता के सायवास्त्र में, सराव का एक और जाम एक पूंट में थी निवा।



स्थायी नशा

सन् १९४२ में 'भारत छोड़ी' आन्दोलन में भाग तैने के कारण जेल जाना पड़ा था। जेल से छूटने पर दाजू ने परिवार के प्रति उत्तरदावित्व के सम्बन्ध में एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर समझाया — "" जो आदमी इस लड़ाई के जमाने में भी नहीं कमा सका, वह दुनिया में कभी कुछ नहीं कर सकेंगा! " रुपया तो बरस रहा है। कोई समेटने के लिये छोली भी न पसार सके तो उसे क्या कहें """?"

"कोई मौके को ठुकराता ही जाय तो मौका ही उसके पीछे कहां तक दौड़ेगा?" दाजू जोर देकर बोले, "तुम्हें देश का काम करने से कोई नहीं रोकता लेकिन देश का काम करने लायक तो हो जाओ ! "तुम नकल करते हो बड़े-बड़े लीड़रों की ! अरे, उनकी और तुम्हारी बराबरी क्या ? वे लोग सी-पचास का पेट भर, उन्हें अपने साथ लेकर चल सकते हैं और तुम हों। अपनी व्याही औरत को ही दूसरों की मोहताज छोड़ कर देश की सेवा करने चले हो ! "जो अपने घर का कुछ नहीं बना सकता, वह देश का क्या लाक बनायेगा?"

और फिर दाजू ने सांत्वना दी—"नुम्हें करने को कहता कीन है ? तुम हमारे साथ तो वने रहो। वस देख-भाल में साथ देते रहो। आलू के परिमिट के लिये दरखास्त दे दो। आलू न ढोना चाहो तो परिमट ही वेच डालना। हजार-वारह सौ उसी में वच जायेंगे।"

युद्ध के समय, रुपये की उस वरसात में परिमट-मात्र ले लेने से, इतनी आसानी से हजार-वारह सौ प्रति मास वन जाने की आशा ने यह विश्वास दिया कि उचित रूप से देशभिक्त कर पाने के लिये अर्थात कांग्रेस में कोई अधिकारपूर्ण स्थान पा सकने के लिये हाथ में कुछ रुपया होना ही अच्छा है।

स्यायी नशा]

रुपये को आवश्यकता किम काम में नहीं पड़ती ? अगर मेनाओ नो एक तार ही देना हो अपना नेताओं ते जिसने के नियं सरानक जाना पड़ जाम या समा करने के नियं डोंडी ही रिटबानी हो तब भी रुपये के नियं होम पणारना ही पड़ना है। ऐसे समय समा ना हो सकना और न हो सनमा, इन कार्य के नियं रुपया दें सकने चाले पड़ ही नियंद करना है।

एक बात यह थी कि जितने जग्गाह से 'कर या 'मर!' की भावना में आरोतन में आप के कर हम लोग जेन नमें थे, जेन में मिमने वाने समाधार मंत्रों से और जेम से छुटने के बाद गाँधी जी, नेहरू औ, पठती, और मीमाधार आही के सक्त्रा आहे में स्थान मुद्देश कि १९४२ की हमारी जाति, 'कोंग्रेस के नेनाओं को आहेत नहीं थी बन्ति नेनाओं के अभाव में अंग्रेस सरकार के उत्तेनना दिनाने पर, देश के मुमराह नीजवानों का अनिवासित उस्साह-मात्र था ' अनुसाहित करने बाल इवने अधिक नारणों से प्रिया पार्या का वाल की स्थान की पर्योग्र सामाधार की स्थान की स्थान की सामाधार की सामाधार की स्थान की सामाधार की स्थान की सामाधार की सामा

पर्रमिट पाने के लिये बान पांडे जो की बाफिन होनी थी। उन्होंने मूर्यास्त के पहचात सार्वे-सात बजे आने को कहा था। कारोबार के नये-नये उस्साह के पीडे की के यहां टीक समय पर पहुंच जाने के लिये उस्सुक था परस्तु धान मुख्य के प्रस्त भी अवेदाा भगवान नी पूजा बीर कुला मे हो अभिका दिश्याम एसते हैं। सवा-सात की वे अपनी सच्चा समय की पूजा अवर्षित पाठ करने के निये मनान के सामने नस्त पर बैट गये। मिनट पर यिनट गुजरसे जा रहे थे परंतु बाजू पर याट सामान्त होने मे मही आ रहा था। पाठ समान्त किये विना साजू कर पूजा पर से उट जाना उतना ही किटन वा विननता कि रामोजित की पहांची को अपने स्थान से उठ कर सतनऊ पहुंच जाना।

मैं वेषेनी और उलावती में दानू के कनान के सामने वहल-करमी करना हुआ उन का पूजापठ सामाय होने की प्रतीसा कर रहा था। दाजू को पूजा ममापत करते भी कोई जल्दी नहीं जान वहती थी। उन्हें अपने मंत्र बल पर इतान विस्तास है कि समूर्य में संसार को उन की पूजा सामत होने की प्रतीधा करती ही होगी। मुजिया से पूजा करते-करते आधे-यो आहमी से दो-चार आवस्यक बात कर विने में भी दानू को कोई आपीत नहीं होती।

पूजा करते-करते दाजू ने सडक से गुजरते वेचैनसिंह को पुकार कर उम



की जगह !"

उमकी मुर्गहर की उपेक्षा निषया ने नहीं की। उनने मित्र के गते में गरी अपनी बांद सीच कर उसके चुनों का विरेवान शटक कर चुनौती दी—"अबे हरायी, तु कीन होना है मुझे बाप बनाने बाला ? तू है मेरा बाप !"

हर्नुतान में आ गयां—"तेरी गांशा " " और मित्र के मृह पर सह में सप्पश्च नह दिया। उस प्रहार के उसार में त्रीपचा ने हर्जुकी हान के नीचे हाय डाल उसे चीहे प्रवर्धों के कहां पर पटक दिया और उसकी महिन में बनाहरूर करने की घोषणा कर घमाया—"साले " नहु है मेरे बाप की जगह!"

दोनों में गुरुषमृत्या होने नगी। कोई भी दूनरे को अपना बाप मानते की प्रतिका को छोड़ने के नियं तैयार नहीं था। पड़ोल की दूकानों से भले-मानुग दोड़ पड़े। भलमनबाहत के नहीं के गई में यह सीण ठरें के नहीं से बेगुब हर्रमू और निवास की मां-बहनों से अनुचित स्पवहार करने के इपादे की घोणना ऊंने स्वर में करते हुये उन्हें एक दूनरे से पुगक करने की चेपदा करते लगे।

भनेमानुस मोग सनकार रहे थे—"इनकी मां का ं होनों हरामियो को पाने पहुँचाओ ! ये बहन छः-छः महीने चेल की हवा वा आयें तो इनका विमाग जरा ठीक हो।"

पेग भेने जाने की इस धमकी का भी अबद नविया और हरजू के नदी पर न हुंबा। निषया हरजू की और हरजू नविया को अधना बाप बना लेने भी प्रतिशा ऊचे स्वरंभ इहराये ही जा रहे थे।

पानी में कोहराम मच गया। दाजू भी उस कोलाहत की उपेशा नहीं कर सके। अपनी पूजा में एक अल्प विराम देकर उन्होंने उन दोनों मूलों को, उनकी मौजिट्नों के धम्बन्य में एक-एक काफी बोझल गाली देकर समसाने का सान किया—"दोनों साले बसे में पानल हैं, समझते भी हैं कि नया सक रहे हैं?"

राजू की इम बात ने मेरा ध्यान दाजू के मंत्रपाठ और पूजा हो और जाता गया कि मैं ही में हुख मूंह से उच्चारण कर रहे हैं, उद्युत्त अर्थ और प्रमोक्त कितना समस पा रहे हैं ? और सोचा, हरजू और निष्या सो घटे-देव पटे में टर्स की अस्थायी सोक्त हवा हो जाने पर अपने व्यवहार के तिये लज्जा अनुभव करने लगेंगे और इस घटना की याद से उन्हें संकोच भी होगा परन्तू दाज का यह स्थायी नशा ?

परन्तु ऐसी बात तो कोई भला आदमी पूजा और मंत्रपाठ के सम्बन्ध में कह नहीं सकता; कहे भी कैसे ? - नशे के लिये लज्जा और पश्चाताप तो नशा टूटने पर ही अनुभव होता है।

मैं कुछ कह ही कैसे सकता था ? मेरे मन में तो अभी दाजू की सहायता से आलू का परिमट पाने की आशा शेष थी इसीलिये सुबुद्धि ने चुप रह जाने का ही परामर्श दिया।

राक सिगरेट

समनी बाह्मणों है परन्तु छोटी जात की। छोटी जाति इमनिये कि बाह्मण होकर भी उसके घर के लोग हन जोनते हैं। कठन श्रम और धरती के मैस में उनके घरीर बच्चित्त हो गये हैं। चूज और मैंत में निया का सम्पर्क होंगें के बारण का परिवारों का अवहार और आया भी मनिज हो गई है। वे मान और आइन मी बेठे हैं। यदि इन आहा जोंं को जीवन निर्वाह के नियं कठोर अपर मैता श्रम न करना पहता तो उनकी संचन्यस्परा में क्याहार और भाषा भी पवित्रना भी वनी रहती और उनके सामाबिक सम्मान के अनुकूत उनकी येटी पा नाम दमती न होकर दमयन्त्री होता।

बहीताय धाम की वाचा के माने में 'कर्णश्रवाय' और 'क्ट्रप्रवाप' के थीज सहक से पान-ए मीना हुट कर कानी की मुनराल है, है क्या """किंदी ! अगह तो वाचन तानी हो पाय धा जब नह पाराइ-वार द करण की थी। अगह से जान तानी हो पाय धा जब नह पाराइ-वार द करण की थी। अगह के बाद भी मह हे दे-यो बरस मानके में ही बनी रही। जब दमनी का दूसहा करकर (बजरता), निम्म कार्यिक केमी द दूसरे मक्सानी नीजवानों में मार्याद के महुनार राषट मार्या होने के सिवे 'लेम्यडावर' जाने कमा, बाह की अपने प्रोह मार्या-रिमा की सहायता के मिर्च चनके प्राह के आपा। एक ही बेटा होने पर मी-वार का बूटे हो जाना हुछ कारापराय सा सामा है परम्ह बान ऐसी ही थी। बजरन से पहले उसके मार्या-रिमा है का सम्बाद में परम्ह का अपने स्वाह की उसके मार्या-रिमा है की सम्बाद की परम्ह की स्वाह की स्वाह की स्वाह की स्वाह की स्वाह की स्वाह की पर से स्वीह से सारा-रिमा है केमी पर से पर से सारा-रिमा है की सारा प्राहम से पर से सारा-रिमा है की सारा प्राहम से सारा रिमा सारा से सारा प्राहम से सारा रिमा सारा से सारा प्राहम से सारा रिमा सारा से सारा प्राहम का सारा प्राहम की पर है से सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम के सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम के सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम करता अपने सारा प्राहम की पर सारा प्राहम की पर सारा प्राहम की पर सारा प्राहम की से सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की पर सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की सारा प्राहम की पर से सारा प्राहम की सारा प्

भारती में प्रत्तामार जीर साहतामार कर प्राप्त त्यानानि है अध्यि काम में पुण है हुए रही उन्हें मह का गहुल सापना था।

दमती भी भी सुनी तो बहु । याम बंद उर प्रदार पर उस में मुझ ती उत्तर ही सुन बाहे उस्ता है ऐसी बहु पाइन बनदा की मा उर भरान भी अपित तीने नहीं। उह अन्न ता के कहम पीरस्तीर बहु के दिए और दस्ती। याम प्राय बहुनी रहती-जान क्या बदन मिरना हो जा रहा है। उम्ही और के निये पास, क्योई के निये देशन और पानी उन्हीं, मेंत्र में साद फैस्टी जागी और इस सब में मुमें र पानी जो साम की दार्ग और कमर भी देशा देती।

दानी की मान के दर्शन में के पा मानु भा मनीन करना था। कभी दान दर्द करने समने, कभी किरो का कोई भाग या अपरें सूत्र जानी, कभी केर में चायु का गीनान्या चन जाता होंगा इस के निर्ण तकार के पुर्वे वा दम समा लेने की मलाह के परन्तु औरत जिस पर बाहान की जात, तस्ताकू विभे तो लोग क्या करेंगे, यह उर भी तो था। भी हो, एटट का इताज भी करनी था। मान ने दमनी की ममझाना कि आने कारा (मगुर) की पुरानी, छोडी गुरुगुड़ी के मारियल में बिना मानी आने नित्तम में तस्वाक् और आग रम लागा करें। साम ओवरी (भीनर की अंगरी कोडरी) में बैठ नुके में दम लगा लेती। दमनी मान के यह मब सहस्य भी दकें हमें थी।

मुसराल आकर दमती के मरीर की उठान गुन उभर आई थी। मरीर की वाढ़ और उभार पूरा हो गया तो उसमें जीवन और द्वि आने लगी; जैसे फल का आकार पूरा हो जाने पर उस में रस और रंग आने लगता हैं। उसके चेहरें पर जुनाई और आंगों में नमक आ गई। वजदत पिछले वरस सिपाहियों की अट्ठाइस दिन की छुट्टी पर आया तो लौटते समय मन ऐंठ-ऐंठ कर रह गया। दमती की चाह उसके मन में ऐसी वस गई थी कि छावनी में लौटने पर पांच हरदम अपने गांच की ओर उठने के लिये मचलते रहते। वजदत ने पलटन में सिगरेट पीना सीख लिया था। लम्बे-जम्बे कस खींच रास झाड़ने के लिये चुटकी बजाकर, वह अपने मुंह से निकले सिगरेट के घुयें में अपनी बहं की कल्पना करने लगता। यह सिगरेट के कश वया थे, दमती के लिये आहें थीं!

वजदत ने कम्पनी के सिपाहियों से तिकड़म लगा कर अपनी छुट्टी वारी से पहले ही, यानि नौ महीने बाद ही करवा ली। लैंसडाउन से चलते समय इस बार उसने टीन के फूलदार छोटे ट्रंक में बाप के लिये एक जोड़ा पुराने भनरत में छुट्टी पर जल्दी था जाने में मान्याप को अच्छा हो लगा था परनु जब हम बार सहके हैं मिद्री बरन में आपी ही कसाई उनके हाथ में रखी, तो इपना पानव्य हे उनके हाथ में रखी, तो इपना पानव्य हे उनके हाथ में रखी, तो इपना पानव्य हे उनके होए में रखी, तो इपना चान्य आप पा हारे उसे ति उसका हमें को इस बार भी हो महीने जी तनक्वाह पान्य आया था हारे उसी तनक्वाह में में मां-पार में निये मुद्र सामाग और दमली के लिये साईंग, चौरी के गुमरे और दूपरी चीजें भी के आया था। विजयत में संगत में मुख किएरेट-विवारेट जा भी चीज नरले तागा था। बजदत से मां-याप ने अपने हम में तो गहले से आपा पीया पाया और बहु के लिये कीनती साझी और पहुंग सो दसा देखा। उनदा आएवा उनका व्यवह वया ? यह बहु तो डाइन है। रखने तो तहके को बम ने कर विचार है।

बनदत छात्रकी हे कुछ नवे हम भी सील शाया था। दिन भर पूमता-फिरमा में तेती-याड़ी के माम में उसका मन न समता। बन्दुक चलाने वाले हम हम और पानदे की नया छूते ? यह पूमता-फिरता पास भील परे चट्टी (सड़क के पहान) तक चला जाता। वहां से घोड़ी मूमफिरों या मिटाई ते स्नाता और चुपने से बहु को दे देता। लिहान छोड़ कर अवना निस्तर ऊपर रसीई में समा किता। दसती के किसी काल में स्ते रहते में उसे अबेद मालूम होती हो दुराद बैटा—अपरी श्रो। "" प्यास समी है। पानी दे आ। स्ते किर यह की नीटने न देता। इतना तो मां-यान भी देखते वे और मन मार कर चुन रह नाती। कुछ न नहीं भी देख गते में । बबदत वाराम में सेट कर मिगरेट निकाल सेना । दमनी को सिगरेट चृत्हें से मुलगा लाने के लिये कहता । दमती गिगरेट मुलगा देनी तो यह गृन लम्या कदा गींन, उसे बांहों में दबा लेता और सिगरेट थमी मुट्ठी दमनी के मुंह पर रस जिह करता—तू भी पी ! दमती को पहने तो धुएँ से गांसी आई और घवराहट हुई । फिर धीरे-बीरे मजा आने लगा । तमासू के धुएँ से सिर घूम जाता तो दमती अखिं मूंद पित के सीने पर सिर रस नेती । दमती को भी यह सब अच्छा लगता ।

यजदत के छुट्टी से लीट जाने से पहले ही सास का मन यह से फट गया था। लड़के के चले जाने पर सास का व्यवहार और भी कड़वा हो गया। यह भी चिढ़ने लगी—जाने बुढ़िया को गया ही गया है? सब-कुछ करते घरते भी गाली देती रहती है। दमती भी उपेक्षा करने लगी। सुनकर भी न सुनती। सास का कोघ और जलन भी बढ़ती गयी। दमती सास से दूर रहने लगी। ईंधन, पानी या घास के लिये जाती तो पहर भर लगा देती। सास घर पर हो तो वह गौ-घर की खाद फैंकने के लिये खेत चली जाती और सास बेत पर हो तो वह घर पर बैठी रहती। दूर जाने का अवसर न हो तो गौ-घर की परछत्ती पर, जाड़ों के लिये जमा की हुई घास पर ही जा लेटती। अब घर और खेती के काम में उसका मन न लगता।

पहले कुछ तो एकलीते बेटे की बहू के लाड़ में और कुछ अपने आराम के स्थाल से सास ने दमती से कहा था—सब तरा ही है। में क्या छाती पर रख कर ले जाऊँगी, तू ही सम्भाल ! और घर दमती के हाथों में सौंप दिया था। टीन के दोनों बक्सों की चाबियां भी उसे दे दी थीं। सास के चाँदी के तीन-चार गहने भी इन्हीं बक्सों में थे। नाराज हो जाने पर सास ने सब लौटा लिया और बक्सों की चाबियां भी अपने घाघरे के नाड़े में बांध लीं। यहाँ तक कि रांबने के लिये आटा-चावल भी खुद देने लगी; अपनी मुट्टियों से नाप कर और वह भी इतना कि सास-ससुर के खा लेने पर वह का पेट भरने के लिये भी न बचता। जलन में सास गालियां देती रहती कि डाइन ने बेटे का मन उसकी तरफ से फेर लिया। जो कमा कर लाया, उसे ही दे गया।खसम की कमाई छिपा ली और खाती है मेरे सिर!

वजदत के दिये झुमके सिर धोते समय वालों में उलझ जाते थे। एक दिन दमती सिर धोने गयी तो झुमके निकाल कर ओवरी के आले में रख गई। लौटने पर सभी जगह ढूँढा पर न मिले। सास से पूछा तो वह गाली देने

सपी-हाय, देनो बाइन-की ! अपना वहना सुद द्विस कर मुत्रे चौरी समाती है! दमनी आंगू पोछ कर पुत्र रह गई। एक दिन उसकी मुरमादानी भी गायब हो गई। बजरन छावनी सौटते समय अपना फोटो बहु को दे गया था। दयती ने फोटो सिगरेट की डिबिया में बचे हुये एक सिगरेट के साथ रम लिया या । मास फोटो भी न पूरा से, इस हर में दमती ने वह दिविधा गी-घर की परधत्ती की हरू घन्नी में सोम कर दिया दी थी।

सास की गानियों की मात्रा बड़ती जा रही की और दमती की रतीई के निये दिया जाने वाला अब घटता जा रहा था। इतना कि उसका पेट ही न भर पाता । एक दिन दमनी ने देशा कि सारा ने आदा और भी गटा दिया । दमनी ने सोषा-हाब, में बवा लाऊंनी ? सास रसोई से बाहर गयी तो रमनी रवयं ही कठीने में दो-तीन मुट्ठी आदा निकाल कर वरात में डालने संगी। गाम ने पलड़ कर देख निया।

सास पान-पडोच के लोगो को मुनाकर दमती को चोर कह कर गानिया देने मग्री-जाने इस डाइन का नितना बदा पेट है ! राड का "" ।"

सास का कीय भड़क उटा । वह बकती ही जा रही थी । दमती गुस्से मे परान पटक नर रसोई ने निकल गई। उसे जोर की इसाई आ रही थी। वह गी-पर की परछती वर जा लेटी। कुछ देर रोनी रही। भून सग रही थी। वह सीच रही थी-वह जाने कब आयेगा ? उसके आने तक तो साम

मुप्ते मूलों मार डालेगी।

साम ने रोटी सेंक सी। ससुर को शाने के लिये पुरारा। वर्तनों की आहर से दमती ने जान निया कि मास गुरसे में बर्गन उठा कर आप ही मौजने के लिये पिछवाडे चली गई है। दमवी की अंति भूख ने बृडमुटा रही थी। कार परहत्ती में सोंसी हुई सिमरेड की डिविया पर उसकी दृष्टि पडी। सोना, मिगरेट ही मी ले। तिगरेट निकालकर सुसवाने के लिये देवे पांव रसोई मे पहुंची ।

दमती दिश कर रसोई में गई थी परन्तु सास की आहर मिल गई। उस ने भाषा, राह रूठ कर डराती है और वब बोरी करने आई है। यह बर्तन छोड़ कर दमती की चौरी पकड़ने के लिये देने यांव उत्तर गई। वह बड़बटाती जा रही थी-अभी चुड़ैत के झोटे मे आय समाये देती है।

सास ने रसोई में बाक कर देखा, दमती चुन्हें के सामने बैठी मुट्ठी मे

सिगरेट थामे कश खींच रही थी.। सास की आंखें चढ़ गई और मुंह खुला रह गया जैसे खुले आकाश से पत्थर आ पड़ा हो। सास होश में आई तो चींख उठी—"अरे देखो तो राँड़ को! "सिगरेट पी रही है! "हाय, यह तो याजार की रंडी है। हाय रे, तभी तो मेरे लड़के पर जादू कर दिया! पैसे चुराती है और चट्टी से सिगरेट लाकर पीती है। वावा रे, यह तो बखरी (वस्ती) के लांडों को बहकायेगी "! "सास नीचे आंगन में आकर वांहें फैला-फैला कर पड़ोस के लोगों को पुकार-पुकार कर सुनाने लगी।

ससुर रोटी खाकर विश्वाम के लिये दीवार के साथ पीठ टिकाये हाथ में गुड़गुड़ी थामे पी रहा था। कोलाहल सुन कर बूढ़ा कश खींचता हुआ ऊपर रसोई में पहुँचा और कोध में चिल्ला कर वोला—"हरामजादी, निकल इस घर से? ब्राह्मण के घर वाजार की रंडी कहां से आ गई! निकल अभी, नहीं तो अभी दाव से तेरी मुड़िया काटता हूं।"

दोपहर में खेतों से कलेवा करने आये पास-पड़ोस के लोग भी झोपड़ियों (वखरी) में ही थे। वे शोर सुन कर वजदत के द्वार पर इकट्ठे हो गये। स्त्रियां पिछीरी के आंचल होंठों पर रखे चिकत खड़ी थीं। सभी बूढ़े-बूढ़ियों ने सहमत होकर कहा—"सिगरेट पीती है! ब्राह्मण की वेटी वहू क्या, यह तो वाजार की रंडी है! वह तो सब की जात विगाड़ देगी! न वाबा, इनकें घर का पानी कीन पियेगा?"

दमती सिगरेट चूल्हे में फेंक कर सहमी हुई रसोई में दुबकी बैठी थी। सास ऊपर गई और उसे चुटिया से पकड़ कर नीचे आंगन में खींच लाई। डरी हुई दमती आंचल में मुंह छिपाये वैसे ही खिची चली आ रही थी जैसे वकरी कान से पकड़ ली जाने पर वेवस हो, खिची चली आती है। सास ने सबके सामने उसे लात मार कर कहा—"निकल जा रंडी, मेरे घर से!"

चिलम ठंडी हो जाने के डर से ससुर गुड़गुड़ी छोड़ नहीं पा रहा था। कश खींचता हुआ वह भी दमती को भारी-भारी गा लियां दे घर से निकल जाने को कह रहा था और न निकलने पर मूंड़ काट लेनेकी धमकी दे रहा था।

दमती जगह-जगह से छिदी, मैली-सी घांघरी पहने और वैसी ही पिछीड़ी ओड़े थी। मार कर निकाल दी जाने पर वह आंचल में मुंह छिपाये खेतों की ओर चल दी। खेतों से परे एक तुन के पेड़ के नीचे खड़ी हो सोचने लगी— कहां जाऊं? क्या करूँ? सास-ससुर के पास अब वह न जायगी। संसार मे उसके लिये एक ही जबह थी, एक ही रास्ता या कि छावनी जाकर अपने आदमी से उसके मी-वाप के अन्याय की जिकायत करे। वह तेज कदमो से चड़ी की ओर फल दी।

स्पती तीगरे पहर रुद्धप्रवाग जा पहुँची। दुकानों से पहुँच कर उनने छा जो का रास्ता पूछा। सोतह-मण्ड वस्त की सूब जवान, कोन्मी और परेशान सहशी को छायती का रास्ता पूछते देख कर चट्टी के दुकामदार हीरामा की दिवति मांपते देए न लगी। उसने दमती को शबस दे कर, पुचकार कर बैठा निवा और परेशानों की हारान में घर से आने और छावनी आने का कारण पूछते काग। दसरी ने आंचल से बांचू पंछिन्गेदिले, सास-सहुर के शलाय की और पूख की एरेशानों में हिसप्टेट परे सेने की सज्जी-सज्जी यात कह सासी। किर बोगी—'चेरा आवशी छावनों में है। उसी के पास जाऊनी।'

हीरामन दमती की सार्च को गानियों देकर उसे साल्यना देने के लिये मेना—'ही हो, और बधा ? अपने मर्द को छोड़ औरता कर कीन होता है, मही नाना ! नू पकी-मादी आर्द है। बाह्यण की जड़की है। कुछ दग और पुन्ता के। रास्ता बना होने। आराम से भीतर येंट। अपना ही पर समझ !" उसने दमनी को मुख् मूंनफती और मिठाई साने को दी। एक लोटा जल दे कर काना, 'हम भी बाह्यण है। नू हमारे लोटे का पानी पी सकती है। प्रदात कर।"

दमती को महक पर आते-जाति लोगों की नवरों से खिराये रखने के लिए हैरामन ने भीवर की कोटरी में बैठा दिया। दमती खावनी पहुंबने के लिए उतावनी हो रही थी। पस्टे भर बाद ही बोली — "अब जाती हूँ। रास्ता बता है।"

"बाहु, ऐहा कही, हो सहसा है ?" हीपान ने पुनकार कर समझाया, "मूनी कीने जाने दूं पुढ़ों ? पांचेत की बहु-नेटी कानी ही होती है। भात बता-गा कर बाता ! का समझाठी है तूं ? ती कोत का रास्ता है, धीरन में काम गं ! हात तरफ हो जाने मुमाफिट के साथ कर दूशा हुने ! तू बैचारी अनजान भीरत जात; अनेने कीत जामणी ?"

हीरामन ने दमती को बाल-नावन थोर बकेंन दे दिने । मात प्रोस्ते-बनाते गात का अभेरा हो गया । दमनी के बन वे दहननो वाले की उतावकी तो भी भनन्तु उनने कहें क्रिय बाद पुण होकर बाया या और बाइन को बोली सुनी थी। उसे ऊँघाई आने लगी। कोठरी की जमीन पर ही पड़ कर वह सो गई। कंघे पर ठेस अनुभव कर नींद खुली। देखा, कोठरी के कोने में छोटा-सा दिया टिमटिमा रहा था। हीरामन उसके कंघे पर हाथ रख कर मुस्कराकर बोला— "अव क्या सोती ही रहेगी?"

दमती उसके हाथ की पहुंच से परे हटकर नींद से वोझिल आखें मलने लगी। उसे परे हटती देख कर हीरामन वहीं जमीन पर वैठ गया और जेव से सिग-रेट की डिविया निकाल, एक सिगरेट उसकी ओर वढ़ा कर बोला—"अच्छा ले एक सिगरेट तो पी!" दमती आँखें मल रही थी, उसने इनकार में सिर हिला दिया।

"तू पीती तो है, ले न !" हीरामन ने आग्रह किया।

"ऊं हूं" दमती फिर सिर हिला कर वोली, "कहाँ पीती हूँ ? वह तो मेरे मदें ने दिया था। एक पिया तो यह हाल हुआ। "अव मैं छावनी जाती हूं।"

"बड़ी जल्दी है तुझे छावनी जाने की?" हीरामन उसके समीप सरक कर वोला, "क्या करेगी छावनी जा कऱ? वह तो तुझे और मारेगा कि घर से भाग कर क्यों आई! कहेगा, तूने दुनिया में नाक कटा दी!" हीरामन ने प्यार से दमती के कंधे पर फिर हाथ रख़ समझाया, "तू मौज कर! तुझे क्या है?"

"हट्ट !" दमती एक ओर हट कर उठ खड़ी हुई।

"नहीं मानती तो तू जान !" मुस्कराकर हीरामन वोला, "सुबह मूंह अंधेरे चली जाना । आधी रात में कोई रास्ता चलता है ? रात में सड़क पर मिपाही पहरा देते हैं । जिसे देखते हैं, चोर कह कर पकड़ लेते हैं । मुबह मूंह अंधेरे उधर के मुसाफिर चलेंगे । तुझे उनके साथ कर दूंगा । "वैठ तो !"

दमती उसके पास नहीं बैठी । हीरामन के आग्रह करने पर उसने उतर दिया—"वाह, पराये मर्द के पास कैसे बैठूं ?" और दूर ही खड़ी रही ।

हीरामन पल भर सोच कर बोला—"अच्छा, हमसे घवराती है तो तू पहीं सो जा; हम जाते हैं। सुबह छावनी की तरफ मुसाफिर जा रहे हैं। उन से वह आऊँ। तुझे साथ लेते जांयेंगे।"

हीरामन पिछवाई के किवाइ खोल निकल गया। दमती फिर अमीन पर लेट कर छावनी जाने की बात सोचने लगी। मन में नयी जगह होने की घव-राहट भी परन्तु घर कैने लौटती? कुछ देर बाद वह फिर सो गई। आधी रात में हीरामन ने दमती की फिर उठाया और बोला—"बाहर एक जाना- एक निगरेट] ५७

पहनाना मुनाफिर है। बडा भना आदमी है। तू भी ख्यान रमना गमती ! अदेनी रास्ता चनती औरना को पुनिम वाले भनोदा कह कर परह नेते हैं। तुत से कोई दूसे तो अपने को जुडी की 'वीबी' (पैनी) बता देना माना !"

दमनी को लग्दा नहीं समा । "हट्ट" उसने उत्तर दिया—"फिमी वैन (स्रोर मर्द) को अपना मर्द कैने कह दूनी में ?"

"यागल हे जू !" हीरामन ने अपूर्णवी और असनेपन के बन से ममझाया-"दूपरे की तुने कोन बना रहा है ? जू गांव की उहने वाली है, सड़क पर धनना क्या जाने ? तेरे ही अले वी कह रहा हूं । औरत की अहंची शहरा पत्रने का घरतारों हुत्त नहीं है। कोई नाम-गांध पूछे तो अनना नाम नन्य बनाइयों और कहना मेरा आदमी साथ है, जो पूछना है, उनगे पूछी ! पूलिन बाले बैंग (गैर महै) के साथ धननी औरन को पकड़ कर याने व जाते हैं। युलिन बाले सारेंग और साथ करेंगे ! यह हो यहां असा बाह्मण है। तू बले अपना आई समस !"

दमती को हुनान से अभेरी सहक पर लाकर होनामन बाहर प्रतीसा करने बादमी में मोला—'के प्रता, यह हमारे प्रमान की लडकी है बेचारी। इसे छावनी में ठीक से पूछ कर इसके मई की गॉफ देवा। रामने ने टसे कोई तन-लीक न हो! बयान रिमामी! बाहाल की सडकी और गाय बरायर होती है, ममसे!"

दमनी अधेरे अधेरे जन आहमी के साथ बनाती आ रही थी। बुछ दूर जा कर वह बन करने काम—"इन सबत, ऐसे अधेरे में बड़ी नकसीक कर रही है नू ? "क्या बना है?" वह बुछ हुग्दों नी। सोनी योनना था। दमनी कि कर माम-मानुर के जुन्म, सिमोट पीने पर मार कर निकाल दो जाने और एक्सी में अपने मई के पान जाने की बीधी-मान्ची बातें बना दी। इस आहमी में भी दमनी के साम-मानुर को यासी दे कर अने बहुत्म वस्यार—"वाह, तेरी जैसी मानी लड़की के साम ऐमा करना था जब रोड को ? दुनो तो लाने को इस-निजाई और पहनने-बाहने को बक्खा महना-कर्यहा पिनता बाहिये। तेरी उमर का गोचर बोने और बेस निमाने की है ? राम राम! देने पायरे-पिक्कीरों केन पर रहे हैं ? श्रीनमर के बावार में हम सुन्ने बोती ने देंगे।"

"तू बेचारा वधी से देगा ?" दमती ने उस की सहानुपूर्त का आदर कर उत्तर दिया, "मुझे अभी घोती का क्या करना है ? बेरा मर्दे से देना । यह मेरे चित्रं बही अवही देशमी घोती नावा था । येरी सास ने वह भी छोत ली।" एक दिन कार्य में पाता व कर प्रमुख दिन माण तक ने सीनगर पहुंच मंगि ।

मह महे पातार में लोकर दमलों का एक गुनी में कहें से मकान में ते गाम ।

इक्ता नहां पोर ऐसा मकतन दम हो ने पहुंच नहीं दैसा था । जायन भी दीवार

में चिरा हुआ और समान को दो शर में भी किया द नम हुए । दम ही ताने

पैदा महिर में घर्च हुई भी । दी शर में चीड महा कर नेंड महें। मह आदमी

दहतीं सीड अने को कर कर कर मामा और तृत्य ही एक दी हैं भी में

सामा । "मह दी कर हैं नहाने होते का पानी हा देगां" कह दम है में भी भी गाम में मालार में दारस्था है नहाने होते आता है।"

नता-भीकर नई भीकी पत्न कर उस आइमी की पताई रसोई में दमवी ने दाल-भात राधा। एक भार्ती में उसे देकर राम भी सामा। किर पड़ाई पर जा लेटी। सा कर नह आदमी कुद देर के लिये बाहर नता गमा। लोटा तो आंगन के जिलाड़ों में सांकल लगा जटाई पर दमती के पास जा बैटा। दमती उठ कर परे हुई नो यह उस के दारीर पर हाथ रम कर योगा— विगड़नी गमों है ? सुन नो ! अन्दा ने, मिगरेट नो भी!"

दमती ने "हट !" कह कर उस का हाथ सटक दिया और वहां से उठने लगी। आदमी ने उस का हाथ पकड़ लिया और हूंगी में गाली दे कर मनाने लगा—"पी न ! सू पीती तो है।"

दमती अपना हाथ छुड़ा कर दूसरी दीवार के पास गर्ना गयी। "कहाँ पीती हूं में सिगरेट ? "मेरे आदमी ने दी थी तो एक पी सी भी।" उस ने वेरुखी से उत्तर दिया।

वह आदमी रास्ता रोक कर सामने पड़ा हो गया और गुस्से में गानी देकर बोला—"तेरी:" इतने दिन से नुद्ये मों ही लिला रहा हूं ? उतार मेरी धोती !"

दमती उरी नहीं, अकड़ कर वोली—"पहले भेरे कपड़े दे तो मैं तेरी घोती अभी फेंके देती हूं। मैंने क्या तुझ से मांगी थी ?" वह औरत की जिद्द से यो परास्त होने के लिये तैयार न था। याती देकर उस पर प्राप्त और अपनी दी हूँ पीती जबरण होनने लगा दमनी थोनी को पकड़े अपने कराड़े मागती हुई सहने के लिये तैयार हो गई। योनी जबरदस्ती सीनी जार पर उसने आदमी के हाथों को नोना, दातों ने काटा, अपनी नोहिनयों से मारा पर बन न बता। थोती का आये ते अधिक माग आदमी के हाथ में बने जाने पर रोते हुये निर्दायका को सीध आगी तैकिन वह नहीं माना। यह निराईत औरत को सीधा कर देने पर सुत्ता हुआ था। उमने घोती शीन ती और लजना में सिंह की, मिसटीय बचती को गारी देकर उस को उसी सीन ती और लजना में सिंह की, मिसटीय बचती को गारी देकर उस को उसी

दमती देरी रोती रही। कोठरी के पुष्प अधेर में दिन का कुछ अनुमान मही हो सकड़ा था। रोते-रोते परु गई तो वैसे ही बैठ-बैठ सिसिक्षणों लेडी पछाने लगी-प्यां अनजाने परदेश चनी आई ? बहां चाहे मर ही जातो ! "वंदा वह मरी सिगरेट थी ? यहावट के मारे लगेर निवस्त हो रहा था। विद्यान तथा तो वैधे हो सकोच से सिकुड़ कर दीवार के छहारे सुदृक गई और किर सो गई।

ते यों परास्त होने के तिये तैयार म था। मानी देकर उस पर प्राप्त और अपनी से हुई पोती जबरण छोनने तथा। दमती धोनी को पकड़े अपने नगई मानती हुई तहने के निये तीयार हो गई। घोजी जबरदाती तीयों जाते पर उपने आदायों के हायों को नोता, दोतों ने कादा, अपनी नोहिनों में मारा पर बग न बता। घोजी का आपे से अधिक भाग आदामी के हाम में चंत्र जाते पर रोते हुये पिढ़ांगड़ा कर दया की भीरा मानी लेकिन वह नहीं माना। वह विगर्द को लोकों को सोचा माना। वह विगर्द को सीचा माना। वह विगर्द को सीचा कर देने पर तुमा हुआ था। उपने घोजी छोन सी और सन्ता मों शिक्ष हुड़ी, विगरती को साती देकर उस कोटरी के किलाई को बाहर से साकत सना कर चला गया।

इसनी बेडी रोती रही। कोठरी के मुण अयेरे में दिन का कुछ अनुमान मही हो सनना मा। रोत-तने पक गई तो बेंत ही बैटे-बैटे सिवानिया सेती पहुपाने तमी—क्यों अनजाने परदेश चनी आई? "बहा चाहे मर हो जाती! "क्यों बह मरी विगरेट भी? बकावट के मारे मधीर निवान हो रहा था। बैटा न गया तो बेंन हो सकीव ने सिवुड कर दीबार के सहारे सुबक गई और किर तो गई। बमती की नीद जानी तो कोठरी के किवावों की सिरियों से तिन की

दमती की नीद खुनी तो कोटरी के किवाडों की जिरियों से दिन की ज्ञालक की लकीर-सी भीनर एक रही थी। वेते ही सेटी-नेटी वह फिर अपनी पूल पर पछनाने लगी। फिर औपाई आ गई। नीद रूटी तो किवाडों की जिसियों ते वनने वाली प्रकार की लकीर चौदी और अधिक उजजबत हो नई थी लिएने के नने वाली प्रकार की लकीर चौदी और अधिक उजजबत हो नई थी लिएने की नौर आप जाने पायती रही। कभी आप बहुने तमते कभी मिसिया आने तमती । उसे प्यास लग रही थी। पाखाले-सेवाल के निर्मे याद आप तम एक जी कपाल पायती। उसे प्यास लग रही थी। पाखाले-सेवाल के निर्मे याद आप तम एक जी वम्स्ट पी हो तमते और अपने पायती। उसे पायत लग रही थी। पाखाले-सेवाल के तिये याद लगा थी। उसे पायती। उसे पायत लग रही थी। पाखाले-सेवाल के निर्मे में भीतर लीवा पर किवाड न पूले। उसने यान जिसा कि कह ऐसे ही सर आपगी। फिर टीने चगी। अब रोकर भी क्या तनना था? नह निर्मीवनी पड़ी थी। मा में आया कि काशी लगा कर जान दे है। पीती कहा थी जो भादी लगा लेती। सखाल लागा कि अब गांव से निकार पड़ के नोचे सडी होकर उनने खावनी जाने की बात सीची थी, तभी पिछोरी से फारी मंगी न नगा भी? देखते-देखते किवाडों की जिसियों से अमीन पर पढ़ने वाली प्रकार की सकीर पुंचती हो गई और किता है सीची हिस्से स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान पाया । यक कर और सी सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान पाया । यक कर और सिकार पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान सात प्रकार और सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और लिए पड़ाटोर अमेर स्थान स्थान से सकीर पुंचती हो गई और असे पड़ाटोर अमेर स्थान से सकीर पुंचती हो गई और असे स्थान से सकीर स्थान से सात से स्थान से सात से सात स्थान से सात से सात सात से स

निराश होकर उसने आहें भरना भी छोड़ दिया और मर जाने की प्रतीक्षा करने लगी। पासाना-पेशाय न कर सकने की असुविया और प्यास से उसका सिर चकरा रहा था। कोठरी के अंधेरे में कभी गाँव और कभी सड़क के दृश्य उसे सिर के चारों और घूमते दिखाई देने लगते।

किवाड़ों की जिरियों में फिर प्रकास आने लगा था पर अब उस और दमती का घ्यान नहीं गया। वह अस-बेहोश सी हो रही थी। किवाड़ों के गुनने का सदका हुआ तो वह कठिनाई से लिकुड़ कर बैठ पायी। वही आदमी भीतर आया। दमती के कपड़े उसके दारीर पर फेंक कर बोला—"उठ! जा! नटा सी कर कपड़े पटन ले!" कोठरी के किवाड़ गुने छोड़ और आंगन के किवाड़ बाहर में बरद कर वह फिर चला गया।

करीय हैं इं घण्डे बाद बर आदमी फिर लीटा तो दमती पानी पी कर, नियह और नहा-भी कर अपने पुराने कपड़े पहने दीवार से पीठ टिकाए, सिर को दोनों हाथों में भागे बैठी थी। उनकी तबीयत कुछ टिकाने आ नुकी थी। वह आदमी एक अंगीले में कुछ बाये और एक तोटे में दूध लिये था। अंगीले दमारी के सामने रस कर बीता—"ने, तेरे लिये पुरी-तरकारी बनवा लाया हैं। कुछ सा ने और यह दूध पी ने ।"

"मुझे युष्ट नहीं चाहिये।" दमको हाथ जोड़ मिड़मिडाई, "तृ मुझे पर्टी से जाने दे^{र !}"

ं जरी भाग की चित्रणि रिस्मी तुझे वया वाटा है है तू तो मू ही जिगाने एमी है। पर समापने उपा, 'दुनानदार ने तुझे छावमी पहुंचाने की अहा है। में उप पहुंचा देश । त जुड़ का तो ते हैं अहेती जायगी तो भटा जायगी । पू जिस काम के हात पट पट तो जानगी है क्या होगा है। तू कुछ जानभी तो है तही । तम पटल देश । तू पहुंच तम तो के !!"

नम् में भूकी की भी। है। सामने साना देख नह साने नमी। आदमी मेहिरी स्मृति भार कर जान के देखनाता बाद गर नमा गया। कुछ देख बाद कीरी और दर के भागि को समापति जिलाल-पिता पाना मह बना। भीरत गुरु बार मह ने दिशा ति की पान भिजानी हिंदी जाए नहीं कर है। अल्लाम नी भी की को ति मिदी कर बनेन है कान बात है मान की पान मामने भी मा को नी कि को ति कर महिने माद है जात हिंसा नी ति साथ भागाने भी मा का नी और दूब-मलाई, ब्बर्डा गाने भी मिनेगी।"

दयनी हाय जोड किर विद्याहाई-"नहीं, तू मुत पर दश मर । गुते महा में जाने दे। मैं अपनी शह बनी जाउंगी । शहदनी पहुच जाऊं, चाहे गाव सोट बार्ड ।"

"अन्या, तू हम से नाराब हो वर्द है।" उन आदमी ने समझौते के स्वर में कहा, "तो हमारे साथ न चत्र । एक दूतरा बाह्मण है; तेरी पट्टी का । यह बह जाब शाब शाबनी या रहा है, उसी के साथ धनी जाना, यस ? मैं उसे सुनावे माना हूं।" वह फिर उट बार चना । दमती को बाहर में निवादी पर

सारत तवने की आहट फिर गुनाई दी।

दमनी पक्ता गई। अब की जाने कैंग आदमी में पाना पहें है उसने आमन के रिकाहीं को सीम कर आक्रमाया । वे मुने नहीं । इधर-प्रवर देगा । आंगन को दीनार उनके निर से ऊंबी थी। बाह उड़ाने पर भी टाय दीनार के निरे तर पहुंचा । आंगन के कोने में बने पासाने की दीवार उनके गिर के बराबर ही थी । पानाने में निहानी सीवार भी तरफ नीचे तारोने वे परन्तु बहुन छोटे। वह यहां से भागने को सभी कुछ करने के नियं तीवार भी परना झरींगे बहुत ही छाँदे वे । उसे एक उपाय मुझा । उमने पानाने की शीबार के गमीप गागर भीवा कर रख दी और उस छोटी दीवार पर चढ़ गई। इस दीवार से भागन की दीवार पर पड़ी और फिर बाहर बूद गई। गली में ने तेजी से धनी, कुछ ही पदम पर काजार आ गया। यह रास्ता चलने बालों से छावनी की राह पुछने सगी।

फटे कपड़ों में अवेसी परेशान औरन को छावनी की गह पुछते देल सोग इकट्ठे हो नये । आदमियो की इकट्ठे होने देल कर पुलिस का आदमी भी पट्ट गया। दमती को धान ले जाया गया। दारोगा ने उसका नाम, गांब और थीनगर आने का कारण पूछा । दमती ने फिर अपनी सक्छी-सीधी फहानी सुनाकर, सिगरेट पीने के कारण मार कर निकास दी खाने की बान गुना दी। दारोगा इछ मुरकरामे, बीले-"नू मिगरेट पीसी है ? से ! " और उन्होंने

एक निगरेट उसकी मीर बढा दी।

"उँ हं !" दमती ने इत्यार कर दिया, "वह तो मेरै मर्द ने दी थी ।"

इस बात की तलाश गुरू हो गई कि दमती को कीन आदमी श्रीनगर साया है और वह वहा बन्द रही थी। प्रियम ने इसनी को बाजार में और कई गलियों में घुमाया परन्तु वह कुछ पहचान न सकी।

"मैं तो खुद ही आई हूं, मैं छावनी जाऊंगी।" वह जिद्द करती रही। घर से भागी औरत को अपनी मर्जी से जहां चाहे जाने नहीं दिया जा सकता था। गिरपतार औरत को थाने में रखना भी कायदे के खिलाफ था। उसे गारद की रखवाली में तुरन्त पौड़ी की जेल-हवालात में भेज देना चाहिये था परन्तु सिपाही मौजूद नहीं थे और रात होने को थी। सिपाही उसे छद्र-प्रयाग से लाने वाले बदमाश का पता चलाने के लिये कई मकानों में घुमाते रहे। उसे बार-बार प्यार से सिगरेट और मिठाई दिखाई गई। दमती कोध में मुंह फेर लेती। जोर-जब्र करने पर वह हाथापाई के लिये तैयार हो जाती। अगले दिन उसे दो सिपाहियों की रखवाली में पौड़ी पहुंचा दिया गया।

मिजिस्ट्रेट के सामने पेश की जाने पर उसने फिर अपनी सच्ची कहानी सुना कर कहा कि वह घर नहीं लौटेगी। अपने मर्द के पास छावनी जायगी। उसे समझाया गया कि उसे यों भाग कर नहीं जाने दिया जायगा। वह अपने मर्द को ढूंढ नहीं पायेगी। सरकार वजदत को वहीं बुलवा कर, उसे उसके मर्द के हवाले कर देगी। तब तक उसे जेल के हवालात में रहना पड़ेगा।

दमती वजदत का सिपाही-नम्बर और कम्पनी-नम्बर वता नहीं सकी इसिलिये ज्योला पट्टी, कनार गांव के सिपाही बजदत की तलाश करने में कुछ समय लग गया। इस बीच बजदत के वाप ने दो पोस्टकार्डों पर पूरा हाल लिखवा कर लड़के को भेज दिया था कि उसकी बहू बदचलन और आवारा हो गई है। घर से पैसा चुरा कर चट्टी से सिगरेट खरीद कर पीती है। उसने घर का जेवर भी चुरा कर वेच दिया है। पास-पड़ोस में 'लसिपटाई' (कलंक का टीका) हो गई है। अब सड़क पर किसी मुसाफिर के साथ भाग गई है। पत्र में प्रौढ़ पिता ने युवा पुत्र को आश्वासन दिया था—तू जी छोटा मत करना। ऐसी बहू का क्या? हम वातचीत कर रहे हैं, तू इस बार छुट्टी पर आयेगा तो व्याह कर देंगे।

वजदत को जब कचहरी का कागज मिला कि पौड़ी अदालत में आकर, अपनी बहू को पहचान कर उसकी सिपुर्दगी ले ले तो उसे अपने पिता की बात पर पूरा विश्वास हो गया।

रुद्रप्रयाग में हीरामन ने मनहर पंडित की वताया था कि एक खूब जवान अल्हड़ ब्राह्मणी सास-ससुर से परेशान होकर घर से भाग आई है। उसकी दारी को सान करने के नियं उपनो क्यारे मोर पूरी-निजाई से कर मनार तिवरण को गांव सं नया था । नियत्य को पर व या कर यह ना नेत्र उन्न सा । उनो काबार में सानी की गांव प्रस्ती, भागी हुई भीरन के पुरिय हारा नक्क कर माने ने जाये जाने की नावर नुती । उपना साथा उत्ता । साने कट्टे नर सानर याने देगा समारी गायव थी। वापाने की वीसार के पान भीयों साम विशेष के यह नमाम गाया हिंदानी वीसार पाँव कर आग गाई भीय क्या नियाय के राम में है।

सतर्र साने अग्मी दचने यो गाभी ये बार देने के जिते नैयार म था।
पुलिस का उमे कोई हर नहीं था। उम्हें यह बोका पहने पर परा सकता था।
उमें बोध आया शिमसन पर। उमने ममसा कि यह मौदिया परते पासवात है। पुलिस को करमा देनर किर शिमसन के पास जायामी और यह हमें कर विचार माने समा या था। बान तीय कर विचार माने वाले माने वाले यो था। बान तीय कर विचार परते समने दायो मान वाल था। बान तीय कर वार यो देनरे तम से कर वाल पर वाले तम से का वाल था। यो नीय कर करना परते समने तम से का वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था। यो नीय कर करना परता वाल सा वाल था।

वेनेता। हभी वह वाइयां दगने साने वामा मान गया था। वान गीन कर उपने तम में वहा-भागा बेटा, भागा में यह घोगा। में नेशी वह गदर मृत्ता कि ग्रही वा दूप याव भा जाये। वेगी, गह औरन जाती वहां है। वह अनुभवी भारती था। वस्मी की जिह की मान में उपने यह मी सोचा कि स्वार बेगी रिनी सी इनती हाथ-हुन्या वर्गी करती? विरु भी दोचा वाम कि होगामन के मही मीडनी हैं या अपने आदमी के यहां नाती हैं!

मनहर ने दमनों के पोड़ी भेन दिये जाने को बान पुती तो वह भी उन पर नजर रानने के लिये पोड़ी गुट्टैंगा। जिस रोज सबदन और दसती अदानत के मामने पार रेवेंग सने, मनहर अदानत में बीजूद था। दोनों को एक-दूनारे को गहमने पार केंग्र सनहर को पुत्त निस्मय हुआ। मामने को सन्न तक देगाने को गहमानने देन सनहर को पुत्त निस्मय हुआ। मामने को सन्न तक देगाने कई गलियों में घुमाया परन्तु वह कुछ पहचान न सकी।

"मैं तो खुद ही आई हूं, मैं छावनी जाऊंगी।" वह जिद्द करती रही। घर से भागी औरत को अपनी मर्जी से जहां चाहे जाने नहीं दिया जा सकता था। गिरफ्तार औरत को थाने में रखना भी कायदे के खिलाफ था। उसे गारद की रखवाली में तुरन्त पौड़ी की जेल-हवालात में भेज देना चाहिये था परन्तु सिपाही मौजूद नहीं थे और रात होने को थी। सिपाही उसे रुद्र-प्रयाग से लाने वाले बदमाश का पता चलाने के लिये कई मकानों में घुमाते रहे। उसे बार-बार प्यार से सिगरेट और मिठाई दिखाई गई। दमती कोध

मजिस्ट्रेंट के सामने पेश की जाने पर उसने फिर अपनी सच्ची कहानी सुना कर कहा कि वह घर नहीं लौटेगी। अपने मर्द के पास छावनी जायगी। उसे समझाया गया कि उसे यों भाग कर नहीं जाने दिया जायगा। वह अपने मर्द को ढूंढ नहीं पायेगी। सरकार बजदत को वहीं वुलवा कर, उसे उसके मर्द के हवाले कर देगी। तब तक उसे जेल के हवालात में रहना पड़ेगा।

में मुंह फेर लेती। जोर-जन्न करने पर वह हाथापाई के लिये तैयार हो जाती। अगले दिन उसे दो सिपाहियों की रखवाली में पौड़ी पहुंचा दिया गया।

दमती बजदत का सिपाही-नम्बर और कम्पनी-नम्बर बता नहीं सकी इसिलिये ज्योला पट्टी, कनार गांव के सिपाही बजदत की तलाश करने में कुछ समय लग गया। इस बीच बजदत के बाप ने दो पोस्टकार्डों पर पूरा हाल लिखवा कर लड़के को भेज दिया था कि उसकी बहू बदचलन और आवारा हो गई है। घर से पैसा चुरा कर चट्टी से सिगरेट खरीद कर पीती है। उसने घर का जेवर भी चुरा कर वेच दिया है। पास-पड़ोस में 'लसपिटाई' (कलंक का टीका) हो गई है। अब सड़क पर किसी मुसाफिर के साथ भाग गई है। पत्र में प्रौढ़ पिता ने युवा पुत्र को आश्वासन दिया था—तू जी छोटा मत करना। ऐसी बहू का क्या ? हम बातचीत कर रहे हैं, तू इस बार छुट्टी पर आयेगा तो ब्याह कर देंगे।

वजदत को जब कचहरी का कागज मिला कि पौड़ी अदालत में आकर, अपनी बहू को पहचान कर उसकी सिपुर्दगी ले ले तो उसे अपने पिता की बात पर पूरा विश्वास हो गया।

रुद्रप्रयाग में हीरामन ने मनहर पंडित को बताया था कि एक खूव जवान अरुहड़ ब्राह्मणी सास-ससुर से परेशान होकर घर से भाग आई है। उसकी दुरान पर बैटी है। यनहर ने दमती की हीरामन ने अस्ती रुपये में वरीद निया। उसका शयाल था कि गडकी को महीना-पन्द्रह दिन श्रीनगर मे रगेगा। बुद्ध दिन तकरीह रहेगी। इस बीच नौडिया दुनिया का दव समज जायगी तो उमें देम ने जाकर बार-पाच सौ में वैच डालेगा। मनहर ने इस तरह जाने किननी औरलें पार कर दी थी परन्तु थीनगर में दमती की जिह के आगे मुंह की गा कर उमे अपनी भूल समझ में आई। जनने समझा कि यह उनावली कर गया । स्रोडिया उममे विमङ् वैठी है । अन जनके हरवे मुस्किन मे घडेगी । इम झंझट में समय बरबाद करने से कुछ लाम न देल, मनहर ने सीवा कि महती को श्रीनगर में ही शिवदल के हाथ डेंड-दो ती में वेच दे।

दमती को साम्न करने के लिये उसको कपड़े और पूरी-मिठाई दे कर मनहर शिवदल की थोज में गया था । शिवदल को घर न पा कर वह सीट रहा था। उसने बाजार में छावनी की राह पूछती, भागी हुई औरत के पुलिस हारा परुष्ट कर माने ले जाये जाने की सबर मुनी। उसका माथा उनका। अपने बड़े पर जाकर उसने देखा दमती गायब थी। पारमाने की दीवार के वास बाँधी गागर पड़ी देख कर वह समझ गया कि दमती दीवार फाद कर भाग गई और अब पुलिस के हाथ में हैं।

मनहर अपने अस्मी रुपये भी पानी में बहा देने के लिये तैयार न था। पुलिस का उसे कोई डर नहीं था। उन्हें वह भौका पड़ने पर पटा सकता था। उमे त्रोप आया हीरामन पर । उसने समझा कि यह गोंबिया पक्की चालबाज है। पुलिस को चकमा देकर फिर हीरामन के पास जायगी और वह इसे फिर वेचेया । तभी वह काड्या इतने सस्ते वामो मान गया था । बांत पीस कर उसने मन में नहा-अध्दा बंटा, आपस में यह धीला। में तेरी बह सबर लगा कि छटी का दूध याद आ जाये ! देखूँ, यह औरत जाती कहा है ? यह अनुभवी आदमी था । दमनी की जिह की बात से उसने यह भी सोचा कि अगर वैसी होती तो इननी हाम-हत्या क्यो करती ? फिर भी देखा जाय कि होरामन के यहा लौटती है या अपने आदमी के यहां जाती है !

भनहर ने दमती के पौड़ी भेज दिये जाने की बात सुनी तो वह भी उस पर नजर रलने के लिये पौड़ी पहुँचा । जिस रोज वजदल और दमती बदालत के सामने पैक किये गये, मनहर अदानत में मौजूद था। दोनों को एक-दूसरे को पहचानते देख मनहर को कुछ विस्मय हुआ। मामले को अन्त तक देखने के लिये वह धैर्य से प्रतीक्षा करता रहा। वजदत ने अदालत में दमती को अपनी वह तो मान लिया परन्तु जब अदालत ने हुकुम दिया कि औरत वजदत को सौंप दी जाय तो उसने दमती को ले जाने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि घर से भागी हुई, वदचलन औरत को वह नहीं ले जायगा।

दमती ने सुना तो एक गहरी सांस ले, दोनों हाथों से सिर थाम वजदत की ओर देखती रह गई। उसका सिर चकरा गया, आँखें मुंद गई और घरती पर बैठ गयी। दमती ने सिर उठा कर देखा, वजदत कहीं दिखाई न दिया।

अब सरकार भी दमती को जेल में जगह देने के लिये तैयार न थी। वजदत की भागी हुई औरत को बजदत की सम्पत्ति मान कर उसे सौंप देना सरकार का काम था। जब वजदत ने स्त्री पर से अपना अधिकार हटा लिया तो सरकार को भी दमती से कोई मतलब नहीं रहा। मजिस्ट्रेट ने दया कर दमती को सुझाया कि अगर वह चाहे तो अपने मर्द से अपना खर्च मांग सकती है। दमती ने इनकार में सिर हिला दिया। दमती को हुकुम हुआ—अब उसे इजाजत है, जहाँ चाहे, चली जाय! दमती की आंखों के आगे अंधेरा धा परन्तु उसे अदालत से वाहर निकलना ही पड़ा।

मनहर पंडित यह सब कांड देख रहा था। दमती पथराई हुई आंखों और अनिश्चित कदमों से अदालत से बाहर निकल ही रही थी। उसके सामने प्रश्त था कि अब वह जाय कहां ? दमती ने सुना—"कहो, कहां चली गई थी तू?"

दमती ने घूम कर देखा और मनहर को पहचान कर चुप रही।

मतहर आश्वासन के स्वर में बोला—"तू यों ही बुरा मान गई। हम नुशें परेशान थोड़े ही करना चाहते थे। तुझे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यहाँ तक आये। हमने तो तो पहले ही कह दिया था कि अब मायके, मुसराल में तेरे लिये जगह नहीं। नुझे परेशान होने की जरूरन क्या ? चल, तेरा अपना घर है!"

दमती ने क्षण भर सोचा और फिर मनहर के साथ-साथ चल दी। मनहर उमे बाजार की एक गली के मकान में ले गया और बैठने के लिये आदर ते चटाई दी। दमती दीवार मे पीठ सटा कर सिर झुकाये हुए चुपचाप बैठ गई।

"बहुत धक गई है तू ! ले, एक सिगरेट तो पी, जरा जी हस्का हो जायगा ।" मनहर ब्रिया से सिगरेट निकाल दमती के हाथ में यमाते हुए बोला ।

दमनी निर जुकाये रही पर सिगरेट थाम ली। उस की आंखों से शीसू टपक पड़े। सीचा, अब किसके दम पर, किसके निये टनकार करे?

फूल की चोरी

इस वर्ष किम बंधने में ठहुरा हूं, उस के केवन उत्तर के भाग में हो मेरा फैलात है। इस का यह करनाव नहीं कि मुखे पूटने मोड़ कर गुरुग्तर करनार पहता है। एक बड़े कपरे में तो मैं केवल मैंने हो गये कपाड़े ही रसता हूं। हूसरे में ऐसे कपड़े ही रसता हूं। हूसरे में ऐसे कपड़े ही क्रिकेट अभी व्यवसार में लाता है। यह बात भी नहीं हम पहाड़ी मगर में बगाह की कभी न हो, या मकान बेतर परे हीं, यह केवल मुग्ने वहीं बुताने वाले निर्मो का सीजम्य है। मकान मुन्ने मभी तरह में बहुत पत्रत हैं। है केवल मुग्ने वहीं बुताने वाले निर्मो का सीजम्य है। मकान मुन्ने मभी तरह में बहुत पत्रत हैं। सामने दूर तर फैली पहाड़ियों वा इप्याप्त पत्र में में कुता हैं। हम केवल मुग्ने दिशाहियों में मुन्ने सि पर्दे ही कुता हम हमें बहुत में कि केवल मान केवल में कुता कर केवल मान केवल में कि केवल में हम हों अपने हैं। इस कुता में में कि कर पत्र में हम की कि कि केवल में कि कि केवल में कि केवल में हम हों में कि कावल है। मूं की कि केवल में कि कि केवल में कि कि केवल में कि कि केवल मेव

नीचे की मिनन भं दो मह महिलायें रहती हैं। युझे इस महान में दो मास में ब्रोभक यीन गये हैं। कभी एक भी बात कुशत-संवत की निकासा मा कामका की हम पड़ीसियों ने नहीं हुई क्योंकि वे दोनों सम्मातित और सक्यित हैं और मैं भी कम सम्मातित और तक्यित नहीं हूँ। इस बीच दूते दो-दीन सार गीड़ कायत हो जाने बते पत्न बीच हम सार वाद करायाँ की मेंट सहस्य होगों ने मेंत्री हैं। इस मेंटे का अधिकांत्र मुझे दूर रहते बात प्रतास होगों ने मेंत्री हैं। इस मेंटे का अधिकांत्र मुझे दूर रहते बात प्रतास माने में सार देता पटा। अकेले पूरी बस्तु का उपमोग किया नहीं जा सहता मा

लेकिन इसी मकान में रहने वाली भद्र महिलाओं को मैंने इन भेंटों का कोई भंदा नहीं दिया। गैर पुरुषों से बात करना उन के सम्मान और सच्चरित्रता को द्योभा नहीं देता। मैं स्वयं भी इस प्रकार के व्यवहार के लिए कोई संकेत नहीं कर सकता।

कुछ ही दिन पहले अन्य परिवारों की अथवा अपरिचित स्त्रियों से व्यवहार के सम्बन्ध में एक सच्चरित्र व्यक्ति ने यह परामर्श दिया था कि हमें सभी स्त्रियों को अपनी बहन समझ लेना चाहिये। उन से कह दिया था—मुझे दुनिया भर का साला बनने का कोई शौक नहीं! हमारे देश में साला कहलाना गाली है और बहनोई कहलाना आदरसूचक। तभी से इस देश में लड़ कियों को जन्मते ही गले में अंगूठा देकर मार दिया जाता था। यो हमारी संस्कृति में स्त्रियों को देवी कहा गया है और उपदेश है कि जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता रमण करते हैं। सवाल यह है कि किसी स्त्री को बहन बनाये बिना, क्या उस के प्रति शिष्ट व्यवहार कर सकना असम्भव है ? खैर……।

सच्चरित्रता निवाहते-निवाहते एक दिन अभद्रता हो ही गई। उस घटना का कारण यह फूल ही थे। में सुवह उठ कर वराम्दे में बैठ जाता हूं। दूसरी मंजिल के बराम्दे से दूर तक का दृश्य और नीचे ताजे खिले फूल दिखाई देते रहते हैं। सामने 'सिलवर ओक' के सदावहार पेड़ों पर गुलाव के छोटे फूलों की वेलें चढ़कर शाखों से लिपट गई हैं। कल ही से गुलाव का एक गुच्छा मेरे बैठने की जगह के ठीक सामने खिल गया है। वह गुच्छा सुवह ओस से भीगा हुआ वहुत ही सुन्दर लग रहा था; जैसे पलने में किलकता हुआ वच्चा।

नीचे की मंजिल में रहने वाली भद्र महिलायें पूजा भी करती हैं। नित्य प्रातः मैं उन्हें कुछ मंत्र या भजन गुनगुनाते हुये, पूजा के लिये अपने हाथ से फूल चुनते देखता हूं। भगवान के प्रति आदर से या भगवान की प्रसन्नता के विचार से बढ़िया से बढ़िया फूल पूजा के नैवेद्य में रखना उचित है। भद्र महिला ने कुछ ताजे फूल चुन कर गुलाब के गुच्छे की ओर हाथ बढ़ाया।

"इसे रहने दीजिये!" सहसा मेरे मुंह से निकल गया। मैं उन फूलों को संतोष की वेखबरी में देख रहा था। सदाचार की सावधानी जागरित नहीं थी।

उन्होंने दृष्टि ऊपर बरामदे की ओर की। भनें सिकुड़ गयीं थीं और स्पोरियां चढ़ गयी थीं—"पूजा के लिये हैं!"

"होगा; ----- भगवान कौन बन्ता है जो कूलों से बहनेगा !" कहना ही पदा क्योंकि बात गुरू हो गई थी ।

भड़ महिला होट निकोड़ अपने गम्माल की रहा के निए मेरी दृष्टि के सामने से हट गई। ज्यात आया, युव दूसरो के कूनों के सम्बन्ध में योजने माले कोत हो? पराई सम्बन्ध को तो निही समाना चाहिये और एक स्वर्णरिवन भड़ मुख्ती से जुन की बस्तु के मम्बन्ध में बात करना ! धीर, अब तो हो ही चुनता था।

स्पान्ट में बैठा मुन्दर दूश्य के साथ ही एक और भी भीज देशा कराजा है। इसी ममय एक ड्रांटी भी सकती, स्वाम ए न्यात वर्ष जी, हाय में ड्रांटा सा दोना निम्, देव योव दुवनती हुई जाई; जीक्यों ठीक बैते ही जेते गृहणी के रमोदें से चूले गमय विल्सी बरान-मांहों के पीछे दुवक-दुवन कर, पूर्णी मी जोर नजरें समाये, देव गांव चलती है। वंगले की सुत्वाची में कदम रस तह तह तह तह ते सा की पनी साली की पीछे हो गर्वन वहा कर देपते हैं कि प्रक्र महिलाये बरान्दे में या दरवाले से देश तो गर्वन वहा कर देपते हैं कि प्रक्र महिलाये बरान्दे में या दरवाले से देश तो गर्वन वहा कर देपते हैं कि प्रक्र महिलाये बरान्दे में या दरवाले से देश तो गर्वन हैं। अवस्य देश कर, यह पंजी वर सो कदम सपक कर इतिया के पीछे से पीछे हो जाती है। इसी तह वह कुत्वाड़ी के दूसरे छोर तह जा वर्ष्ट्रवी है। उम की गतिबाध बहुत परके, चतुर चोर की तरह होती है, जो जम के छोटे परित कीर भीम बेहुरे पर मान्नारंजक जान पहती है। वह जातारी है कि चौरी करती पकड़ी जाते तर उस सा कर पुक्त पता हो हो के कररान यह चुने जाते के कर पर पुक्ताता इता है। कर छोटा होने के करण वह चुने जाते के कर पर पुक्त पाती।

बहु सड़की सम्भवत इस वर्गन के बाई और, बहुन समोप बाजार के दूमजिले-निम्मिन के कानों की निमी कोठरी से आती है। इस महानों को प्रारंक मिजन की कोठरियों में कई-कई परिवार भरे हुए है। उन महानों के पूर्व-कुम्बाडों का व्यवस्य कहा ? लेकिन भगवान की पूर्वा के तिये फूल से पहिले कुम्बाडों का व्यवस्य कहा ? लेकिन भगवान की पूर्वा करते है। अपनी पूजा के निये भगवान ने उन्हें कोई मुचिया गही है। इस बच्चों को भगवान की मुझा के निए निस्य चोरी करनी गहती है। इस बोरी के पास अधिक सोक्स होगा या पूजा का पुष्प ? पट-पट-वागी मगवान से अपनी पूजा के निए इस बच्चों का जोशिय उठाना और चोरी करना दोनों हो देसते हैं। इस बच्चों का स्वारं हो स्वरं है। इस बच्चों की घबराहट और चौकमी देख कर जान पड़ता है कि इस फुलबाड़ी ने फूल तोड़ कर ले जाना इसके लिये उत्तना ही शंकास्पद है जितना कि हनुमान जो के लिये लंका की अशोक बाटिका में चोरी से छिप कर जाना और सीताजी के मामने राम की अंगुड़ी फेंक देना था।

भगवान को भन्त-बरसलना की अनेक कहानियां मुनी है। वैसी घटना देएले का कोई अवसर नहीं हुआ। इस भिन्न की भावना क्या भगवान नहीं जानते? उन्हीं के चरणों में अपण करने के लिये दो फूल पाने का भी अवसर इसे नहीं! भगवान पूजा की आया तो सबसे रसते हैं परन्तु पूजा के साधन और अपगर किसी-किसी को ही देते हैं। भाव लीग कहते हैं कि भगवान हाथी से यदि गर्म भर की आया रसते हैं तो चीटी से कण भर पाकर ही तृष्य हो जाते हैं परन्तु करोड़ों इन्यान तो ऐसे हैं जो कण भर अपण करने का भी अवसर नहीं पानकते। भगवान यदि भावना से ही प्रसन्न हो जाते हैं तो बिड़ला जैंगे लीग क्या मूर्य है जो भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए प्रवास ताम रपदा स्वास स्वेत अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए प्रवास ताम रपदा स्वास सूर्य करके मिदर बनवाते हैं? क्या उनका भगवान के प्रति ऐसी भित्र दिगाना मूर्य तो ही है? बिइना और बिड़ला समाज के लोग यदि इतने ही मूर्य होने तो इस समार के द्यासन की बासडोर उनके हाथ में नहीं, भावना से भगवान या भवन करने वाले साथनतीनों के तथ से होती।

रेरेन; इस पृत्त नुनने बाली लड़की की बात है यह बहुत बेवर्थी से पृत्त सिंहर्स है बसीर इसे पुत्रवाली के बेरोनक हो जाने की कोई बिन्हा नहीं। पृत्र क्षेत्र का बावदा यह है कि जिस दात में तीन पृत्र हो, एक ने नीनिये। साम तीर पर बोटो के पृत्र या बैटने की जगह से दिखाई देने बाले पृत्र नहीं पृत्र वालीर पर बोटो के पृत्र या बैटने को जगह से दिखाई देने बाले पृत्र नहीं पृत्र वालीर विकार दाता है। इसे पृत्र की तिर पृत्र वालीर । दुनवाली को कालावी हो, आज जगह जाने । में वित्र पृत्र की तिर पृत्र वालीर । दुनवाली का प्राप्त की तिर पृत्र वालीर वालीर पृत्र वालीर । पृत्र वालीर वालीर वालीर वालीर पृत्र की वालीर वालीर वालीर वाली वालीर वाली की तरह पृत्र है। जनकालीर की मुनाव जाने का पृत्र अपने के प्राप्त की को का प्राप्त की वालीर व

दो-चार करनर भी न्यंग नवते हैं। भन्ना यह है कि समान को उनारने वार्न क्यारतरे और व्यवनायी को ऐसा कोई मय नहीं क्योंनि समान की कुतवारी में भोरों को पाइने और उनके कान उपेटने का अधिकार इन सीमों में आने हाथ में कर निया है।!

हाथ म कर तथा ह । ।

इस सहने भी फूनों की चोरी पन ही जाने पर इसके पिन्ने की आसंका

में मुंसे दूस होगा है इसनिष्म में इसकी चोरी पर ही-हत्सा न भया कर मुक
सहयार देता हू । चोरी में इस प्रकार सहयोग देता अनीनकता है । इस अमैपिक्त के किय में सकता अनुभव नहीं करणा । मुख देंगे अनीमिक काम है
जिनके निष्यं पुर रहना भागा सम्मा निया गया है। बदाहरणत सरकार मा
अाप ऐसे चोरों के विषद्ध कोई चेतावती नहीं देते । में भी इस सकती की फून
की चोरों के विषद्ध चेतावती जी पुकार उठाने के अवस्य सामुत्रभूति से आसका
ही अनुभव करसा है कि कही सह पक्की न जाय ! इसकी चोरी मेरे लिए मत
बहात वा सामन है परना इसनी चोरी के वहता ही हत नहीं सहसी
हाता सामन है परना इसनी चोरी के वहती की लायरी ?

बदाल आमा, बचा इसकी फून की चोरी में मूक सहती हता स्वित है ?

क्याल लागा, बचा इनका पून का बांचा में मूर्क वहदोग देवा चिरत है ? बंगीर बगा है? आवस्तक पदार्थी को प्रायत करने का अनुस्तित हंग हो बोरी है। आज यह नेवन पून बुधारी है। वसके के छोटे वसीके में ऐड़ भी है। अभी उनमें फलों के छोटे-छोटे बाते आ रहे हैं। छुछ दिन बाद यह फल गदरा आवेंग। उस समय यह लड़की चटनी बनाने के लिए इन फलों को बुदायेगी। आज हमें पूना के लिये फूलों की आवस्तकना है, कर्ज चटनों के लिये अनार-दोने और अनुके की आवस्तक्वता होगी। अवस्तरात्ता या दो अनुके देते-जो पैंग मे बाजार से दारीकों वाने का प्रस्त होगा और यह स्वाभाविक विचार मो होगा कि दो-डो करके जो पीत वसी, उनते वह पृथ्वित सर्पेट सर्का या एक घोती, विज्ञानी उसे बहुत जरूरत होगी। अपर बहरत होगी। उसका राग और बेहरा साफ और व्यादा होने पर भी क्यड़े मैंने और पुरत्ने रहते हैं।

कृत और फन मुचने की आवश्यकता से चोरों के प्रति उपका सकोच दूर हो जायगा। कभी आवश्यकता से पीड़िस होने पर और साहस बढ़ने पर बह कपड़े या जेवरों पर भी हाग साफ कर सकेगी। उस अवस्था में भैं, दूगरे सोग और सागन व्यवस्था मुस्तरा कर इसे माफ नहीं कर देंगे।

इस हमकड़ी पहन कर न्याय के निये अदालत में खडे होता पड़ेगा!

इसके उस भावी दुर्भाग्य का आरंभ आज फूल की चीरी से हो रहा है। भगवान को पूजा से सन्तुष्ट करने के लिए फूल की चीरी से परन्तु तब क्या भगवान यह सोचेंगे कि चोरी के प्रति इसकी प्रवृत्ति किस कारण से, किस अवस्था में हुई थी? इस वेचारी से और इसके मां-वाप से पूजा की आशा कर भगवान ने इन्हें पूजा के लिए फूल नहीं दिए हैं। ""भगवान, तुम भलाई की आशा तो सभी से करते हो परन्तु भले बनने का अवसर कितने कम लोगों को देते हो!

अनुभव की पुस्तक

परिचय प्राय: काम देता है परन्तु कभी पहिचाने न जाने ने ही गुनिया हो जाती है। अलगोडा ने लोहामाट जा रहा था। यहा सफर के दो हो सरीके हैं, पैदल बसी या भोडे पर। असीन और पानील जानवर बस्ते निराये में मिल प्राया हमत्तिमे पचारी कर ली थी। नपड़े चैते न जान पड़ें उमतिये सफर मे प्राय: माबी कभीज, पत्तनुत और पूप से जवाब के लिये हैंट बहुनता हूं।

सहक पर बनचीकी की दुरुगों से एक मीन आगे बढ़ गया था। चढ़ाई करों है और बार-बार मोह आने हैं। एक मीन पर में भूमा तो सड़क किनारे पने पांगर की ठड़ी छान किसार है। छान में दनती आयु की एक प्रीवा और की पांगर की ठड़ी छान किसार है। छान में दनती आयु की एक प्रीवा और की पांगर हाम पर हो की लोग ना एक मर्बे भी वसीन पर ही बैठे दिलाई दिये। जान पड़ता था, दोगों राह बनवे-चलते ठड़ी छान देख कर विमाम के विसे बैठ गये हैं और सविता रहे हैं।

मेरी सवारों के घोड़े की टाप मुन कर ब्रीझ ने बांगो की घूप से बचाने के सिये हाम में मंत्रों पर हांव कर मेरी और देना और जैने पहुचान कर दुएन उठ क्की हुई। जमीन पर ही बैठ जाने में उनके नहेंगे पर मूली पत्तियां और पाग विपन गई थी, उन्हें साह कर सहक पर आये बढ़ आई। उसमें दो कम पीपे-मीदे उसके सम्मेण बैठा मंदे भी था। इन लोगों की अपनी और साते देन कर घोड़ा पीफ निमा।

"जंट श्रीब की महाराज (क्या महाराज मजिन्ट्रेट साहब है ?) ?" बुडिया नै श्रीनो हाथ नमस्वार के लिये उठा लिये ।

"ऊं हूँ" मिर हिसाकर फैंने इत्तार किया और अनमोड़ियों की पहाड़ी बोनों में पूछा, "क्यों ? क्या जट साहिक आने क्षेत्र है ?"

बुद्धिया ने एक लम्बा साम श्लोहा सानों विर पर था पहुँची विपदा टल

गई हो और उसने जंट साहिव से वात करने के लिये फेफड़ों में संचय किये साहस को अभी अनावश्यक वोझ समझ कर उससे छुट्टी पा ली हो। प्रीड़ा ने घूम कर सान्त्वना से अपने साथी की ओर देखा और दोनों हाथ शिधितता ने अपनी कमर पर टिका कर अपनी भाषा में मुझे सम्बोधन किया—"तो आप कि कौन हैं ? ... हैं तो कोई वड़े ही आदमी ! "

"यह तो शहर के वड़े वकील होंगे !" मेरे कुछ उत्तर दे सकने से पहिन

ही उसके साथी प्रीढ़ ने अपना अनुमान प्रकट कर दिया।

"अच्छा !" प्रौढ़ा ने ठोढ़ी पर उंगुली रख, फिर घूम कर अपने नि की ओर देखा और बोली, "तो फिर ऐसे बड़े आदमी ही तो मुसीवत में 👯 मदद कर सकते हैं "क्यों भाई ? "नहीं क्या ?"

"हां, और क्या !" उसके साथी ने विज्ञता से समर्थन किया।

"क्यों, क्या हो गया ?" मैने सहानुभूति से पूछा ।

"कुछ नहीं हो गया महाराज!" गहरी सांस लेकर कुछ न छिपाने के भाव से दोनों हाथ पसार कर प्रौढ़ा ने उत्तर दिया, "होना क्या था ?" कुछ भी नहीं हो गया और फिर हो ही गया समझो ! अरे, यही जो होता रहता है। होता तो रहता ही है। लोग तो बात का बतंगड़ बना देते हैं। अब स्था है ? ... वैसे हुआ तो कुछ भी नहीं, पागलपन है और क्या ! "

"क्यों, क्या परेशानी है ?" प्रीढ़ा के संकोच और झिझक के कारण कीतृहत

से मैंने अपना प्रश्न दोहराया ।

"अरे महाराज, परेशानी क्या ?" प्रौढ़ा ने भारी उत्तरदायित्व से उत्तर दिया, "परेशानी की बात क्या थी ? पर परेशानी हो ही गई न ? "बात हैं कुछ भी नहीं थी, पर बात बन ही गई! मोती ढोलिया की बहू है न, हन बहादुर ढोलिया अपने यहां ले गया। इतनी सी बात थी। उसकी रपट हो गई। अब कटेगी न सारे गांव की नाक !फजीहत के सिवाय क्या होगा ? झगें में सब लोग बंधे-बंधे फिरेंगे।"

दोनों हाथ उठा कर प्रौड़ा ने समझाया—"वात तो सरकार इतनी ही हैं पर यह काम क्या इस तरह होते हैं ? महाराज, होता तो यही है कही नहीं होता ? राजमहल ने लेकर झोंगड़ी तक में यही होता है परन्तु महारा सब बातों का एक दंग तो होना चाहिये न !सभी यह करते हैं। ...किनी नहीं किया ? क्या अपने वक्त में हमने नहीं किया या तुमने नहीं किया ? पर एक वंत होता है न !" प्रोडा विस्तान ने भेरी जांकों मे देवती हुई कहती नाई, "महाराज, मदें का नया है? यह तो और है, प्रीरा उडता हो फिरमा है। बोरत हो है जो कृत को तपह लुती-नियों बेडी रहती है और उने तुमाती है। महाराज, भौरा जुना-निजा कृत देवेगा नो अध्येगा हो। उपनेंत नया सत ? यह दंग तो बोरत को जाना चाहिले कि कैसे और बना करना है! महाराज, इननी उनर हो गई, क्या नहीं दिना ? " "बया नहीं देवा? एर यह दंग होता है औरत का कि तब हो जाय और दिन्ती को कानी-कान सबर भीन हो?

"अब देखों न इन सोगों का फूहरूव " " मांव मर की फरीहत होगी कि नहीं ? बादभी कोई बानबर तो है नहीं कि मींग दिया कर या पूरों कर रूप देगा ? आदभी को तो आदभी के निये कगह छोड़कर चतना पहना है न महाराज " अब देशों, एक की हैंकडी और फूहरूवन और सब भी फरीहत ! देखा, उस मोती डोलिया का पागवनन ! " पानवनन नहीं तो बोर नया है ? सफ्कार्ट की उनर है न ? असे आदमी, नुसे बानबी का पानों मीठा सगता है तो अवसी मर-अर फर डग थे पानी थी कि बानबी की ही वस्ते में बांग कर ने सारेगा ? उस में न बावड़ी की सोगा, न देरी अपनी !"

प्रौड़ा की बान में आरम्भ में हसी की एक गुरमुरी यन में उठी थी। तब

लपना कीतूहल पूरा कर सकने के लिये होंठ दवा कर अफसराना गम्भीरता से हंसी को छिपा लिया था। उसकी बात पूरी होने पर अपने दिल में उठी हंगी की गुदगुदी के प्रति लज्जा और ग्लानि अनुभव होने लगी। प्रौड़ा ने भलमत-साहत की कसीटी ही ऐसी रख दी थी कि किसी की लज्जा और अमुविधा पर हंगने संकोच हआ।

प्रीहा के प्रति सहानुभूति प्रकटकर, घोड़े को ऐड़ लगाकर आगे बढ़ गया और सोचने लगा—समाज शास्त्रियों ने लिखा है कि 'सरकार एक अनिवार्य व्याधि है (Government is a neccessary evil) । इस सत्य को इस प्रीश में अधिक कौन 'समाजवादी' या 'अराजवादी (Anarchist)' अनुभव करेगा ? "समाजवादी और अराजवादी केवल छगी हुई पुस्तकों पढ़ते हैं और यह प्रोश अनुभव की प्रतक …!

पांव तले की डाल

बजनन्दन सम्बन्ध से बकानत पास करके अपने जिले में प्रेरिटस करने समा था। पिता की ज्यो-ज्यामं प्रेरिटस थी। मन्दन ने उसे सम्भात लिया। बाहु स्वतन्त्र जाता तो निश्चत रूप ते पुराने सहमाठी डाक्टर विहासीमात मानु के यहाँ ही टहरता। यूनिवर्सिटी में सहमाठी तो वे केवल हो ही वर्ष रहे में सिकन तासनक में दोनो अनस-जनम अर्थान् विटारी डाक्टरी के कालेन में या और बजनन्दन युनिवर्सिटी में कालतन की पदाई कर रहा था तब भी मोर्गों की गहरी जगनी थी। अब भी दोनो मिनते तो वही 'अर्थ-सर्थ' और पूर-सहाक' ते बात होनी। सहक्त्यन में क्लिये अर्थन पुरुपों और कुनमों की याद कर बुत जोर से 'हो-हों' कर हैंगते। इस सीव पट गयी कोई और घटना या विनोद की रहसपूर्ण बात याद आ जाती तो बह भी अपपाप में मुना दातते। गर्दी या संत्री कर दोनों के धीच अभी तक नहीं आया था।

उस बार बजनवन अपने घहर के पित्र और बड़े हेनेबार मुर्वोगान्त निस्तर बाबू के असामनी काम से सकतऊ यथा तो होटस में ट्रा । निस्त में कुछ दिन पहले ही बात चक्की हो चुकी थी-अब की ऐसी! निस्त ने बजनवन का हाथ बजा कर विस्तान दिनाया था।

नितान से बजनन्दन भी मिजना चिदने हैं। बरण नैनीनाल को बिज पाटियों में हुई थी। एक ही जिने के होनर भी वे पुराने परिस्ता और सरू-पाटी मंदी थे। नितान की जिले ने बेट्स में मध्येतारी है। वह स्वाहास प पड़ा था। नितान ने बजनन्दन के निये होटल में पहुंते हो हो एक कमा ठीक कर निवा था। वह कमरा होटल के बादिन को में, दूसरी मंजिन पर एक भीर था। दूसरे मुनाधियों के दूषर आने-जाने और रूपन देने की सम्मानना मही थी। ब्रजनन्दन संध्या समय वाजार से लौटा तो सीढ़ियाँ चढ़ते समय चाल में उचक-सी थी। उमंग और उत्साह उमड़ कर उसके होठों से सीटी के रूप में निकल रहे थे। वह कोई लय गुनगुना रहा था। दरवाजे के सामने पहुंचने से पहिले ही हाथों ने पतलून की जेव से ताले की चावी निकाल ली। कमरा खोल कर बाजार से खरीदे सामान का बंडल बगल में दवाये ही उसने बटन दवा, बिजली जला कर कलाई की घड़ी पर नजर डाली। अपनी समय पावन्दी की तारीफ में उसके मुंह से निकल गया—'साढ़े आठ! ''राइट! बिहारी ने साढ़े आठ सक पहुंचने के लिए कहा था।'

'खट खट!' दरवाजे पर लटके हुए भारी पर्दे के पीछे से किवाड़ों पर उंगली की ठोकर की धीमी आहट सुनायी दी।

"ओ गुड ! जस्ट इन टाइम ! कम इन (वाह, कैसे ठीक टाइम पर आये) डाक्टर !" व्रजनन्दन ने आल्हाद से पुकारा और बगल में दवा बंडल पलंगपोश से ढंके विस्तर पर पटक वह प्रत्याशित मित्र से लिपट जाने के लिये दरवाजे की ओर लपका ।

पर्दे के पीछे से प्रकट हुआ होटल का बैरा। व्रजनन्दन ठिठक गया और प्रकारमक दृष्टि से बैरे की ओर देखा।

वैरे ने साहव की झेंप को एक हल्के सलाम से ढक कर, हाथ में थमी वांस की टोकरी से एक मोहर बन्द बोतल निकाली और कोने की मेज पर रख दी। बोतल की रसीद को बचे हुये दामों के नीचे दवा दिया।

"हुजूर, कुछ और आयगा ?" वैरे ने हक्म माँगा।

"हूं" विचार के लिए व्रजनन्दन ने होंठ काटा, "हां, सोडा गिलास "दो गिलास और दो सोडा।" आंख झपक व्रजनन्दन ने कुछ सोचा और प्रश्न किया, "हमारे लिये किसी साहव ने फोन किया था ?"

"हुजूर, अभी तक तो कोई फोन नही आया।"

"फोन आये तो खबर देना । अभी दो सोडा लाओ !"

"हुजूर, खाना किस वक्त लेगे ?"

"हम वता देंगे । तुम जरा नजदीक रहना ।"

"हुजूर, बहुत अच्छा ! हुजूर घन्टी बजायेंगे तो मैं फौरन सलाम करूंगा।" वैरा सलाम कर बाहर चला गया तो ब्रजनन्दन ने मेज पर से बोतल उठाकर उस का लेवल देखा और होंठ सिकोड़ लिये। बोतल को मेज पर रख दिया। बह पत्तम पर पड़े बंडल की और पूमा। वडल में से एक सूव उजली बोतल निकालकर इस बोतल के संबल को बीक से देखा और पहती बोतल के समीप ही मेज पर दिया | बण्डल की धेप चीजों का बह वायी दीवार के साम सड़ी आलमारी में सहेजने लगा। आलमारी के पत्ले मृंदते-मृदते दिठका और पत्ले किर कोलकर सामान में से पमुंह के केम में बन्द पिसील निकास तिया और आलमारी को बन्द कर दिया।

इजनस्वन ने विजयी की बसी के नीचे बा, मुल से धीमें सीटी देते हुए केस में से पिस्तीन निकाला और ध्यान से देलने के लिए उत्तर उठाया। उसी समय बाहर बरामदे में दरवाने के सामने कदमी की आहट हयी।

"यस ?" पिस्तील यामे हाथ को मीचे कर श्रजनव्दत ने पूछा, "कौन?"

"कौन ?" उत्तर में प्रधन को बोहाकार वद को झटके से हटाते हुये, अवस्त-नायनामा पहले डापटर बिहारी मुस्कराता हुआ भीतर का गया, "इम हैं तुहारी तात ?" डाक्टर ने उत्तर दिया, "साले, पहचानता नहीं ! " पूछन है कीन ?"

बजनन्दन पिस्तील वालग पर पटक कर बिहारी से लिपट गया और किर कोम दिलावा—"बड़ा जिजाज हो गया है बारे ! बड़ा भारी जाक्टर बन गया है ! एक शाम के लिए हम लक्ष्यक आये हे और जगाव क्सीते है, हमारा जिन के लिसे ग्रीवियस (चढ़ते से) अधाइटोट है !"

विहारी ने कमर अकटा कर, दोनो हाम अपकन की बेबो में पसारे हुए जबाथ दिया—"शाने, निकाश हो गया है सुम्हारा ! "होटल में ठहरते हैं। "इतने में साहब बन गये ! पर पर गयों नहीं आपे ?" कोम प्रकट करने के निमें टाक्टर से स्मीरिया गढ़ा कर बुखा !

"निरे पोगे हो तुम ! फोन पर तुमसे से कहा तो था, खास बात है!" अजनन्दन ने मुस्कराकर डाक्टर का हाथ अपने हाथी में दवा लिया।

"ऐंसी कीन बात है जो होटल में होगी; घर पर नहीं हो सकती?" डाक्टर ने सन्देह प्रकट किया।

"अब बतायेंगे, उतावसे क्यो हो रहे ही ! सांस लो ! बैठो तो !" उसने डाक्टर को दोनो बाहो से पकडकर दीवार के साथ लगी सोका कुर्सी पर बैठा दिया। "हं ! ''दो-दो ?" मेज की ओर दृष्टि जाने पर डाक्टर ने बोतलों की ओर संकेत कर अत्यन्त विस्मय प्रकट किया, "यह नया हरकते हैं वेटा ? ''यह वया तैयारियां हैं ?"

दूसरी हल्की कुर्सी टाक्टर के सामने खींच कर उस पर बैठते हुए व्रजनन्दन ने उत्तर दिया—"अरे कुछ नहीं। कचहरी से लीट कर जब तुम्हें फोन किया था तो बाहर जाने से पहले बैरे को एक बोतल लाकर रखने के लिये कह गया था। नित्तन के साथ यह पिस्तील खरीदने गया था" ब्रजनन्दन ने विस्तर पर झुक पिस्तील उठाकर डाक्टर के सामने कर दिया और कहता गया, "उस से कहा, तुम्हारे यहां लखनऊ आये हैं एक 'स्काच' दिलवाओ। हमारे यहां तो भैया यह सब सुपना है, एक लेते जांय। भैया, उस का तो बहुत रसूख है। साले ने झट दिलादी। अब तुम्हारे लिये दोनों हाजिर हैं।"

"साले, तुम नित्तन के साथ स्काच हूँ हुने के लिये वाजार घूम सकते थे; हमारे यहां नहीं आ सकते थे ? "हटो, हम तुम से बात करना नहीं मांगता। कमबस्त, हम तो तेरे लिये दावत छोड़ कर आये हैं। उस वेचारे ने सात दिन पहले से कह रक्खा था। सौ वहाने कर, एक अर्जेण्ट केस बता, वस एक पेग लेकर उठ आया हूं और तुम्हारे यह मिजाज हैं कि लखनऊ के वाजारों में घूमो और हमारे वहां आकर सलाम न करो ! हटो, हम अभी जाते हैं" डाक्टर ने असंतीष प्रकट करने के लिये उठने की तैयारी में कुर्सी की वाहों पर हाथ रहे।

"नहीं नहीं, यार!" व्रजनन्दन ने डाक्टर को मनाने के लिए उसके घुटनों पर हाथ टेक लिये, "मेरी भी तो सुन! जानता है, ग्यारह बजे तो गाड़ी पहुँचती है। हजामत-वजामत सब गाड़ी में की। यहां विस्तर पटक कर कपड़े वदले तब कचहरी पहुँचा। उन सीनियर वकील को सब मामला समझाया। तीन बजे केस शुरू हुआ। पाँच बजे लौटते ही पहले तुझे फोन किया; तेरी कसम! नित्तन से मिलना तो जरूरी था। उस से चेक जो लेना था और यह पिस्तौल खरीदना था।" व्यजनन्दन ने पिस्तौल डाक्टर के हाथ में दे दिया, "कैंसा है?"

"अरे हम क्या जानें पिस्तौल !" डाक्टर ने पिस्तौल को हाथ में तान कर जवाब दिया, "गोली तो नहीं है इस में ?"

"नहीं, गोली नहीं है। अलग रखी हैं। चलाना जानते हो?" "ऊँ हूं" डाक्टर ने पिस्तौल को बिस्तर पर फेंक दिया। "इस के लाइसेंस को जारीक ही कतम हुई जा रही थी। दो-तीन जह री दवाइयों भी लेनी थी। इसारे देहात में मिनता ही क्या है! "जब तू यह मगस कि पाप मिनिट के लिखे बहन में भी मिनने नहीं जा सका। गुने मेंने नियता तो था, उस ने बनाएन में पूण ५० पाम दिवा है। उसे महां लड़ियों के कानिज में जगह मिल गयी है और रहने के लिये उसे वहीं कमरा मिल गया है। मुक्ट एंड की गाही में तीट न जाऊं तो वहां सेवन में दो बने कैंने हाजिर हो सहुमा? एक काल का मामता लगा हुआ है। कजहरी ने कुमंत्र मिनते ही एक्षंत्र नहीं ही फोन निया ""

"त घर आ जाता !" विहारी ने फिर निरोध निया, "फ़सैत में रात भर

जमती । "" यहा पैसा बरबाद करने में फायदा ?"

"यही तो जू नही ममसता । युविष्यत्य वा माम, युविर्वत्य का सर्व ! यह तो नित्तन का निमयण है।" विष्टारी का हाथ अपने हायों में दवाते हुए नन्दन योला, "एक यात और है जो घर पर नहीं हो सकती :।"

"हु" दीनो माहें सीने पर मगटेते हुए डास्टर ने अनुमान प्रकट किया, "तमाश्वीनी ?"

"अब समारे बेटा !" गर्वन टेवी कर बजनवन ने स्वीकार निन्मा, "इस में भी सो कभी-कभी केंत्र होना चाहिये !"

"अभी यह हरकतें जारी है ? "कुछ स्थाल करो ! 'राहके के बाद हो गरे हो ! भोंत्र का घोक चर्राया है ! साले, यहा होहल में बाताक औरल में बीमारी समेट से फिर आगा मेरे पान कि डाक्टर देवस्थल समा है ! साले. कभी हताज नहीं करेगा दिन

"मूंगी जी, अभी कुछ रोज दुनिया देखो !" बडे समनीमा सनते हैं। असे जो माजार में टके-टके सेर बिट रही है, उसका का ग्रीक ?"

में जो माजार में टके-टके सेर विक रही है, उसका क्या शीक ?"
"तो !" डाक्टर ने अने सिकोड़ प्रश्न किया, "आप के निये साजार से नहीं

क्षो आसमान से हर नाकिन होती ?"
"अमा हट !" धननत्तन हाथ से महिल्यांन्सी उड़ाते हुए थोला, "नवा

पुगदो भी-ती बातें करते हो ! बना है डास्टर ! दुनिया में बया नहीं होना ?"

"अच्छा !" मार्चन के दम में गिर हिलावे हुने दास्टर के पूछा, "वो कोई पुरानी आपनाई है ? बेटा, फिल्मट बक्वाउन्ट घर में रसने हो, महा नामक में करेट अक्वाउन्ट सोन रखा है ?" "अजी हटाओ, यह इस्क की सिर-दर्दी बन्दा नहीं पांलता कि मजनू वने फिर रहे हैं।"

"मियां चुगद वन रहे हो तुम !" अपने ऊपर टाला गया लांछन लीटाने के लिये डायटर बोला, "जो तुम्हारे लिये यहां आ जायेगी, वह वाजारू न हुई तो क्या होगी ?"

"चत्त ! गवा है बिलकुल "।" किवाड़ों पर उंगली की आवाज सुनकर व्रजनन्दन रुक गया और पर्दे की ओर दृष्टि कर उसने गम्भीर स्वर में पूछा, "कीन ?"

वैरा एक किश्ती में सोडे की बोतलें और गिलास लिये भीतर आया। विना कुछ बोले बैरे ने सामान एक छोटी मेज पर टिका मेज दोनों के बीच में रख दी। जेव से बोतल खोलने की चावी निकाल उसने बोतलों के समीप रख ब्रजनन्दन को सम्बोधन किया—"हुजूर, कोई प्लेट हाजिर कहूँ?"

"क्या है ?"

"हुजूर कवाव, एगफाई, आमलेट, सलाद जो कहें; खाना भी तैयार है।" ब्रजनन्दन ने अंग्रेजी में पूछा—"तुम क्या पसन्द करोगे? मैंने तो खाना दोपहर वाद वेवक्त खाया है।"

"कुछ भी, सलाद ही मंगवा ली !"

"दो प्लेट कवाव, एक आमलेट और एक सलाद।" ब्रजनन्दन ने बैरे को हुन्म दिया। बैरे के चले जाने के बाद उसने डाक्टर से पूछा, "स्काच खोलूं या यह दूसरी?"

"क्या फरक पड़ता है।" डाक्टर ने हाथ फैला कर उपेक्षा प्रकट की, "फरक तो पहले ही पेग में मालूम होता है। जहां कुछ चढ़ी तो इतनी तमीज ही कहाँ रह जाती है! एक पेग चौधरी के यहां से पी आया हूं। भला आदमी माना ही नहीं। "अब जो हो। रंगे कपड़े पर रंग का क्या पता चलता है?" जो तुम चाहो!

वेटा आज बहुत रंग में आ रहे हो, बात क्या है ?"

"स्काच खोलूं!"

"क्या फायदा !" डाक्टर ने फिर उपेक्षा दिखायी, "रख ले, मुश्किल से मिलती है। कभी किसी जज-वज को पार्टी देनी होगी तो काम आयेगी। मैं दूसरी चीज ले चुका हूं। कहते हैं, दो चीजें मिल जाने से कभी गड़वड़ भी हो जाती है।"

"आलराइट" ब्रबनन्दन ने दूसरी बोतत उठा कर सील-मोहर तोड कर बोतल स्रोल ढाती । दो गिलासो मे दो-दो उँगली की ऊचाई तक जिस्की डाल उस में मीडा छोड़ दिया। एक निलास डाक्टर की धमा कर दसरा स्वय ऊंचा कराते हुये बोना-"बेस्ट लक ! (शम हो) !"

"तैयारी तो बेटा बैंड लक (जज़म) की ही कर रहे हो!" डाक्टर मे

नन्दन की ही तरफ गिलास ऊचा उठाते हुये चेनावनी दी।

"ऐसा बयो बकता है वे !" घंट घरकर बजनन्दन ने त्योरियां चढा कर पद्धाः ।

''बी॰ ही॰ (सजाक-आतसिक) समेटने जाये हो । बेटा, ऐसा शीक है

सो अपने बजगाँ की लरह दो वीवियाँ रलो, चार रखो, दस रखो !" डाक्टर समीहन के स्वर से कहता गया. "अनजाने तालाव से इटकी सताने से सहा आग्नका. जाने कब सगर पांच बाम ले !"

"बडे दाना बन रहे हो मुंगी जी !" बजनस्दन ने डाक्टर की सादधानी का मजाक किया, "तुमने कह तो दिया बाजारू नहीं है। यह तो तिसन से पहले ही शर्त हो खुकी है। सुनिश्चित और सम्मानित समाज की: समझे पटें! अबे साथ सी लेना ही तो सब कुछ नहीं हैं। संगन और बुहल में ही असली मजा है । बीवी का बना है, दो हुई या चार ! बीवी तो बीवी है, जैसे पहाडी लोग कहते हैं-'वही विस्तर वही सुपने !' उसमें ग्रिल (उमय) क्या ? बढ भारमी, इस प्रवातन्त्र और स्त्रियों के समान अधिकार के जमाने में हो और दम भीविमों का मुत्रना देख रहे हो ! यरे, एक को ही सन्तुष्ट रखना मुस्किल है। वह जमाना सद गया कि स्त्री के यन और सन्तोप का मवान ही नही था। टाहर साहद को जचनी गयी, वे उन्हें रिनवास में समेटते गये । हिन्दू कोड-वित कर में बता आ रहा है, मुंशी जी बया समझते हो ? समता और प्रजा-तत्त्र के जमाने में शौक और इस्क भी समता और प्रजातंत्रात्मक दंग से ही प्रा होना चाहिये !"

"क्या कहते ?" बाक्टर ने विदूत में हाय फैना कर उत्तर दिया, "यह बो मुल की मारी आप के शोक के लिये चनों का रही हैं: प्रवातन्त्र, स्वतंत्रता और समना का ही तो वानन्द मेंती ?"

"जानना तो दुछ है नहीं, बके आदेगा ? हम बाजारू है ?" नन्दन ने आप्रह से परन किया, "बैने हुये बीह है, औरत को बीह नही होगा ? सुन !"

دالله ، سه سه

नन्दन ने डाक्टर का कन्धा छू कर समझाया, "नित्तन को नहीं जानता तू? एक ही हरामी है। उसने जाने कितनी पटा रखी हैं। दो-दो कारें हैं साले के प्राप्त । रोज की पार्टी-वाजी । वेईमान की सब जगह पहुंच है। उसने आज के लिये दो से अपाइन्टमेंट किया हुआ है। वे लोग यहाँ नी बजे आयेंगे। एक-एक पेग यहाँ लेकर 'रेलवे इंस्टीच्यूट' के डांस (सम्मिलित नाच) में चले जायेंगे या किसी दूसरी जगह। जैसा भीका हो; या जहां तुम कहो!"

"हिस्त!" सिर हिला कर डाक्टर ने अंग्रेजी में कहा, "मुझे क्या मत-लव! मैं तूम लोगों के साथ नहीं जाऊंगा!"

"क्यों!" नन्दन ने त्योरियां चढ़ाकर डाक्टर की ओर देखा परन्तु दरवाजे से आहट पाकर चुप हो गया। वैरा एक वड़ी किस्ती पर कवाव, आमलेट और सलाद की प्लेटें लिये भीतर आया। उस की उपेक्षा कर नन्दन अपनी घड़ी की ओर देखते हुये अंग्रेजी में वोला, "नौ तो वज रहे हैं।" और उसने वैरे को सम्वोधन किया, "देखों! तीन गिलास और तीन सोडा और दे जाओं!"

वैरे के बाहर जाने पर नन्दन के माथे की त्योरियां फिर उभर आयीं— "क्यों, तू क्यों नहीं चलेगा हमारे साथ ?"

"वैश्याओं से मुझे नफरत है।"

"उल्लू है ! किसने कहा वे वेश्या हैं ? पढ़ी-लिखी भले घर की लेडीज ! जिस को चाहे बेश्या कह दिया ?"

"कौन भला परिवार अपनी स्त्रियों को ऐसे आने देगा ?"

"तेरा मतलब है औरतें सोसाइटी में बाहर न निकलें? बड़ा दिकया-नूसी आदमी है तू !"

"मेरी बीवी किसी के शौक और चेंज के लिये जाये तो मुझे अच्छा लगेगा? "तेरी बीवी जाये तो तुझे अच्छा लगेगा? तुम्हारे लिये औरतों की आजादी का मतलब है, दूसरों की स्त्रियों को आप का शौक पूरा करने की आजादी । अपनी बीवी को तो ताले-चावी के भीतर 'फिक्सड अकाउन्ट' में बन्द रखों और दूसरों की औरतों से 'करेंट अकाउन्ट' चलाओ ! दुनियां में बस एक तुम्हीं तो छैंले हो न ? कोई तुम्हारे ही कान काट ले ! तुम साले अपने पांव तले की डाल काट रहे हो ! समझते हो, दूसरों को गिरता देखकर हंसोंगे ! क्यों वेटा ?"

"ओफ, बड़ा बुजुर्ग बन गया है !" नन्दन कह रहा था परन्तु वराम्दे में जूतों की खट-खट की आहट पाकर वोला, "नित्तन आता होगा"!"

"हमो बदीन सहब !"

"लाइचे, बाइचे !" बीव की शिर्म करन के क्लारे में कर की की उसे एक बोर हुए बर बह स्वारत में बई गार में है दिवें दरवाने की मीर भाने का मल कर पहा था। कर रिटर्ड को लगे है हुन में लगा का दि निसन ने मीतर बाबर पर्श नप्र, रीते की बार एए कर करवाई के बाउर सही दी प्रवृतियों को मन्बीदित किए, 'बाएर र काएड रें

आयुनिस मह बेयपुरा में हो हरीगों है क्या दें हे बहर है करे हैं बिका ! बानदर भी सम्मान प्रस्पेन के निर्दे हर बाग हुआ। किनाद के कुन्द ताब र पर्दा के भीतर बदम रणने बाती दुरते वा गीरर रिल्फ्स है क्या है " बीर

इमरी मुक्ती की बोर बहेत कर होता, नहिंहत क्षाना ।"

नित्तन ने बननदन में मुर्गियाँ का परेक्ट करने हैं दिन पूर्व की मीर बार्सि मी परन्तु बकाम् स् बता १९६ ही एन वे बचनम् न वा केन्छा विश्वव बीर कोष से प्यस बता था । जिल्हा की काफ का बाने देख करवाह में भी बजनन्दन को मोर देशा होते हिए एउट्टी हुन्यु जिस हमूदन की और सहै । बह बांसें मुनारे बांद रही थी। रूप हाल बा, नदसदा बादगी ६

शास्त्र में एक बार रिए बरन्यत, जिन शहर, बिस्तुब और जिलेश सन्तेना की बोर निराह हाद हम्म्में बादण विशा और शहर की सामी हुती को लीव वित शहर को रामपत निर-वाह देश बाहरे ! आप

क्षीदियाँ पर बहुत यह दर्भ है।"

डाक्टर में बहनन्त की कीर देश ह बर पान बर मेज की और जाती बाह्ना या दशकारिए सीवित्र मेरे बार्ट बर मन कर ना संपन्न कर मेन पर में किया प्रशासन कर कर मा नाम कर कर निर्माण को सन्दोवन निमान्तर है भी निमान को बेरण बर उपार है है है रहे हैं। और मार्ड स्वराज्य रहे हैं। बरे मार्ड, हर कार/बंग्रंड का, नवल यह स्वकार एक बर्खा किसी को जस्मी बरल करना विमी को जस्मी बरना क्षेत्र क्षेत्र के निर्मा का है अवसी का दगर के अब है डाल लिखा :

बनन्यन ने हुँठ कर निर्वे और होता हाच वनवृत की रह गया । निनद बहाताल हुत हुती हुपर, बाही उच्चे प्रतिव सक्तेता वर्तान्त्री वस्ता वे हेरा कर अपने

ओर देख डाक्टर बोला—"ओफ ! आप खड़ी हैं ? नित्तन वाबू, आप को कुर्सी दो न ! हां, आज सचमुच बड़ी गर्मी है । क्या अजीव मीसम हो रहा है ?" उसने दीवार की ओर वढ़ विजली के पंखे का स्विच घुमा दिया । नित्तन और नन्दन अब भी खड़े थे । डाक्टर ने उनसे आग्रह किया, "आप लोग भी वैठिये ! खड़े क्यों हैं ?" नन्दन को उसने अपनी कुर्सी पर बैठा दिया और स्वयं नित्तन के साथ पलंग की पटिया पर जा बैठा ।

डाक्टर ने नित्तन और मिस रावल को एक साथ ही सम्बोधन किया— "नन्दन तो आप लोगों की प्रतीक्षा कर रहे थे कि दिन में बहिन से मिलने का समय नहीं मिला। आप लेकर आते होंगे वर्ना घर लीट कर क्या जवाब देंगे? लखनऊ गये और मिलकर नहीं आये!"

नित्तन ने रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछ कलाई की घड़ी की ओर देख बात सम्भाली—"हां, देर हो गई पर पहले टाइम ही नहीं मिला।"

वैरा एक किश्ती में सोडे की तीन वोतलें और गिलास लिये दरवाजे में दिखायी दिया। डाक्टर ने आगे वढ़ ट्रे उसके हाथ से ले ली—"ठीक है, थोड़ी देर में आना।" वैरे को लीटा डाक्टर ने ट्रे तिपाई पर टिका दी।

"आप बहुत थक गयी हैं!" डाक्टर ने मिस रावल के समीप आकर कहा—"सीढ़ियां तेजी से चढ़ी होंगी। देखूं, आपकी नट्ज देखूं!" मिस रावल की नट्ज अपनी उंगलियों से टटोल कर डाक्टर वोला, "धड़कन बढ़ गयी हैं। आप थोड़ा पानी पी लीजिये?" एक गिलास में बहुत थोड़ी सी ह्विस्की डाल उसे सोडे से भर, डाक्टर ने मिस रावल की ओर बढ़ाया, "लीजिये!"

मिस रावल ने इनकार में सिर हिलाते हुये गिलास हाथ से परे हटा दिया। "मैं डाक्टर हूं। आपको दवाई दे रहा हूं।" अधिकार से डाक्टर ने कहा। "नहीं, नहीं!" मिस रावल ने सिर गिलास से पीछे हटा लिया, "मुझे वदवू मालूम होती है।"

डाक्टर ने दूसरे गिलास में निरा सोडा डाल उन्हें थमा दिया। दो चार घूंट ले, गला तर हो जाने पर वे बोलीं—"जाने कभी-कभी क्या हो जाता है मुझे ? "दिल डूबने सा लगता है। जब भी तेज चलती हूं, ऐसा हो जाता है।" मिस रावल आवाज से बीमार मालूम हो रही थीं, "नित्तन बाबू ने कहा, भाई साहव आये हैं। अवन्ती होटल में ठहरे हैं। सुबह जरूर चले जायंगे। मैंने कहा, मैं इसी समय चलुंगी!"

"हा" डाकटर ने सिर सुनाया, "नत्वन भी परेतान था। कह रहा या, नित्तन बादू ने आपको निवा लाने के लिये कहा था। इतनी देर हो गयी है, अब आप करेंगे आ सकेंगे। रे नुबह आप के भिक्ते का तमय न होगा। गाडी बहुत सबेरे पत्ती जाती है।" उसने नन्दन की ओर देखा, "अब तो तुम सुबह बेफिकी से गाडी पकट सबते हो!"

डाक्टर को जन्दन से बात करते देख निरोज सबसेना ने राकेत से निरान

ना ध्यान आरुपिन कर घीम से कहा—"बहुत देर हो जायगी !"
"हां" निसन ने समर्थन के लिये अपनी ग्रही की ओर देखा।

शास्टर से उनका अभिन्नाय सम्ता कर भी गन्दन को सम्बोधन किया—
"मह भी क्या व्याना हुआ ? 'सी थीच' फिल्म की वड़ी तारीक मुनी है। सब सीम साम-साम देखते । बेर, जब टाइम ही नहीं है।" अस्तो पड़ी पर नजर शास बह योगा, "इन सोगो को देर हो रही है। धुनो, तुम मुजद से बहुठ मक गये ही, क्या तत्त्वीक करोंगे हैं। युने तो उसी रास्ता जाता है। यहिन को मैं पहुँचा हूंगा। जुम परेसान न हो!" वह उठ लड़ा हुआ।

सब लोग उठ लड़े हुवे। नन्दनं भी उठा परन्तु चुर ही रहा। चतते-चतते हानटर ने पूम कर कहा—"आज तो पिस्तीन जेव में है। भाई, अपेरी रात का मामता है। देखें, काम आता है या नहीं ? और अगर आज इतकी जरूरत साविन न हुई तो तुम्हारी मेंट कर ही लीटा दूंगा। यह भी बया मेंट है!" अपनी जेव की थोर नितन का ध्यान आकर्षित कर डाक्टर ने करते "कि पात एकने में ठर लगे। यह वर से बया व्यावेगी? और कमवल्त वेव अलग कटी जा रही है."चियो जव!" उसने मिस रावल को सम्बोपन किया।

× × ×

बनगरन की बिहिन की कांसिब के हाते तक पहुंचा कर जब डाक्टर होटल लीटा सी गरन के कार्य की बिजनी बींसे ही जल रही थी। यह कपटे बरले दिना पंकाप पर किरा, दोनों हाथ किर के नीचे दबाये छत की थोर टकटकी सगारे पा। मेज पर बोतल विस्तास जीर सब सामान बींसे ही पड़े थे।

"नन्दन" डाक्टर ने पुकारा । नन्दन ने उसकी ओर देखा और मौन रह गया ।

and the same

ं निसन के महित का परिचय हुआ कैसे 💯

राज्य ने प्रतान के भनेता में हाए तिया दिए। ।

े पन पहासी बनो हैं। चावरण कुछ कहें रवण से बारा, "नासी गारी मर पहारी नम बार वह रहे से दे पहासास मुख और है लेकिन प्रमान मिंग जाना की जगत प्रश्ने बहिन होती और न्म न पत्तानते हैं मध्ये पोर्गने तिसी भी पत्ति, नहीं या जाते होती हैं। इंग्लिश बहिन को भी स्थापी सम्मीत पर गुहारत हो महता है? महिलान कहा महत्त्व बेगसी का भीततात नहीं है। नम जन हता पीर समान हो बहद कहते हह दे जन हत्य भीर समाग के समाज में नहीं नेतिक हा पीर नाजीह बहद सब हो है जो सब वे निर्मा सम्मी

साह श्रीर चीर

विष को देशमी पहुंचने की मुख्या नार हारा दे दी की परस्यु बावई मेरा रोमन पर देव परे लेट पर्वी व शोबा-विष के बड़ी बाद-मारण ही बड़ा हीता, प्रत नारश हुबाम गैवार करना परेंगा : शामात देशिय अस के दी को गाँउ दिया । बारणा को छत्र के भोजनात्रय में कर दिया । बेटिंग रूम में भीट बर बयुर्व की बिर्चा में एक कुमी पुतार देने का अनुशेष निया ।

भारते समय सिमारेट मुक्ता मेरे की हच्या हुई । क्रेम में सिमारेट समाज ही पुढे थे । गुरदेश मोल नदा टीज निकाल कर कार तथा था । वेटिंग अस का दरवाजा गुणा । एवं अपनेश दशक भीतर आया । कर शाम के रंग की हानी अभी पत्रमुख और साबी बोट यहने या । हाय में असवार माप की सरह

शिरदा हुआ गा ।

यार आया-पास में भी बट बुदर कुछ स्टेशनो पर दिलाई दिया या। बब दून माथी दौड़ के बाद विशी कोगन पर ममनी तो मैं बैदा-बैदा उस जाने ने बारण मानवरमी के निवे रोडकार्य पर उत्तर जाता । वह मुक्ता भी सगर-बार पहता हुआ या वैने ही वहतवदमी करता मेरे पान से गुजर जाता। हमे एक दूसरे में मननव न मा इनानिये आंगे थिया जाने पर भी, राज्यनता से मत्ररे बना भेरे । जिय गमप मैं भीकनायम में मारणा कर पता था, बाबई मेस पंताब भी और चनी का चुनी थी। अनुसान हिया, शायर यहाँ गाड़ी बरलनी है। बेटिंग कम में बैट बर मतीशा बरेगा ।

मुच्द वेटिंग क्या में माने समय मेरी और ही देल रहा था। मोनें मिल गर्दै। उनने गमीप का बुद्द जिल्ला में अवेत्री में मूले सम्बोधन दिया-"अगर

मार एक मिनट बैटें तो हुए बात करना बाहरा हूँ।"

पुनर के स्वर और मुद्रा में गंकीय और मनिस्वय जान गड़ा। सहसा

कल्पना हुई—"हूंवही बात होगी—गाड़ी से उतर फाटक पर गया। टिकट देने के लिये जेब में हाथ डाला। सावधानी के लिये टिकट बटुए में रख लिया था।वटुआ ही गायब। शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता।मेरा पता लिख लीजिये। एक भद्रलोक के नाते जो सहायता आप करेंगे, उस से उऋण होना अपना नैतिक कर्तव्य समझूंगा आदि, आदि। सज्जनता और दया की आड़ में लूटने वाले, छिलया भद्र लोगों का पूरा चित्र सहसा कल्पना में फिर गया। ऐसे आदमी भद्र लोगों का यह कर्तव्य समझते हैं कि भद्र श्रेणी के सम्मान की रक्षा के लिये हम लोगों को उनकी छलना का शिकार बनना चाहिये।

मन में उठी वितृष्णा को दबा, भद्र लोगों की भद्रता निवाहने के लिये सिगरेट का ताजा कटा टीन युवक की ओर बढ़ाकर उत्तर दिया—"पीते हैं ! ... लीजिये......!"

युवक ने विनय से धन्यवाद दे सिगरेट ले लिया। कुर्सी विल्कुल मेरे समीप खींच ली और मेरे सिगरेट सुलगा लेने की प्रतीक्षा में, हाथ में थमे अखवार को रूल की तरह लपेटते हुये उसने क्षमा सी मांगी—"आप पधारिये, मुझे एक ही बात पूछनी है।"

युवक के ज्यवहार से कुछ विस्मय हुआ। एक सिगरेट अपने होठों में ले लिया। माचिस जला पहले युवक की ओर बढ़ा कर पूछा— "आज्ञा कीजिये!" उसने सिगरेट सुलगा ली और मुझ से बैठने का अनुरोध दोहराया। अब संदेह हुआ, शायद गुप्तचर-पुलिस का आदमी है पर मुझसे मतलव! बैठ कर मैंने फिर पूछा, "कहिये!"

युवक मुझसे आंखें मिलाकर अंग्रेजी में बोला और उसने आश्वासन दिया— "मेरी बात से परेशान न हों। विश्वास रिखये, मुझसे आपको किसी भी प्रकार की हानि या कष्ट नहीं होगा।" और फिर कुछ संकोच से बोला, "यह बता दीजिये, आपके पास हजार-हजार के चालीस नोट हैं?"

शरीर में बिजली सी कौंध गई। पहली आशंका यही हुई कि अब पिस्तौल दिखायेगा। पिस्तौल दिखाई नहीं दिया। मन में दूसरी आशंका तड़प गई, टटोल कर देख लूं कि नोट सुरक्षित हैं या नहीं परन्तु सावधानी के विचार से वैसा नहीं किया।

वेटिंग रूम में हम दोनों ही थे। मुझे अकेला देखकर ही वह आया था। वुजुर्ग वैरा भद्र लोगों के कायदे से परिचित था। दो भद्र पुरुषों को समीप

, comment

बैटकर आपसी बात करते देख औट मे हो गया था। अपनी पनराहट छिपाने के लिये, सिगरेट के युर्धे से आयें चरनराने का बहाना कर, पनर्के सिकोड मैंने प्रकृत से उत्तर दिया—"क्या ? मैं समझा नहीं, ' कैसे बोट ?"

युवक ने गम्भीरता से समझाया—"अगर आपके पास बासीस हजार रुपया है और आप भग के कारण इनकार कर देंगे तो एक आदमी की जान व्यर्च में निरसराय चली आगरी!"

युवन की बात से सारवना पाने की बपेसा घवराहट ही बड़ी। उत्तर विद्या---"किस की जान ? कैसा चालीस हजार ? सम्हारा मततव क्या है ?"

मेरी पनग्रहट गुनक में खियों न रही। युनक ने अपनी मुर्खी मेरी और ग्ररका भी और दिनमेट से कवा खींच कर घोगा—"आग पनराईंग नहीं, तच बातें कह सीनियें। अनर आगके पाग चपगा है तो भी वन आप को कोई खतरा नहीं। मैं केनल जानना चाहता है कि इस मामचे में घोगा तो नहीं निया गया? सम्बद्दी से आते समय आप को 'यनगार' में शीन शी रुपयें में देवा गया था। उनके बाद मैंने आप को इटाएंगी स्टिंगन पर दो शी रुपयें में लिया ही। मैं सिकंप ग्रह्म जानता चाहता है कि इस लोगों को घोगा वो नहीं बिता गया? " युनक सिगरेट से क्या खीनता हुआ उन्तर की प्रतीक्षा में मेरी और देनता रहा।

उसके हाथ में पिस्तील में छूटा न देल और इस बीच कुर्सी पर करवट हो अपने पास रकन सुरक्षिण जान मैंने कुछ कोम से उत्तर दिया—'परेर पान कोई द्रवया-युपमा नहीं है। गुम बड़े विषय आदशी हो?' मुदो वेचने और सरोदन मा मताब ?'----गुस कर्केंगी और करल करते हो और सोदे को दिखायन भी करते हो ! गुम्हारे जैसे आदमी को हो पुलिस के हवाले किया जाना चाहिये!"

मुक्त ने विगरेट को वर्जनी जंगभी की तरह पेतावनी में उठाकर मुसे टोक दिया—"पुनिस में मेरी विकासत करने से कोई साथ नहीं ! "उस का प्रवस हम लोग पहले से एकते हैं ! आप करे ही स्पर्ध करन होंगा ! आप को वेब सो कही नहीं ! विकासत किन बात की कीविष्मा ? थोला तो देरे साथ हमा । वरन्तु मैं अपने साथ बोधे के स्थित पुनिस के साथने पिड़ामाने नहीं जाऊंगा । ऐसे थोखे और अन्याय का वष्ट देना पुनिस के आधिकरर और सामर्थ में हैं भी नहीं । पुनिस हमारी व्यवस्था नो स्वीकार नहीं करवी। ऐसे बरायम स्वादण हम लोग स्वाद में लेकिन आप अब भय न होने पर भी अपने साम क्ष्मा नीने ते इनकार करेंदे तो परिष्मास से अस्याय हो जायमा !" ऐसे साहती और राण्डवादी व्यक्ति से भरोगा और सांत्वना पाकर भी में अपने पाम इतनी बड़ी रक्तम होना रनीकार न कर गका । उन्हें उस में पूछा— "यह सब गया चक्कर है ? "भी कुछ समझ नहीं पा रहा हूं। मेरे पास ख्या होने से सुग्हें क्या मनतब ? "भेरे पास ख्या न होने से किसी की जान क्यों जागगी ?"

गुनक मुद्दो विश्वास दिलाने के लिये हाथ उठाकर बोला—"आप ने कल एक वर्ज बैक से हजार-हजार के जालीम नोट लिये थे ! "आप बैंक से सीचे स्टेशन पर आये थे ! "नोट लेकर आपने अपने कोट के भीतर की जेवों में रसे थे ? टिकट आप ने स्वयं नहीं सरीदा । आप के नीकर या मुंशी ने लरीद कर दिया था । इतना ठीक है ! " अपने विशय में इनने सच्चे व्योरे से बात सुन घवराहट और भी वड़ी परन्तु विस्मय प्रकट कर दुहाई दी, "जाने तुम किस की बात कर रहे हो ? " "किसका रुपया ? "मुझे व्यर्थ में क्यों घसीट रहे हो ?"

मेरे उत्तर री युवक की अमुविधा और दुव्चिन्ता और बढ़ गई। उसने मुझे फिर समझाना चाहा-"जिस आदमी ने वैक से आप का पीछा किया था, वह मनमाड स्टेशन तक आप के साथ आया था । वहां उसके क्षेत्र की सीमा समाप्त हो गई। उसका कहना है कि बम्बई से गाड़ी छूटने के समय तक रूपया आपके कोट की भीतर की जेव में जरूर था। उसके बाद आपने चाहे जहां रख लिया हो ? मनमाड में उसने आपको तीन सी रुपये में दूसरे आदमी के हाथ वेच दिया। यह दूसरा आदमी इटारसी तक आपके रुपया रखने का स्थान भांपने की कोशिश करता रहा। इटारसी तक असफल रह कर उस ने मुझसे बात की और एक सी का नुकसान उठा कर उसने आप को दो सी हपये में मेरे हाथ वेच दिया । मैं सब यत्न कर हार गया हूं लेकिन जान नहीं पाया कि आप के पास रुपया है तो आपने कहां रखा है ? आपके कोट की जेव में केवल एक नोट एक सौ का और दस-दस के दो तीन नोट हैं। आपके कोट और पतलून में चोर जेवें नहीं हैं। आप मारवाड़ियों की तरह कमीज के नीचे जेव-दार वंडी नहीं पहने हैं। आपकी कमर में तागड़ी भी नहीं है। आपने रुपया जूते में नहीं रखा, वर्ना रात में सोते समय आप जूता उतार कर नीचे न छोड़ देते । रुपया आपने सूटकेस या विस्तर में रख दिया होता तो आप निश्चित होकर टहलने के लिये स्टेशनों पर न उतरते या नाश्ता करने के लिये सामान

को बेरदबाही से न छोड़ जाते ! मैं यह भी नही पूछना चाहना कि दरवा आप ने कहां रास है ? यह मैं स्वयं जातने की कीवाज करूंगा ! मैं नैजन जानना चाहना हूँ हिन्ह मानेशों को घोड़ा तो नही दिया गया ! वनकी अध्यक्तता के तिये मैं से तो का नुहमान उठा मूंगा ! यदि दो तो में चालीम हजार के तिये मैं से तो का नुहमान उठा मूंगा ! यदि दो तो में चालीम हजार पाने का बोद बाताया जा सकता है तो ऐंगे दांव में दो तो के नुहमान का गम भी म होना चाहिये पर बांव दांव है और घोड़ा घोगा है ! हम लोगों में यदि धोता होने लगे तो एक दिन काम नहीं वहां वाचे की तो साथ कराने है ! हम लोगों में यदि धोता होने लगे तो एक दिन काम नहीं वहां वाचा पह तो किता अपने ही साम कि तो साथ कराने भी मतुष्व होता ! वात यह है कि यन्वह है आपका पीदा करने वात बातमें पर हुए दिन पहुने भी घोता देने का सन्देश हुए था ! यदि उतने इत बार सम्बुक घोला दिया है तो उन्हें क्या स्वस्थ मिलता चाहिए ! हम सम्ब मैं निर्देह का वाता है । यो तो उन्हें क्या कराने पर तम्में हम वोनों पर निर्में करता है । " उत्तर की प्रतीक्षा बे वह मेरी और पूरता रहा ।

मुते शितानते देण उसने अनुरोध दिया—"विद्वास कीनिये, अब आप को नुक्तान का भव नहीं है परन्तु निरम्सम का सून होना भी उचिन नहीं और अपराधी को देण्ड न मिसने से स्ववस्था नहीं रह सनती।"

सम्मानित जन के से यह बोल एक अरसपी के बूंदू से मुन मुसे ताव आ गम- "मुम स्वयं नगराय में दूने हो ! "मैंने उत्तर स्थित "मुन से यह अरसपी मैंने हैं हु युद्ध होते हो अरसप का रूक दोने ? अयर बुत सेरी जैव काट सेते सो मह बया निरस्पत्र का युन ते होता ?" "मैंने मुहारा बया अरसप रिवा है ?" बोलो ?" मैंने बोब से खेल ब्लेरी हो है।



उठ जायमा । इसी बीच में आप की मीनार भी जेच से नीट सीच तेने होंगे । किंद्रें , बाप इतनी सकाई से काम कर सकते हैं ? आप के तरीके दूसरे हैं) आप की क्यें भोप लेती हैं कि किस चीज की कमी से सीमों की परेशानी होंगे साती हैं । क्यें बही चीज अधिक माना में जमा करके, तोगों की परेशानी होंगे साती हैं । क्यें बही चीज अधिक माना में जमा करके, तोगों की परेशानी बड़ा कर, उन की जेबो से खूब रुपा खीच लेती हैं । बा खान की फर्म बाजार में कर, उन की जेबो से खूब रुपा खीच लेती हैं । बा खान की फर्म बाजार में सत सात करने की मुक्तती वेचने के लिये छट्टा कर जिल्म का मान गिरा देगी । गिरे हुए मान पर सचमुन बीम साथ की मूंगकनी सरीद तेमी । मान बड़ेगा पर माल रोके रहेंगे । जोगों को अपनी खायरकता पूर्ति के लिये उचित के अधिक साम लेते के लिये मजबूर कररेंग । सह भी मूट का शरीदा है । आपका सामर है, आपकी पूर्वी । हुए लीग हुरी मार कर सासी की विवास करके दूरा साम अधि मान कर या बीच सामा की अपनी चूंजी से विवास करते हैं । हम लीग छुरी मार कर या बीच सामा की अपनी चूंजी से विवास करते हैं । हम लीग छुरी मार कर या बीच सामा की अपनी चूंजी का बीच हमाती हैं और अपनी राजिक को जीवत समसते हैं विवास करने तरीके को जीवत समसते हैं विवास वार ने तरीके को बीचत समसते हैं विवास समसते हैं । "एक और सम्बा क्या सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिये !" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिया है ।" एक भीर सम्बा करा सीच कर वह बीचता गया, "दो साल "धूनिया है । हमी साल कर वह बीचता समसते हैं ।"

पहले १९४३ में मैं कनकले से बादल की व्यापारों क्यें में नौकर था। क्यें से बादल करीट-वर्रोड कर महागई कर देने के तरीकों से छु: मास में तीन करीड़ परया कमा तिया। क्यें तो बादल रीदा नहीं करती। दोगों से सत्ता वाचन खरीड कर कार्ड यहुँदे दागों वातिन बेचने के लेव में कर्म ने सीन करीड़ दरया कमा तिया। इसे आप ईमानदारी करेंदे या चतुरता? और मृतिये, काम मैं और मेर्र कींगा करेंदे थे। क्यें हमारी माफेन साकों क्या रही थी। मुत्ते मित्र रहेंदे वे देवन सवा भी और कराड़ हमान क्या हमान के बहु के कर कार्यों में वे बहु कर कर मही कार्य के साम में क्या रही थी। मुत्ते मित्र रहेंदे में देवन सवा भी और कर मही की मही मान के समुले वारों कार में कार मान कार मान में सहस्ता में कींग कर साम के समुले वारों रहर मान कार मान और मान को अधिक से अधिक दाय पर बेचना लेकिन हम भी में मित्र हमें ने निवादी रहने के लिये मीने के नियमों के अधिक रात इस्तारी कार स्वाप में मीन कार के सित्त में मीन कार कर मही में सित्त हमान कि साम ने मित्र हमें मीन सित्त हमें मीन साम नीनियं हह समान में मूर्त में मीन सित्त हमाने में मित्र हमें में मीन समार नीनियं । हर समान में दूर में मीन से स्वाप साम ने मान में में से स्वाप साम सित्त हमारे में में स्वाप साम सित्त हमें मीन स्वाप में मित्र स्वाप साम में मान सित्त हमें मित्र स्वाप में में मित्र स्वाप साम में मित्र स्वाप साम मित्र स्वाप सित्त साम सित्त साम सित्त सित्त साम सित्त सित सित्त सित सित्त सित सित्त सित

है । स्के जिल्ला सामाने ये पृत्तरों की सुरने की अवस्था भी ठीक से मही जया. एक की में

कृतक के मौना नौरी में चारी का समयेन करने के इन में जानमानिमान को भाव इतका रहा था। मैंने उमी पर भार करनी जाती—"मीने और भीरी में दूसरे का भन कीन विभे के लिये भी जीनमान किया जा सक्या है, यह जाज सहनी धार देख रहा है।"

सह मेरी पुटकी से होंगा नहीं और बी सा—"जाप नोरी की यान परते हैं? तुमरे का पन के लेना भीरों हैं ? मुख न मानिक, धन तो नाराव में महार करने वाले और विधान-महरूर हो पैदा करते हैं। नेप मब स्वतमाय प्रमुखन को पैदा करने वालों के हाओं से अधिक से अधिक मात्रा में हियमा सकते की चतुरता ही है। अवनात भीने के कृद नरी हों की समाह स्वीकार महता है और मुद्द को अपराध दहता दिया गया है। यो कोग समाह हास स्वीतृत निर्वाह करने के तरी को स्थान नहीं पाने, वे चील-मीए की तरह होना-अपटी से निर्वाह करने है।" आधे से अधिक समाध्य हो गया निर्याद पहाँ पर पान कर मैदन से कुचलने हुये उसने मुसारता है कहा, "में आप के प्रति कुनका है। आपने मुझे बहुत पृथित और कटिन काम से बचा लिया।"

युवक की सफाई और व्यवहार का मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि सहानुभूति प्रकट किये बिना न रह सका। समझाना चाहा—"तुम दतने पढ़े लिये और समझदार नीजवान हो, इन प्रकार के घृणित कामी में फंस कर तुम्हें आत्म-ग्लानि अनुभव नहीं होती ?"

"तुम्हें अपने असामाजिक कामों के लिये लज्जा नहीं अनुभव होती? तुम क्या अपने काम की बाबत भले आदिमयों में सफाई से बात कर सकते हो ?" उसकी आंखें खोलने की आशा से सहानुभूति प्रकट की ।

नह मुस्कराहट छिपाने के लिये होंठ दवाकर क्षण भर चुप रहा, फिर बोला—"आप भला आदमी किसे समझते हैं? भला आदमी वह है जिस का आदर हो आदर रुपया खर्च कर सकने से होता है। में ग्रुराई क्या करता हूं? हां, जेब काटना आप बुरा समझते हैं!हम लोग लाखों में से किसी एक की जेब कारते हैं। बार-वार भागद आप किमी की जेब नहीं कारते। जेब माटने ना अर्थ यह है, दूसरें की कमाई छीन लेना। वताइये, हजारी बादमियी के ध्रम का कमाई का धन जिन्दगी भर उनसे छीनते रहना भनमनसाहत है ? हम सोग भी आपम में मिलने हैं तो वहे गर्व से अपनी मफनता की बात करने हैं परस्तु आप नोगों के सामने कीम कर सकते हैं ? आप ही बताइये, बया जर्मनी, इगलैण्ड का रूस सैनिक तैयारी के रहम्य दूसरी की बता सकते हैं ? क्या आप अपनी कम्पनी के शरीके और रहस्य दूसरी कम्पनियों को बता सकते है ? आसिर पिछने युद्ध में बड़े-बड़े सेनापति बना कर रहे , वे ? वे जितना मरमशार कर सकते थे, इसरे देश का जितना अधिक धन नष्ट कर देते थे, उननी ही उन की प्रशंसा होनी थी। व्यापार की होड का भी यही अब है। आसिर युद्ध होता वसीं है ? इसीलिये न कि संसार के दूसरे देशों की शृटने का अधिक अधिकार किसे हो ? हम लोग भी वही करते हैं जो हमारे समान के आर्थिक जीवन का नियन्त्रण करने वारो लोग कर रहे हैं। अन्तर यह है कि इसरे का धन धीन लेने के कुछ तरीको को समाज ने मान्यता दे दी है, कुछ को अपराध करार दे दिया है। यह कैवल मान लेने की बात है। देखिये म, एक समय बाबर तेना लेकर इस देश का धन छीन लेना अपना अधिकार समस्ता था । आज अमेरिका-इंगलैंग्ड व्यापार में वही बात कर रहे हैं । इसरे का धन छीत लेने के जिन दादों में आप लोग करने हैं, जिनमें आप के मात खा जाने का कर है, उनमें आप खिसिया जाते हैं ! असल में खेल की मूल बात तो वही है, इसरे के श्रम का फल चतुरता से हथिया लेना परन्तु एक तरीके की साह का मान लिया गया है और दसरे को चोर का " ""

इसी बीच प्लेटफार्स पर एक गाडी जाकर खड़ी हो गयी थी। युवन कुसी से उठ सहा हुआ। गाडी की बोर बुक्त ने सकेन कर कहा—"समा कीजिये, करा भी बात के थिये मैंने जायका हतना समय बरबार कर दिया। मुझे हम गाडी से पोटना है।"

युवक की बातों से दुल हो रहा था और उसे प्रकट किये विना न रह सका— "अपमोत्त है, वुम्हारी जैसी बुद्धि के व्यक्ति की ऐसी दुर्दमा हो रही है। तुम समाज के तिये कितने उपयोगी हो सकते थे ?"

"देखिये, स्था न दिखाइये !" मुस्कराह्ट से उसने बेलावनी दी, "स्या की भीस मापने से उकता कर ही मैंने बह मार्थ परुद्रा है। मेरी बँसी बुद्धि और ईमानदार व्यक्ति भी इस समाज में साधनों की मालिक श्रेणी की तेवा है अतिरिक्त और कुछ, नहीं कर सकता। चाहे वह कितना वड़ा महात्मा व पण्डित हो। मालिक श्रेणी की दासता ही साहूपन है और विरोध चोरी!" भवें सिकोड़ और गूढ़ विचार में सिर के वालों में उंगलियां चलाते हुए उड़ने कहा, "कामरेड लोग कई वार्ते ठीक कहते हैं परन्तु तथ्य उन में भी कुछ नहीं। वह साधनहीनों की लीडरवाजी है ! एक तमाशा है ! एक झक है ! वे कहते हैं, मेहनत करने वालों का ही राज कायम हो जाना चाहिये। मजदूर का राज हो जायगा तो मजदूर कड़ी मेहनत करेगा क्यों ? और क्या हम तोगों की जिन्दगी में ऐसा हो सकता है ? मैंने चोरी बाप के इलाज के लिये की थी। चौरी करके रुपया लेकर जब मैं घर पहुंचा तो बाप मर चुके ये। उनका कुछ न बना । ऐसे ही अगर हम लोग कामरेडों का आन्दोलन करते-करते मर जारे तो वाद में मजदूर राज हो जाने से हमें क्या फायदा ? यह अच्छा-सासा मजान है। कामरेड केवल वात करता है। केवल पूंजीपित को गाली देता है। वह न पूंजोपित को मारता है और न उसका पैसा छीनता है, इसीलिये में उनका विश्वास नहीं करता !हां, गाड़ी जा रही है, घन्यवाद ! " वह लपक कर प्लेटफार्म पर खड़ी ट्रेन की ओर बढ़ गया।

टसके मुंह फेरते ही मैंने एक बार फिर चालीस हजार के नोटों को संते से टटोला। नोट सुरक्षित थे। सन्तोप का श्वास लिया, मैं साहू हूं, चोर नहीं। यह रुपया फर्म की अमानत थी और इसे ग्यारह बजे, टेंडर खुलने के समय हैं पहले ही ठेका देने वाले अधिकारियों के पास पहुंचा देना आवश्यक था।

इसी सुराज के लिये ?

'तस्वीर-महल' के घण्टाचर से साढ़े दस बजे की टकोर गुज गई ती निरंजन ब्याकुल होने समा । तस्थीर महल के घण्डाघर की बड़ी घड़ी, काली रात से अधिक घने काले पेड़ा की चोटियों के के अपर सिर उठाये थी। घड़ी अबेरे में प्रकाश के थाल के समान चमक रही थी। निरंजन की नजर ग्रेजैनी में बार-भार घडी की ओर उठ जाती थी।

लखनऊ के साधियों ने निरंगन को गारवासन दिया था कि कानपुर में मास्ति का काम बढ़ाने के लिये में उसे दी बम देंगे, इसीलिये वह कानपुर से भाया था और लखनऊ में, चीर के पास विक्टोरिया पार्क से बम मिलते की प्रतीक्षा कर रहा था। कोई व्यक्ति ठीक वस वने वम से कर आने बाला था। निरंजन कमी निश्चित स्थान पर बैठ जाता और कभी दहलने लगता। दस क्या, प्यारह भी बज गये। वह निराश होकर अलने को ही या कि पार्क के बीच की सहक पर, ठीक उसके सामने आकर दो मोटर साइकिलें और एक मारी खडी हो गई और उन पर ने विजली की टार्चे निये मशस्त्र सिपाही कद पड़े।

निरंजन के एडी ने चोटी तक विजयी तड़प गई और वह नुरन्त समज गया कि पुलिस उसी की तलाश में बाई होगी। मस्तिष्क में काँच गया, चीते पकड़ा गया होगा और उसी से पूर्तिस को उसके यहाँ प्रतीक्षा करने का पता चना होगा । वह फूर्ती से पार्क की बाद की झाडियों में घुन गया । पार्क और याजार के बीच की सडक फाद कर वह सामने 'बानवाली' गली मे तेज कदमी से बल दिया । उसकी पीठ पर पीछा करने वालो के दौड़ने की आहट मिली । वड सिर पर पाव रख कर भाग निकला। एक गली से दूसरी में होता हआ चौक के बाजार पहुंच गया।

रात के सवा ग्यारह वजे वाजार बन्द हो चुका था। कहीं-कहीं केवल हलवाइयों या पनवाड़ियों की दुकानें खुली थीं। सूने बाजार में दौड़ना उचित न था। यहां दौड़ने से लोगों का घ्यान उस की ओर ही जाता। पुलिस पीछा कर रही थी। उस समय सूने वाजार में दिखाई देने वाले सभी बादिमयों की तहकीकात हो सकती थी। निरंजन अनजाने स्थान में आत्मरक्षा के लिये कातर हो उठा। चीक दरवाजे की ओर मोटर साइकिल की गरज सुनाई दी। वह बांई ओर की गली में घूम गया। गली के शुरू में ही एक दरवाजा खुला देख उस में घुस गया। दरवाजा दुर्माजले पर वने कमरे के जीने का था। जीने से ऊपर बांई ओर के कमरे में खूव उजाला था। निरंजन ने सीचा कि वह पुलिस पैट्रोल के आगे निकल जाने तक वहीं छिप जाये। पराये मकान में घुस कर निरंजन ने पुलिस के ध्यान से बचने के लिये उसका दरवाजा भी उड़का देना चाहा।

दरवाजे को उड़का देने के लिये निरंजन का हाथ उठा ही या कि जपर से प्रकाश पड़ा। उसने घूम कर देखा, जीने के ऊपर लालटेन हाथ में लिए एक स्त्री खड़ी थी और उसे देख रही थी। निरंजन घवराया कि स्त्री अपरिचित के मकान में घुस आने से भयभीत हो चिल्ला न पड़े परन्तु स्त्री की निर्भय आवाज सुनाई दी—"आइये, आदावअर्ज है! जनाव, तशरीफ लाइये!" स्त्री पान भरे मुंह से कहती गई, "आपको अंधेरे में जहमत हुई। अभी-अभी वस दो मिनिट के लिये रोशनी उठा ली थी, तशरीफ लाइये!"

निरंजन ने परिस्थिति भांपी और सांत्वना अनुभव की। मन में उठी ग्लानि को दबा कर समयानुकूल व्यवहार करने के निश्चय से उसने स्त्री के आदावअर्ज का उत्तर लखनवी ढंग से जरा गर्दन झुका कर और हाथ को अदा से उठा कर दिया। उसने जीने के ऊपर खड़ी वेश्या की ओर देखकर अनुमित मांगी—"इजाजत हो तो किवाड़ों में सांकल लगा दूं!"

"हो जायगा, आप क्यों तकलीफ कीजियेगा !" उत्तर मिला, "कल्लन आकर सांकल लगा देंगे। आप तशरीफ ले आइये !"

निरंजन किवाड़ों में सांकल लगा कर जीना चढ़ गया। वाई ओर के कमरे में विजली की रोशनी थी। आराम और सजावट का सामान जुटाने का फूहड़ी और असमर्थ-सा प्रयत्न दिखाई दे रहा था। एक ओर हरे रंग के फूलदार पलंगपोश से ढका पलंग लगा हुआ था और दूसरी ओर एक वहुत पुराने ढंग का सोफा, जिसको महो का रंग चिकनाई और मैल से ढक गया था। फर्श पर परानी, रग उडी हुई दरी विद्धी थी।

-

स्थान की मालिक वेस्या का संकेत पाकर निरान गलावत और गण्यां के प्रति पृथा दथा, वेतनुक्तकी दिगाने के लिये लोफे पर वेड गयां। वेरमा ने इस से तत्का विजती का प्रवा प्रवा दया और बाजार में जुलने वाली लिया पर दर्भी विके वह के लिये लोजे दो। पत्ता के समीप तिपाई पर रता पाताल केतर कह निरंजन को और डांगई। सोफे पर वैड कर उत्तने पान दान अपने और निरान के बीच रहा विचा । पान लगावे हुमें आसीयता से मुलाराकर और एक आस दवा कर पूछा—"कुछ बौक की निरोम ग अवेर ही हो गई है निकिन करनन ले ही बावेंग। मुझा अदे पर एक वपया प्रावसू है तिहान करनन ले ही बावेंग। मुझा अदे पर एक वपया प्रावसू है तिहान करनन ले ही बावेंग। मुझा अदे पर एक वपया प्रावसू है तिहान करनन ले ही बावेंग। मुझा अदे पर एक वपया प्रावसू है तिहान करनन ले ही बावेंग।

निरजन को अपनी ओर अनजान की तरह विस्मय से चुन देखते देश कर केरवा ने पल मर भावा और फिर मुक्तफर योगी—"धाहमजादे, गया नया सोक कर रहे हैं ? अपर आपे भी सहाम रहे थे। ऐसी गया बात है ? सम-कीन रिरोद, यह परिक होगो की अगड़ है !"

"तरी हो" निर्मान ने गर्दन ऊंची कर वाह्य दिलाया, "बाह, ऐसी क्या बात है ?" और फिर अपनी जेब से सिगरेट की डिविया निकास वैदश की ओर का कर बोला, "बीक कीजिये !"

वेश्या ने मुक्कराकर आदावजर्ज किया और सिपरेट लेकर किर आदाव-अर्ज दिया और कर्ती गई—"पीने का बीठ नहीं करते ? अच्छा हो है। अपने तेहन बरवाद होगी है और पैता भी।" पान सपाना छोड़ कर उनने भाविस जसा कर निरंजन के सामने की। निरंजन के सिपरेट मुक्ता मेंने वर उमने अपनी निगरेट भी मुनाना भी। वेश्या पान के बीहों की जोड़ी दोनों हाथों में निरंजन के सामने वेश कर बोनी, "आप सुबिस्ते में तनरीफ रसिये, फलन मानुस होनी होगी, पलग पर सेट आइये न!"

"नहीं में आराम सं""" निरंतन उत्तर दे रहा था कि नीचे बाजार से बहुत में तोहा तमें बूटों के दौड़ने की बाहद सुगाई दी बोर कड़कती हुई ऊची अवाजों में सतकारें—'टहरों ! टहरों ! ' बोर माय ही बच्चूक की गुत्र ।

वेरमा गिइनो को कोर लाकी। वह देसने के निये विक उठा ही रही भी कि निरमन ने उने हाथ से पता कर पीछे सीव निया। वेश्या ने विस्मय से प्रश्न में निरंजन की ओर देखा। निरंजन ने होठों पर मीन के संकेत के लिये उंगली रख दी। औरत विस्मय से निरंजन की ओर देखती रह गई।

"बांघ लो इसे भी !" नीचे से साफ सुनाई दिया और किसी के गिड़-गिड़ाने की आवाज । कुछ प्रश्नोत्तर । साथ ही बहुत जोर से वेश्या का जीना खटकाये जाने की आहट हुई ।

"कल्लन से कहूं खोले !" वेश्या ने घवराहट से कहा।

निरंजन वेश्या के विलकुल समीप हो कातर स्वर में वोला—"पुलिस मुझें पकड़ने आई है। मुझे वचा लीजिये!"

वेश्या की आंखें विस्मय से फैल गई। उसने निरंजन को सिर से पांव तक देखा और अपने आप को वश में कर हाथ का पंजा दिखा धीमें स्वर में उत्तर दिया—"पांच सी लूंगी !"

किवाड़ों पर और जोर की चोट सुनाई दी। निरंजन चुप रह गया। वेश्या ने दरवाजे से जीने में झुक कर पुकारा—"ए कल्लन मियां!" और निरंजन को बांह से पकड़ जीने में ला दीवार के साथ खड़ा कर दिया। आड़ के लिये कमरे के दरवाजे का किवाड़ उस के सामने कर दिया। नीचे जीने के किवाड़ और भी जोर से खटखटा उठे।

"आ रही हूं जनाव, जरा तसकीन कीजिये!" वेश्या ने उत्तर दिया और लालटेन हाथ में ले कर जीना उतर गई। निरंजन दम रोके किवाड़ के पीछे पड़ा रहा। नीचे के किवाड़ खुले। वेश्या की आवाज आई—"आइये!"

"कौन मुनीर?"

"हां हजूर, बांदी है!"

"ऊपर कीन है ?"

y 1.

"कोई नहीं हजूर, तयरीक लाउ्ये !"

"चिक में कीन झांक रहा था ?"

"हजूर की बांदी थी। बड़ा सौफ मालूम हुआ। दरोगा साहब, कोई संगीत बारदात हो गई बबा? तबारोक लाडबे, एक बीड़ा पान हाजिर...!"

"मुनीर, इधर नीचे बाजार ने कोई भाग कर तो नहीं निकला ?"

"अत्या सतामत रसे, होगा कोई मुआ। बांदी क्या कह सकती है ? हुदूर, अप की दुआ ने पिड़की में थोड़े ही बैठती हूं ?" निरंजन को आहट से जान पड़ा कि बात करने वाले सोम जीने के सामने से जा रहे थे : भुनीर की जावाज किर मुनाई दी—"नजरे-दनायत बनाये रिवयेगा रोगा साहब, सुदा हाकिज !"

जीने में साकत समने को बाहुट हुई, मुनोर के उपर बाने की आहट हुई। यह दोनीन मिलिट अपने कमरे में निरुत्तक वैदी रही। कमरे में विज्ञती बुझ गर्द। निरंजन के सामने में क्लिड़ हुटा और फुक्कुगहट मुनाई दी—"आ आपने!"

निर्देशन कमरे में चला गया। बाजार की रोशनी विकों से छन भर कमरे में हल्के प्रकास की घारिया शी आने हुए थी। धुनीर ने निरजन के समीप आ कर पीमे स्वर में प्रश्न किया—"माजरा क्या है साहवजादे?"

निरजन कुछ उत्तर न दे सका। मुनीर ने फिर रहस्य के स्वर में प्रश्न किया—"क्कैती करके भागे हो या करल करके आये हो ?"

"बहिन, मैं न डाफ्टू हु, न कारिल !" बहुत धीरो परन्तु बुट स्वर में निरणन नै उत्तर दिमा, "हम जोग मुल्क और फौन की आजादी के विने, तब गोगों की भाजादी के जिथे, अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ लड़ रहे है दमनिये पुलिस हमें मिरफार करना चाहती है!"

सुनीर कुण रह गई। निरंबन की उसके व्यवहार में निरासा और परेशानी जान पर रही थी। निरंबन ने धीमे स्वर से समझाना चाहा—'बहुन, अप्रेम हमारे मुल्क का, हमारी कीम का सून पी रहे हैं। उनकी मुलामी मे हमारी कीम का मुह काना हो रहा है। हम सोग वचने मुल्क की बाजारी और स्पाहाणी के लिये, अपने मुल्क में अपने सोगों का राज कायम करने के लिये सब रहे हैं।'

"हम नहीं जानते।" बीमे स्वर में मुनीर ने मुंतनाहट प्रकर की, "हमने कह दियां या, हम पांच सो लेंगे, हां! हमने कितना खतरा दोता है! हम फर्ड जाते तो हमारी कितनी बदनाधी होती! तुख अथया नही दोगे तो हम सभी वाजार से विभाग्नी की पुत्रत केंगे। सच कह रही हूं।" मुनीर निरम्त की यमकाकर जनकी बोर मुखी रही।

"तुम पांच ती रचया बाहती हो ?" निरकत ने साहत कर मुनीर से प्रधा, "पांच ती रच्या क्या सारे पुरूक और कीम की आवादी में भी अच्छा है ? मेरे पाल प्रच्या नहीं है। में केवल अपनी जान दे सकता हूं। मेरी जान दें स्तात की आवादी के लिये हैं। अगर पांच थी हो लेगा है तो मुने निरफार करवाकर ले लो लेकिन सारा मुल्क तुम पर थूकेगा, तुम्हें अंग्रेज की कुतिया कहेगा। तुम क्या हिन्दुस्तानी नहीं हो ? हम लोगों को अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। हम लोग आज नहीं तो कल या तो अंग्रेज और उसकी पुलिस की गोली से मारे जायेंगे या पकड़े जाने पर फांसी चढ़ा दिये जायेंगे। हमारी शहा-दत का फायदा मुल्क और कौम को, तुम्हारे जैसे लोगों को होगा। हम लोग मुल्क से गैर कौम की गुलामी हटाकर अपने लोगों का राज कायम करने के लिये लड़ रहे हैं ताकि सब लोगों को ईमान और इज्जत से रोजी कमाने और जिन्दा रहने का मौका हो। तुमने भगतिंसह का नाम सुना होगा! उन्होंने अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ, दिल्ली के लाट की कांसिल में वम चलाया था। उन्हों अंग्रेजों ने फांसी पर चढ़ा दिया तो सारे मुल्क में मातम की हड़ताल हुई थी। हम लोग उन्हों के साथी हैं।"

"वाह!" मुनीर हाथ में आती अच्छी रकम निकल जाने की खिन्नता में पलंग पर पांव लटका कर बैठ गई और मुंह विचकाकर बोली — "काले आदमी से तो अंग्रेज ज्यादा इन्साफ करता है। अंग्रेज का डर न हो तो काले आदमी एक दूसरे को खा जायें!"

निरंजन घीमे स्वर में वात करने के लिये औरत की और वढ़ गया और समझाने लगा—"अंग्रेज की नौकरी और गुलामी में काला आदमी वेइन्साफी और जुल्म इसलिये करता है कि अंग्रेज काले आदमी को जुल्म कराने के लिये ही नौकर रखता है। यह काले आदमी की गरीबी और वेबसी ही है जो उसे अंग्रेज की गुलामी में जुल्म करने के लिये मजबूर करती है। देखो वहिन, बुरा न मानना, तुम मजबूर न होती, तुम्हें दूसरे वाइज्जत तरीके से गुजारे का मौका मिलता तो तुम कभी बाजार में न बैठती। सारे मुल्क और कौम की यही हालत है। लोग गैर कौम की गुलामी में वेईमानी करके, वेइज्जती के टुकड़ों पर गुजारा करने के लिये मजबूर हैं, नहीं तो हमारे मुल्क में किस बात की कमी है! अंग्रेज भर पेट खाने के लिये पाता है इसलिये इन्साफ करने का गरूर भी कर सकता है।"

मुनीर चुपचाप सोचने लगी।

निरंजन फिर वोला—"अंग्रेज में दम ही कितना है! वह हमारे मुल्क पर सी मुल्क के लोगों से अपनी हुकूमत चलवा रहा है। अंग्रेज के मुल्क की आबादी ही कितनी है? वह तो चालवाजी और धूर्तता से हम पर राज कर रहा है। हमारा ही नादान भाई बंग्रेब की तरफ से हम पर बन्द्रक चलाता है। मूल्क में हजार आदमी पीछे एक-एक आदमी भी हम लोगो की तरह हमेली पर सिर सेकर निकल आये दो अंग्रेंग यहा एक दिन नहीं दिक सकता । अब हमारा बक्त आ गया है । सुम्हे मालूम नही, हजारो हिन्दुस्तानी निपाहियो ने बगानत कर दी है और नेता जी ने आजाद हिन्द फीज बना कर आसाम में अप्रेजी पर हमला कर दिया है। देखो, यह कितना वडा जग चल रहा है! अंग्रेज अपने मुल्क पर हिटलर का राज बर्दाहत करने के लिये तैयार नहीं लेकिन हम अपने मुल्क में आजादी मागते हैं तो हमे गद्दार कह कर हम पर गोली चलाता है, हमें फ़ांसी पर लटका देता है। तुम से क्या परदा, तुमने मेरी जात बचाई है, अगर में इस बक्त पकड़ा जाता तो तुम कल भी अखबार मे देखती। अखबारी में रोज ही अग्रेको से हमारी लडाई की बातें छपती हैं लेकिन इस में हमारा अपना क्या फायदा ? हम जमीन-आयदाद और नौकरी नही चाहते है। हम सी चाहते हैं, हमारा मुल्क और कौम बरबादी में बचे।"

"अरे थो क्या, मला सा नाम है साहबजादे ! हा ; तुम काग्रेस बाले हो बया ?" मुनीर ने ठोडी पर उँगली रख कर माथे पर जिल्ला की रेखा जालकर अनुमान प्रकट किया, "कांग्रेस वाले भी तो अग्रेजों के खिलाफ जुलूस निवा-सते है। पुलिस उन्हें भी डण्डे मार कर जैल मे ले जाती है। वे भी ती भागादी चाहते हैं। वे भी तो कहते हैं, अग्रेंग को हटा कर आम जनता का

राज कायम करेंगे। नहीं क्या ?"

"ठीक तो है, तुम तो ममझती हो ।" निरजन ने सान्त्वना से कहा, "काग्रेम बाते बेचारे मुंह से स्वराज की बात करते हैं और अंग्रेज उन्हें अपनी मौकर पुलिस से पिटवा कर केलों में बन्द कर देता है। तुम तो जानती हो, काग्रेम बाने कोई बोरी डकेंदी मार-पीट नहीं करते । अपने मूल्क मे अपना राज भागते हैं। हम काग्रेस वाली से बढ़ कर हैं। अंग्रेव हमारे गुल्क के निहत्ये लोगों की जायज माग पर गोली चलाते हैं तो हम अंग्रेज की गोली का जवाब बम से देते हैं, समझी • • ! " निरंत्रन कोश्चिस कर रहा था कि राजनैतिक बातों से अनुशान नेहमा को देश की स्वतुत्रता के लिये कान्ति की बात समना कर उसकी सहानुभूति पा ले।

"हां साहयजादे !" एक गहरी सांस लेकर मुनीर ने पृथा, "व्यास लगी होगी ! बख पानी-बानी नहीं पियोंने ?"

निरंजन ने एक गिलास पानी मांगा । मुनीर ने कमरे के कोने से सुराही और शीशे का गिलास उठाकर निरंजन को पानी पिलाया ।

मुनीर सोफा पर वैठ पान लगाने लगी और जम्हाई दवा कर बोली—"इस वक्त घर से निकलोगे तो राह में जरूर पकड़ लिये जाओगे। तुम पलंग पर सो जाओ। हम सोफा पर लेट रहेंगी या यहीं फर्श पर कुछ विछा लेंगी।" उसने पान का बीड़ा निरंजन की ओर बढ़ा दिया।

निरंजन मुनीर की उदारता से कुछ झेंप गया—"नहीं, आप अपने प्लंग पर लेटिये, मुझे नींद नहीं मालूम हो रही है। मैं सोफा पर बैठा रहूंगा।" उसने कहा।

"यह कैसे हो सकता है साहवजादे, तुम तो ताजीम के काविल मेहमान हो !" मुनीर ने गम्भीरता से उत्तर दिया और पलंग के सिरहाने की आलमारी खोल कर एक हल्की सी दरी और तिकया निकाल लिया। निरंजन के विरोध करते रहने पर भी मुनीर दरी को फर्श पर विद्या कर लेट गई।

निरंजन पलंगपोश हटाये विना ही पलंग पर लेट गया। नींद का कोसों पता न था। वह सोच रहा था, सुबह दिन निकले इस मकान से निकलेगा तो देखने वाले क्या कहेंगे? मन को सान्त्वना दी—लोग देखेंगे भी तो जान पह-चान के थोड़े ही होंगे? दूसरा ख्याल आया, इस पलंग पर जाने कितने और कैसे-कैसे लोग लेटे होंगे? घृणा मालूम हुई परन्तु अब घृणा मुनीर के प्रति नहीं, उसके दुर्भाग्य के प्रति थी। उसने करवट ले ली।

''साहबजादे, नींद नहीं आ रही ?'' अलसाई हुई आवाज में मुनीर ने पूछा। ''अभी तो नहीं, कहिये ?''

"अंग्रेज की हुकूमत नहीं रहेगी तो क्या सब खुशहाल हो जायंगे, बेवस को गुजर-वसर के लिये इज्जत की रोजी का मौका हो जायगा ?" उसने पूछी और स्वयं ही निराशा प्रकट की, "यह कैसे हो सकता है ? गरीब तो हमेशा गरीब, खस्ता हाल ही रहेगा। जो बेबस है, वह क्या कर सकता है ?"

निरंजन करवट से मुनीर की ओर झुक कर घीमे स्वर में समझाने लगा— "स्वराज से हमारा मतलब ही यह है कि पूरी रियाया, मर्द और औरत सभी को वाइज्जत तरीके से मेहनत करके रोजी कमाने का मौका हो ! अंग्रेज ऐसा मौका नहीं देता क्योंकि उसकी हुकूमत ही गरीव की लूट पर कायम है। अमीरों को उसने अपने साथ मिला लिया है। रियाया भूख से मजबूर न ही तो मेर कीम के हाब अपनी आजादी और ईमान बयो वेचे? अब भुत्क में गरीब को दवाने का बरीका चालू है तो उसमें मर्दे औरत सब पिसते हैं।" निरंजन मुनीर को स्वतंत्रता का महत्त समझाता रहा। मुनीर कुछ देर हुकारा मरती रही। फिर नीद सालुच होने पर बोली, "अब बो बाजो साहबजादे, अल्लाह सतामत रहे।" उसने करवट से सी।

सुयह य्यारह-बारह बने वाजार भर गया तभी मुनीर ने निरंजन को अपने भर से जाने की सलाह दी और कलेवा किये विना न जाने दिया !

× × ×

१९४८ के सालियी दिन थे। निरलन के मुनीर ने यहां शरण थाने की घटना की छ, बरल बीत चुके थे। मुनीर के यहां पुनिस के हाथ से यक कर भी सालिर निरंतन निरलतर हो सवा था। धन १९४० में कारेसी राज का स्थान हुना तो सभी राजनेतिक बन्धियों के साथ निरलन भी जेल से छूट स्थान हुना तो सभी राजनेतिक बन्धियों के साथ निरलन भी जेल से छूट गया परन्तु कारेसी राज्य में निरंतन और उसके विने सीगों के स्वयन कूरे नहीं हुने । वे होग नचे छातन में फिर से संगठित होगर व्यवस्था के विद्व सार्थ- विनेत कर सोगों में मार करने सभी । कोई मी सरकार ज्याने मिल करते सभी । कोई मी सरकार ज्याने मिल करते सभी । कोई मी सरकार ज्याने मिल करते सभी । विरालन जैसे सोगों को फिर सोजनीत कर तेने के प्रयों को में हुं इस सकती। निरंतन वेदेन सरकार के हुन से सोगों की पहलते सभी ।

निरंजन के इस के लोगों ने अपना आल्दोलन जनता में फैलाने के लिये फलनऊ में एक सम्मेलन करने की तीवारी की बी। सरकार ने उस पर कोई रोक-बान न कागई। सम्मेलन के अवसर पर सब बागो लोगों के लिलाफ सामृद्धिक रूप से निरफ्तारी के बार्टट जारी कर दिये बये। शुलिस ने उनके टेट्टों के स्थानों पर एक साथ छाये मारकर सभी लोगों को एक ही हत्ने में कोट नेता चाहा।

संबंधरहा निरंतन हम छापे से निरस्तार हो जाने से बच गया। जिस फेम पुलिस ने उपके देरे पर छापा मारा, बढ़ कहीं बाहर मणा हुसा सा। वेषु पुलिस ने स्पेने का समाचार जिस गया और वह हरे परत सीटा परणु पुलिस से बचे रहना सहस्त न था। उसकी जानी-महानानी सभी जपों पर निरंशन ने एक विवास पानी मांगा । मुनीर ने कमरे के कोने से मुस्ही और सीने का विवास उठाकर निरंशन की पानी विचासा ।

मुनीर सोफा पर पैठ पान समाने नभी और जम्हाई दवा कर बोली—"झ यक्त घर में निकलोंगे तो राह में जमार प्याह तिये जाओंगे। तुम पर्या पर सो जाओ। हम सोफा पर तिट रहेंगी या यही फर्ज पर कुछ बिछा तेंगी।" उसने पान का बीटा निरंज्य की और बटा दिया।

निरंजन मुनीर की उदारता में कुछ होंगं गया—"नहीं, आप अपने पतंग पर लेटिये, मुद्दों नीद नहीं मालूग हो। रहीं है। में मोफा पर बैठा रहूंगा।" उसने कहा।

"यह कैसे हो सकता है साहवजादे, नुम तो ताजीम के काविल मेहमात हो !" मुनीर ने गम्भीरता ने उत्तर दिया और पत्नंग के सिरहाने की आत-मारी खोल कर एक हल्की सी दरी और तकिया निकाल लिया। निरंजन के विरोध करते रहने पर भी मुनीर दरी को फर्क पर विद्या कर लेट गई।

निरंजन पलंगपोश हटाये बिना ही पलंग पर लेट गया। नींद का कोसीं पता न था। वह सोच रहा था, सुबह दिन निकले इस मकान से निकलेगा तो देखने वाले क्या कहेंगे ? मन को सान्त्वना दी—लोग देखोंगे भी तो जान पह चान के थोड़े ही होंगे ? दूसरा ख्याल आया, इस पलंग पर जाने कितने और कैसे-कैसे लोग लेटे होंगे ? घृणा मालूम हुई परन्तु अब घृणा मुनीर के प्रति नहीं, उसके दुर्भाग्य के प्रति थी। उसने करवट ले ली।

"साहवजादे, नींद नहीं आ रही ?" अलसाई हुई आवाज में मुनीर ने पूछा। "अभी तो नहीं. किंद्रये ?"

"अंग्रेज की हुकूमत नहीं रहेगी तो क्या सब खुशहाल हो जायंगे, वेवसे को गुजर-वसर के लिये इज्जत की रोजी का मौका हो जायगा ?" उसने पूछा और स्वयं ही निराशा प्रकट की, "यह कैसे हो सकता है ? गरीव तो हमेशा गरीब, खस्ता हाल ही रहेगा। जो वेबस है, वह क्या कर सकता है ?"

निरंजन करवट से मुनीर की ओर झुक कर घीमे स्वर में समझाने लगा— से हमारा मतलब ही यह है कि पूरी रियाया, मर्द और औरत सभी त तरीके से मेहनत करके रोजी कमाने का मौका हो! अंग्रेज नहीं देता क्योंकि उसकी हुकूमत ही गरीब की लूट पर कायम है। को उसने अपने साथ मिला लिया है। रियाया भूख से मजबूर नहीं तो गेर बीम के हाथ अपनी माजारी और रैमान क्यों बेचे ? जब मुख्य में गरीब को दबाने का सरीका चालू है तो उसमें मदें मीरत यब रिमाने हैं।" निरम्भ मुनीर को स्वतंत्रता का महत्त्व सम्माता रहा मुनीर कुछ देर हुकारा मरतो रही। किर नींद मामूच होने पर बोनी, 'श्रम को नाजी साहबनादै, सहनाह सन्तरत रहे।" उसने करबट से सी।

मुबह ध्यारह-बारह बजे बाजार भर गया तभी मुनीर ने निरंजन को अपने घर से जाने की शनाह दी बौर कलेवा किये बिना न जाने दिया ।

× × ×

निरंजन के इस के लोगों ने अपना आन्दोतन जनता में फैताने के लिये समाज में एक सम्मेलन करने की तीवारी की थी। सरकार ने उस पर कोई रोक-साथ म समाई। सम्मेलन के अवसर पर गय बाबी लोगों के लिलाफ एम्हिक इप से निरस्तारी के बार्रट जारी कर दिये गये। पुलिस ने उनके इस्ते के स्थानों पर एक साथ छोपे आरकर सभी लोगों को एन ही हस्ते में समेट रोना पाछ।

जनतरवा निरंजन इस छापे में निरफ्तार हो जाने से यन गया। जिस सम्प पुलिस ने उसके हैंदे पर छापा भारत, नह महीं सहंद गया हुआ पा। ठते पुलिस के छापे का समाचार जिल गया और वह देरे पर न तौटा परन्तु पुलिस से बसे रहुजा सहल न था। उसकी जानी-महस्त्रानी सभी जाहीं वर उसकी सोज हो रही थी। निरंजन घनी भीड़ में और रात पड़े अंघेरी गिलयों में घूमता रहा। रात बढ़ने के साथ भीड़ छंटने लगी। अंघेरी गिलयों में घूमते रहना भी सन्देहजनक था। निरंजन को याद आई लखनऊ में छः वर्ष पहले की आशंकापूर्ण रात और मुनीर के यहां आश्रय पाने की बात। फिर वैसी ही लाचारी थी।

निरंजन चौक के बाजार में पहुंचा। गली पहचानी और जीना पहचाना। साढ़े दस का समय होगा। जीने के किवाड़ खुले थे। रोशनी के लिये ऊपर लालटेन जल रही थी। पिछले छः वर्ष में अनुभव के साथ निरंजन का साहस भी वढ़ चुका था फिर भी कुछ झिझक हुई पर वह जीना चढ़ गया। मुनीर सोफा के समीप वैठी सोफा पर पानदान रखे पान लगा रही थी। आहट पा कर उसने घूम कर देखा और अभ्यस्त मुस्कराहट से अभ्यागत का स्वागत किया—"आदावअर्ज करती हूं, तशरीफ लाइये!" और निरंजन को सोफा पर वैठने का संकेत किया।

निरंजन ने आदावअर्ज से उत्तर दिया और सोफा पर बैठ कर पूछा—"आ^{पने} पहचाना ?"

"तशरीफ रिखये जनाव !" मुनीर ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "आप जैसे करमफरमा को बांदी नहीं पहचानेगी ? वल्लाह, क्या फरमाते हैं आप !"

निरंजन मुनीर की ओर देखता रहा। सोफा और मुनीर के चेहरे पर भी छः वर्ष का काफी प्रभाव दिखाई दे रहा था—"नहीं, अभी आपने पहचाना नहीं। "कोशिश कीजिये!" निरंजन ने फिर आग्रह किया।

गाल में दबे पान की पीक निगल कर मुनीर ने घ्यान से आगन्तुक की देखा और मस्तिष्क पर जोर दिया। उसके होंठ खुले रह गये—"ओह! अव पहचाना। वाकई साहबजादे, मुद्दतों में दिखाई दिये। जमाना बदल गया। अब तो आप लोगों का राज है। आप लोगों की सरकार है। हम गरीव-गुरवा तो जैसे तब थे, वैसे अब। जंग की तंगी के जमाने में भी रुपये का चार सेर आटा खाते रहे। अब सवा दो सेर का खाते हैं। अल्लाह सलामत रखे, कनीज को याद तो किया! कैसे आये?"

"वैसे ही, जैसे तब आया था !" निरंजन ने स्वर धीमा कर उत्तर दिया। "यानि" ठोड़ी पर उँगली रख कर मुनीर ने पूछा, "क्या कह रहे हो ?" तब तो पुलिस से भाग कर आये थे !" "बाज भी बैसे ही बाया हूं।"

"अल्लाह की रहमत, क्या कह रहे हो ? अग्रेज तो गये। अब तो अपने काले आदिमियों का राज है। तुम और क्या चाहते हो ?" मुनीर विस्मित थी।

"काले आदिमियों का राज क्या है, काले दिलों का राज है बहित । अप्रेज तो चले गये पर हुआ कुछ भी नहीं। स्वराज होता तो तुम यहां इसी तरह बैठी होती ?" निरंजन ने पुछा।

"तो अब तुम और बया चाहते हो ?"

"हम पाहते हैं सब लोगों के लिये बाइज्जत रोजी कमाने के लिये बरावर मौका । सब सीम मेहनत करने का मौका पायें और अपनी इज्जत की कमाई सायें । येट भरने के लिये किमी को अपना ईमान और जिस्स येचना न परें । महत्तत करने वालों का पंचायती राज हो।" निरंजन ने आग्रह के स्वर में मान की ।

"हाय तो दनमें बुरा क्या है ?" मुनीर ने विस्मय प्रकट किया, "अब तो अपने सोगो की सरकार है। ऐसा तो होना ही चाहिये। ऐसी बातो से सरकार को क्या एतराज ? यह सरकार तो उन नासपीट कम्युनिस्टी को जेन में बानती है जो पुर रेमें गिरा कर सोगो की जान सेते हैं और कहते हैं, सब को सूट सो !"

"नही नहीं" सिर हिना कर निरंजन ने विरोध किया, "कम्युनिस्ट ऐसा - नहीं कहते ! वे तो वहीं कहते हैं जो मैं कह रहा हूं ! तभी काग्रेमी पुलिस मुझे विरक्तार करना चाहती है।"

"हाम बल्ला सब ?" मुनीर हैरान बी, "साहबजादे, गुम तो इसी मुराज के लिये जान दे रहे दे!"





सशस्त्र काति के प्रयत्नों की कथा

सिंहावलोकन

जान हथेली पर लिये ब्रिटिश साम्राज्य-शाही से लड़ने वाली का जीवन कितना रोमाचकारी रहा होगा, अपने आदशों के लिये उन लोगो ने क्या-क्या सहन किया, वह सब कहानी रोचक उपन्यास से भी अधिक रोमाचक है। इन सस्मरणों में पजाब कैसरी लाला लाजपतराय की हत्या का बदला लेने, देहली असेम्बली वम-काण्ड, वायसराय की ट्रेन को बम से उड़ाने, राजनैतिक बन्दियों को छड़ाने के लिये जेल पर आक्रमण की तैयारी, कांतिकारियो और पुलिस मे आमने-सामने लड़ाई की घटनाओं का ब्योरेवार वर्णन यशपात ने तीन भागों में किया है। पत्र-पत्रिकाओं ने इस पूस्तक की जितनी प्रशंसा की है, उस की संक्षिप्त चर्चा के लिये भी यहा स्थान नहीं।